
FLYWINGS
प्रतिहारी
कालचक्र का खेल
अभिनव जैन
प्राचीन काल की असुर संहारक जाति की रहस्यभरी अद्भुत कथा

लेखक परिचय

अभिनव जैन एक युवा लेखक हैं। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से एम.कॉम., बी.एड. कर चुके अभिनव वर्तमान में उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

शब्दों की शक्ति से परिचित अभिनव इन्हें किसी जादू से कम नहीं मानते। इन्हें किताबें पढ़ने, संगीत सुनने, गाने और पेंटिंग करने का शौक है। किताबों में रुचि ने ही इन्हें एक लेखक बनने के लिये प्रोत्साहित किया।

इनका मानना है कि हमें अपने अंदर छिपी हुई प्रतिभाओं को आज़माना चाहिए और उन्हें बाहर निकालकर दुनिया के सामने लाना चाहिए वरना दुनिया कुछ अच्छी चीजों से वंचित रह जायेगी।

प्रतिहारी
कालचक्र का खेल

अभिनव जैन

FLYWINGS

WingsHouse

की प्रस्तुति

मेरे ‘सपनों’ के लिए, जो मुझे सोने नहीं देते...

‘भाई’ के लिए, जिसने लिखने के लिए प्रेरित किया....

माता -पिता के लिए...

कहानी से पहले...

जीवन एक यात्रा है और इस यात्रा में कई पड़ाव आते हैं। हम आगे बढ़ते हैं, नयी ऊंचाइयां छूते हैं, नयी उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। कभी -कभार कुछ खोते भी हैं, हारते हैं और निराश भी होते हैं। ये पड़ाव ही जीवन में हमारी दिशा निर्धारित करते हैं और या जानने में हमारी सहायता करते हैं कि आखिर हम क्या हैं और हमारी सबसे बड़ी शक्ति क्या है?

वह शक्ति हमारे जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित करती है। मेरे जीवन का भी एक लक्ष्य है। कुछ ऐसा करना जिससे लोग मुझे याद रखें। मुझे इसका सबसे अच्छा तरीका किताबों में दिखायी देता है, जहाँ कोई चाहे आपको याद रखे या न रखे, लेकिन एक अच्छी किताब पढ़ने के बाद जब आप उसे बंद करते हैं तो एक बार फिर से उस किताब का नाम और उसके लेखक का नाम गौर से पढ़ते हैं और उसकी मन ही मन तारीफ भी करते हैं।

लेखन एक व्यापक क्षेत्र है। हर कोई किसी न किसी विषय पर किताब लिखता है और उसकी लेखन शैली उसकी पहचान बनती है। मैंने कहीं पढ़ा था कि हम सभी के पास एक कहानी होती है लेकिन जो जानता है कि उसे कैसे ख़त्म करना है, वही एक लेखक होता है।

मेरे पास भी एक कहानी थी। पाँच छः साल पहले जब में एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता था। मैंने एक रात एक बड़ा- सा सपना देखा। सुबह मैंने उसे एक छोटी- सी कहानी के रुप में लिखना शुरु किया, पर वो कहानी पूरी नहीं हो पायी। मुझे उस दिन नहीं पता था कि एक दिन ये छोटी-सी कहानी एक बड़ी किताब के रुप में आने वाली है। वह अधूरी कहानी इतने सालों तक अधूरी ही रही। एक दिन मुझे अपनी किताबों के बीच में वो पन्ने मिले, जिसमें मैंने वो कहानी अधूरी छोड़ दी थी। मैंने उसे पूरा करने का निश्चय किया। जैसे- जैसे कहानी आगे बढ़ी, उसमें नये-नये आयाम जुड़ते चले गये और एक साल के अथक प्रयास के बाद आज ये एक रोमांचक उपन्यास के रुप में आपके हाथों में है।

ये कहानी शुरु होती है, तीन दोस्तों से। बचपन के साथी। साथ पढ़े, साथ खेले। हर पल, हर मुसीबत में साथ। इन छुट्टियों में प्लान बनाया राजस्थान घूमने का। प्लान बना

और निकल भी पड़े अपने सफ़र पर, लेकिन उनमें से एक दोस्त की जिंदगी इस यात्रा ने पूरी तरह से बदल कर रख दी।

कहते हैं, इंसान के सपने उसके आने वाले भविष्य की झलक होते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि सपने इंसान की उन इच्छाओं को दिखाते हैं जो वो पूरा नहीं कर पाता। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग मानते हैं कि सपने इंसान को वही दिखाते हैं, जिनके बारे में वो ज्यादा सोचते हैं। पर असल में सपने हैं क्या? क्या ये सच में भविष्य दिखाते हैं या सिर्फ मन में चल रही उथल- पुथल के परिणामस्वरूप हमें दिखाई देते हैं। ये एक रहस्य है। एक ऐसा रहस्य जिसे इंसान कभी नहीं समझ पाता।

रहस्य। एक ऐसी यात्रा जो किसी व्यक्ति के जीवन में नए उतार- चढ़ाव लाती है, तो किसी की जिंदगी बदल कर रख देती है। ऐसी ही एक यात्रा ने इन दोस्तों की जिंदगी को एक नये आयाम में ला खड़ा किया था और उनमें से एक की जिंदगी बदल कर रख दी...



एक छोटी-सी भूल

“तुम फिर शुरू हो गये?” अभिजीत ने गुस्से में कहा और शैलेन्द्र के हाथ में जोर से हाथ मारा और उसका सारा तम्बाकू नीचे गिरा दिया, जो वो खाने के लिये निकाल रहा था।

“अरे यार! तुम अपनी किताब पढ़ो।” शैलेन्द्र ने कहा।

“छोड़ो यार उसको, वो नहीं सुधरेगा।” राकेश ने कहा।

“तुम उसकी तरफदारी मत करो। अगर मुझे गुस्सा आ गया, तो तुम दोनों मुसीबत में आ जाओगे।” अभिजीत ने कहा और फिर अपनी किताब पढ़ने लगा।

अभिजीत, राकेश और शैलेन्द्र बचपन के दोस्त थे। ग्रेजुएशन की पढ़ाई ख़त्म होने के बाद राजस्थान घूमने के लिये निकले थे। अभिजीत एक पढ़ाकू नौजवान था, जिसे किताबों से बेहद लगाव था। घूमने और किले देखने का बेहद शौक़ीन। शैलेन्द्र को तम्बाकू खाने की लत थी, जिससे अभिजीत बहुत चिढ़ता था और उसे हमेशा टोकता रहता था। और कहता था कि उसका अपने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है। राकेश जो उन दोनों के बीच की कड़ी था, हमेशा उन्हें लड़ने से रोकता रहता था। राकेश एक सुलझा हुआ इंसान था और एक बड़ा बिज़नस मैन बनना चाहता था। ऐसे थे, तीनों दोस्त। हर पल, हर चीज में साथ।

“तुम ये सब खाना छोड़ क्यों नहीं देते?” अभिजीत ने फिर से किताब से सिर निकाल कर कहा। “मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, अगर अगली बार तुमने इसे हाथ लगाया तो थप्पड़ तुम्हारे मुँह पे पड़ेगा।”

“ठीक है।” शैलेन्द्र ने मुँह बनाते हुये कहा। “मैं याद रखूँगा कि कम से कम तुम्हारे सामने न खाऊँ।” और तम्बाकू का पैकेट अपनी जेब में रखकर उठकर चला गया।

“इसका मतलब तुम कभी नहीं सुधरोगे।” अभिजीत ने हारकर कहा।

थोड़ी देर बाद शैलेन्द्र चुपचाप अपनी सीट पर आकर बैठ गया। जाहिर था कि

तम्बाकू उसके मुँह में है। अभिजीत ने किताब हटाकर उसकी तरफ अजीब तरीके से घूरा।

"अब तुम दोनों बस भी करोगे। देखो, हमारा स्टेशन आ गया।" राकेश ने खिड़की से बाहर झाँकते हुये कहा।

तीनों स्टेशन पर उतरे। स्टेशन पर काफी रेल-पेल थी। उन्होंने अपने- अपने बैग संभाले और एक जगह रख कर, आगे की योजना बनाने लगे।

"तुम दोनों यहीं रुको, मैं अगली ट्रेन का पता करके आता हूँ।" कहकर अभिजीत चला गया।

"तुम्हें जब पता है की उसे पसंद नहीं है तो उसके सामने खाते ही क्यों हो?" राकेश ने कहा।

"छोड़ो न यार।" शैलेन्द्र ने कहा।

"अभि सच ही कहता है, तुम नहीं सुधरोगे।" राकेश ने झल्लाकर कहा।

शाम का धुंधलका घिर चुका था। उनकी अगली ट्रेन रात को 10 बजे थी। वो लोग स्टेशन से बाहर कुछ खाने की तलाश में निकले। एक अच्छा -सा रेस्टॉरेंट देख कर, वो लोग वहां गये और आर्डर दे कर बैठ गये।

"अब सुनो हमे कहाँ- कहाँ घूमने जाना है..." अभिजीत ने कहना शुरू किया तभी राकेश उसे टोकते हुये बोला,"भाई बुरा मत मानना, एक बात बोलूँ।" अभिजीत ने उसे घूरकर देखा।

"भाई पिछली बार की तरह मत घुमाना। बस वही जगह घुमाना जो जगह बताई हैं।" राकेश ने पिछली बार की यात्रा को याद करते हुये कहा, जब वो एक बार बाइक से घूमते हुये किसी किले को देखने जा रहे थे। तब अभिजीत ने किसी गांव में एक छोटी पहाड़ी पर एक मंदिर को देखकर अपनी बाइक वहां घुमा दी थी। और दोनों को मंदिर देखने के लिये उस पहाड़ी पर चढ़वा दिया था।

"हाँ भाई टाँगो पर रहम करना इस बार।" शैलेन्द्र ने हाथ जोड़ते हुये कहा।

"तुम तो बोलो ही मत, समझे। हर बार तुम्हारी वजह से ही ठीक से न कुछ देख पाते हैं न घूम पाते हैं।" अभिजीत ने शैलेन्द्र को उँगली दिखाते हुये कहा।

"हाँ और तुम तो बिल्कुल हर किले में एक-एक चीज का कोना -कोना ऐसे देखते हो जैसे वो पिछले जन्म में तुमनें ही बनाया हो और इस जन्म में देखने आये हो कि कहाँ

क्या बचा है? और किसी रिश्तेदार का भूत तुम्हारा वहां इंतज़ार कर रहा हो?" शैलेन्द्र ने उसे चिढ़ाकर कहा। अभिजीत ने मुँह बनाकर उसे देखा और फिर राकेश की तरफ मुड़कर कहा,"ठीक है हम वहीँ चलेंगे, जहाँ हमने सोचा है। कोई नया सरप्राइज नहीं, 'ओके'। अब देखो पहले हम जयपुर चल रहे हैं, हवा महल, जंतर मंतर, आमेर का किला और उसी के पास नाहरगढ़ का किला घूमना है...."

"नाहरगढ़ का किला तो भूतिया महलों की लिस्ट में शामिल है।" शैलेन्द्र ने घबराते हुये कहा।

"हाँ, तो। अभी हम पहुंचे भी नहीं और तुम्हारे बहाने शुरू हो गये।" अभिजीत ने झल्लाकर कहा। "ठीक है तुम मत जाना बाहर पहरेदारों की तरह खड़े होकर तम्बाकू घिसना। अब खुश।"

"हाँ भैया, ठीक है चलूँगा। गुस्सा मत हो।" और हंसने लगा।

"पता नही मैं इन दोनों को लेकर आता ही क्यों हूँ?" अभिजीत ने मन में बड़बड़ाकर कहा। फिर बोला,"हाँ और इसके बाद हम जोधपुर जायेंगे, 'ओके'।"

"हाँ ठीक है।" दोनों ने एक साथ कहा और सब खाना खाने लगे। खाना खाने के बाद चाय की चुस्कियों के साथ पुराने किस्से दोहराये गये।

तब तक ट्रेन का टाइम हो चुका था। चूँकि ट्रेन वहीं से शुरू होती थी, तो लेट होने का सवाल नहीं था। तीनों अपने डिब्बे में जाकर अपनी सीटों पर आकर सो गये।

अगला उन्होंनें पूरा दिन जयपुर घूमा और आदतन अभिजीत के घूमने से दोनों परेशान रहे। शैलेन्द्र ने नाहरगढ़ किले में जाने से मना कर दिया। और वही बाहर खड़ा होकर तम्बाकू खाता रहा जैसा कि अभिजीत ने कहा था।

उसके अगले दिन उनकी ट्रेन सुबह-सुबह थी, लेकिन उन्हें देर हो गयी और वो दौड़ते-भागते हांफ़ते हुए रेलवे स्टेशन में घुसे। ट्रेन छूट चुकी थी। सबने मिल्खा अंदाज में दौड़कर ट्रेन पकड़ी और अपनी सीटों पर जाकर बैठ गये।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि जल्दी करो। लेकिन नहीं, एक तो भाईसाब को उठना देर से था और नहाने में भी इतना टाइम जो लगाना था।" अभिजीत ने शैलेन्द्र को डाँटते हुये कहा।

"हाँ हाँ ,और कल दिनभर जो तुमने इतनी परेड करवाई उसका कुछ नही। आराम से

सोने तो देते।” शैलेन्द्र ने हांफते हुये कहा।

“हाँ हाँ क्यों नहीं? पर फिर राजा बाबू को तम्बाकू भी तो खाना था।”

“लेकिन ट्रेन तो नहीं छूटी न?”

“अरे अब बस भी करो तुम दोनों।” राकेश ने दोनों को चुप कराते हुये कहा। दोनों चुप हो गये। बाकि पूरा दिन उन्होंने ट्रेन में ही काटा और थकान मिटाने के लिये दोपहर में ट्रेन में अपनी-अपनी सीट पर ही सो गये और अभिजीत ऊपर की सीट पर जाकर सो गया।

गहरा संकट

“ये सब क्या है?”

“ये मैं कहाँ आ गया हूँ?”

अभिजीत ने चारों तरफ देखकर कहा। उसने खुद को एक जंगल में पाया। चांदनी रात थी। दूर- दूर तक सन्नाटा पसरा था। कहीं से कोई आवाज़ नहीं।

“राकेश और शैलेन्द्र कहाँ है?”

“राकेश।” उसने चिल्लाकर आवाज़ दी और आगे बढ़ा। थोड़ी दूर चलने के बाद वो एक खुली जगह में पहुँचा। उसने देखा उससे थोड़ी दूर पेड़ के पास एक लड़की घूम रही है। लड़की के बाल खुले हुये थे। उसने एक सफ़ेद गाउन पहना हुआ था। तभी लड़की ने अभिजीत की तरफ देखा और अभिजीत दंग रह गया। वो लड़की बिलकुल सफ़ेद चमक रही थी और उसकी आँखों से नीली चमक फूट रही थी। इतनी दूर से अभिजीत उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पा रहा था।

अचानक उसने देखा कि एक काला बवंडर उसकी तरफ तेजी से बढ़ता हुआ चला आ रहा था। अभिजीत जोर से चिल्लाया,”अपने पीछे देखो। हटो वहां से जल्दी।” और तेजी से आगे बढ़ा और एकाएक वहीं ठिठक कर रुक गया। उसने देखा, वो लड़की उसे रुकने का इशारा कर रही है।

बवंडर उस लड़की के पास आया और उसे अपने आगोश में ले लिया। थोड़ी देर उसके चारों ओर घूमने के बाद बवंडर दूसरी ओर निकल गया और गायब हो गया। फिर लड़की उसकी ओर बढ़ी।उसकी आँखे सामान्य हो गयी थी। अभिजीत ने देखा कि वो एक 23-24 साल की एक सामान्य सी लड़की थी। उसका चेहरा नुकीला और छोटी पतली नाक थी, जिसके नीचे दायीं ओर एक काला तिल था। उसके होंठ हल्के गुलाबी और मध्यम आकार के थे। पर उसे जिस बात ने आकर्षित किया, वो उसकी बड़ी सी बहुत हल्के कत्थई रंग की आँखे थी। वो अभिजीत के पास आई और बोली,”वो बवंडर अब मेरा कुछ नही बिगाड़ सकता था।”

“पर क्यों? और आप हैं कौन? और यहाँ कर क्या रही हैं?” अभिजीत लगातार सवाल

पे सवाल पूछता चला गया।

लड़की ने अपने होंठो पे उँगली रखकर चुप रहने का इशारा किया और कहा,” मेरे पीछे आओ। तुम्हें अपने सारे सवालों के जवाब मिलेंगे।”

अभिजीत ने जाने क्या सोचा और फिर उसके पीछे चलना शुरु कर दिया। लड़की जंगल के बीचों-बीच ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलती हुई एक महल के पास पहुंची। अभिजीत बड़े ध्यान से महल को देखने लगा। महल बहुत ही पुराना और जर्जर हालत में था। पर देखने से लगता था, जैसे किसी ज़माने में बहुत ही आलीशान और शानोशौकत से भरा रहा होगा। महल ज्यादा बड़ा नहीं था। बाहर से देखने पर दो मंजिला दिखाई दे रहा था, जिसमें एक विशाल मुख्य द्वार था। जिसके दोनों ओर दो द्वारपालों की मूर्तियाँ दीवार पर बनी हुई थी। सामने के बाकी हिस्से में दूसरी मंजिल पर लोहे की छड़ों वाली लकड़ी की पांच खिड़कियाँ दिखाई दे रही थी। उन सभी खिड़कियों के छज्जे गुम्बदाकार थे, जिसमें मध्य खिड़की का गुम्बद बड़ा था। उस पर एक तिकोना झंडा लहरा रहा था, जिस पर एक वृत्ताकार कँटीला चक्र बना हुआ था।

अभिजीत का ध्यान उस लड़की की आवाज से टूटा, जो उसे अंदर आने का इशारा कर रही थी। अभिजीत आगे बढ़ा, उसने देखा कि लड़की महल के मुख्य द्वार में बने एक छोटे से द्वार को खोलकर अंदर चली गयी है। अभिजीत एक पल के लिये हिचका और फिर दरवाजे के अंदर चला गया। अंदर कदम रखते ही उसने खुद को एक अन्धेरी जगह पर पाया। वह बाहर जाने के लिये पीछे मुड़ा, पर वहां से दरवाज़ा गायब था। वो मुड़ा और चिल्लाकर पूछा,

“कोई है?”

पर कोई जवाब नहीं आया। उसने आगे जाने का निश्चय किया और धीरे से कदम आगे बढ़ाया और सीधा एक अँधेरी खाई में जा गिरा।

एक जाती हुई ट्रेन के हॉर्न के साथ एक झटके से अभिजीत की नींद खुल गयी। वो पसीने से तर था।

“बड़ा अजीब सपना था। लेकिन इसका मतलब क्या है?” उसने सोचा, क्योंकि उसे ऐसे अजीबो-गरीब सपने आते रहते थे। पर इस बार उसे बहुत दिनों बाद ऐसा कोई सपना आया था। उसने आसपास देखा शैलेन्द्र और राकेश गहरी नींद में सो रहे थे।

“ये दोनों आलसी अभी भी सो रहे हैं। और ये कमबख्त अलार्म क्यों नहीं बजा?” उसने खीजकर अपना मोबाइल उठा कर देखा, जिसमें उसने 3 घंटे का अलार्म लगाया था।

“ये तो स्विच ऑफ है। और ये ट्रेन को क्या हुआ? ये भी रुकी हुई है।” उसने नीचे झाँककर देखते हुये कहा।

वो नीचे उतरा। पूरी ट्रेन खाली थी। उसने जल्दी दोनों को हिलाकर उठाया। दोनों आँखें मलते हुये उठ गये। उसने उन दोनों को पूरी बात बताई। वो दोनों भी सकपका गये। सबने जल्दी से अपना-अपना सामान लिया और नीचे उतरे।

अँधेरा गहरा गया था और रात हो चुकी थी। स्टेशन भी पूरी तरह सुनसान था। तीनों स्टेशन पर उतरे और बाहर जाने के लिये प्लेटफॉर्म पर आगे बढ़ गये। तभी अभिजीत की नज़र स्टेशन के खम्बे पर लगे नाम वाले छोटे बोर्ड पर पड़ी और वो चौंक गया।

“सूरतगढ़!” अभिजीत ने चौंक कर जोर से कहा और उसकी आवाज़ सुनकर बाकी दोनों रुक गये।।

“हम गलत जगह आ गये हैं।” राकेश ने घबराकर कहा।

तब तक अभिजीत ने ट्रेन का नाम पढ़ लिया था। उसने गुस्से से कहा,”हमनें ट्रेन ही गलत पकड़ ली थी। और ये सब हुआ तुम्हारी वजह से।” अभिजीत ने शैलेन्द्र की ओर गुस्से से उँगली दिखाते हुये कहा।

“तुम हमेशा देर करते हो। तुम दोनों से कितनी बार कहा है कि समय की इज्जत किया करो, समय से चला करो लेकिन नहीं, मेरी बात कभी मानी है, तुम लोगो ने। अब देख लिया नतीजा।” अभिजीत ने दोनों को डांटते हुये कहा।

“लेकिन....” शैलेन्द्र कुछ बोलने ही वाला थी कि राकेश ने उसकी बात काटते हुये कहा,”हाँ ठीक है भाई। हो गयी गलती, अब लेक्चर तो मत दो। अब ये तुम्हारी हर वो बात मानेगा जो तुम कहोगे।” राकेश ने शैलेन्द्र की तरफ इशारा करते हुये कहा। शैलेन्द्र ने उसे गुस्से में घूरा पर कुछ बोला नही।

“चलो चलकर पता करते हैं कि अगली ट्रेन हमें कब मिलेगी वापस जाने के लिये। फिर आगे की सोचते हैं।” राकेश ने आगे कहा। अभिजीत ने हामी भरी और तीनों पूछताछ के लिये काउंटर की तरफ जाने के लिये आगे बढ़े।

“सर! जयपुर के लिये अगली ट्रेन कितने बजे चलेगी?” राकेश ने पूछा। क्लर्क ने कागजों से सर उठाकर घूर कर उसे देखा और बोला,” 10 मिनट पहले ही निकली है।”

“और उससे अगली ट्रेन?” राकेश ने फिर पूछा। “कल सुबह 5 बजे।” उधर से चिढ़ा हुआ जवाब आया। तीनो ने अपना सर पीट लिया क्योंकि जब वो ट्रेन से उतर रहे थे, जयपुर की एक ट्रेन छूट रही थी। पर वो कर भी क्या सकते थे?

“कर ली मन की? हो गयी तसल्ली? अब क्या करोगे? रात भर जागकर ट्रेन की सफाई करोगे?” अभिजीत बहुत गुस्से में था। तीनों वापस आकर एक बेंच पर बैठ गये।

“तुम लोगों ने कुछ ध्यान दिया।” शैलेन्द्र ने आखिरकार अपनी चुप्पी तोड़ी। दोनों ने उसकी तरफ देखा। “ये स्टेशन कितना अजीब है। हवा में एक अजीब सी नीरसता है और अँधेरा कुछ ज्यादा ही शांत है। क्या सिर्फ मुझे ही ऐसा लग रहा है?” उसने आगे कहा।

तब बाकी दोनों का ध्यान उधर गया। उन्होंने भी उस जगह की विचित्रता अनुभव की।

“वो सब तो ठीक है, पर अब करें क्या? मेरे ख्याल में तो हमें बाहर चलकर कोई लॉज या होटल देखना चाहिए ताकि रात गुज़ार सकें। और कुछ खा भी लें, भूख भी लग रही है।” राकेश ने कहा। “क्या कहते हो अभि? चलें?” उसने आगे पूछा। अभिजीत ने हामी भरी और तीनों स्टेशन से बाहर जाने के लिये चल पड़े।

अचानक अभिजीत ठिठककर रुक गया। उसके दिमाग में सन्न की आवाज गूँज गयी और उसे कुछ अजीब -सा महसूस हुआ, जैसे कुछ ठीक नहीं है। “ये हो क्या रहा है आज? पहले एक अजीब सपना, फिर हमारा गलत जगह पर होना और अब ये अजीब सा एहसास। चक्कर क्या है? ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ मेरे साथ।” अभिजीत मन में सोचने लगा। बाकी दोनों भी उसे रुकता देख रुक गये।

“क्या हुआ अभि? सब ठीक तो है न?” अभिजीत को माथे पर हाथ रखे देख राकेश ने पूछा।

“ह..हाँ कुछ नहीं। मैं ये कह रहा था कि हमें खाना खा कर वापस यहीं आ जाना चाहिए और यहीं स्टेशन के वेटिंग रुम में रुक जाना चाहिए।” अभिजीत ने कहा।

“क्यों..अब तुम्हें डर लग रहा है?” शैलेन्द्र ने मौका मिलते ही डरावने अंदाज में उसे चिढ़ाकर कहा। राकेश ने उसकी तरफ मुँह बनाकर देखा।

“नहीं.. तुम जानते हो मैं नहीं डरता। मैं इसलिये कह रहा हूँ कि शायद मेरी छठी इन्द्रिय कह रही है कि कुछ गड़बड़ है। मैं हमेशा तुम लोगों से कहता हूँ कि मेरी बात मान लो, लेकिन तुम लोग नहीं मानते और बाद में वही होता है, जो मैं कह चुका होता हूँ। मैंने कल भी कहा था, तुम लोग नहीं माने और अभी हम सब यहाँ खड़े हैं, और अब मैं, पुन: कह रहा हूँ।” फिर अभिजीत ने अपना देखा हुआ सपना और अभी हुये एहसास को बताकर दोनों को समझाते हुये कहा।

“भाई मेरे...ये सब सपने-वपने कुछ नहीं होते। सब तुम्हारे ज्यादा किताबें पढ़ने का नतीजा है। वही सब तुम्हारे दिमाग में घूम रहा है।” शैलेन्द्र बोला।

अभिजीत ने पहले उसे घूरा, फिर बड़े प्यार से बोला,”भाई बड़ी देर हो गयी, तुमनें तम्बाकू नहीं खाया? शायद ख़त्म हो गया होगा। आओ मैं दिला दूँ।”

मतलब समझते ही राकेश की हंसी छूट गयी। ये शैलेन्द्र के लिये इशारा था कि वो कुछ देर के लिये मुँह बंद कर ले। “हाँ ठीक है, हो गया तुम लोगो का मज़ाक। जो तुम्हारी समझ में आये करो। चलो कहाँ चलना है?” शैलेन्द्र ने मुंह बनाकर कहा। और तीनों स्टेशन के बाहर खाना खाने के लिये मुड़ गये।

वहीं थोड़ी दूर पर उनके पीछे एक काला साया अँधेरे में धीरे से हिला और अँधेरे में ही खो गया। अभिजीत और उसके दोस्त उसे नहीं देख पाये, पर जल्दी ही वो उससे रुबरु

होने वाले थे।

तीनों दोस्त बाहर निकल कर एक छोटे से होटल में पहुंचे और खाने का आर्डर देकर इंतज़ार करने लगे।

अभिजीत को कुछ सोचता देख, राकेश ने उससे पूछा, “क्या हुआ? अभी भी वही सब सोच रहे हो?” अभिजीत ने ’न’ में सर हिलाया और कहा,”मैं ये सोच रहा हूँ कि एक दिन बर्बाद हो गया, अब फिर से एक दिन का और सफ़र करना पड़ेगा जोधपुर के लिये।”

“तो क्या तुम अभी भी घूमने जाओगे? ये ट्रिप अब बेमतलब की है। अब वापस चलो फिर कभी घूमने आएंगे। मैं कहीं नहीं जाऊंगा।” शैलेन्द्र ने चिढ़कर कहा।

“घण्टा नहीं जाओगे तुम?” तुम्हारे तो फ़रिश्ते भी जायेंगे। ट्रिप का सत्यानाश तुमनें ही किया है। बिना घूमे मैं कहीं वापस नहीं जाने वाला।” अभिजीत नें गुस्से में कहा।

“अरे ठीक है यारों। शांत हो जाओ। पहले वापस तो पहुंचे, फिर देखते हैं। अभी अपना मुँह खाने के लिये चलाओ न कि झगड़ने के लिये।” खाना आते ही राकेश ने दोनों को फिर से शांत कराते हुये कहा। फिर खाना ख़त्म होने तक कोई कुछ नहीं बोला। खाना खाने के बाद तीनों चाय पीने एक दुकान पर गये।

शैलेन्द्र ने दुकान वाले से एक तम्बाकू का पैकेट लिया। जैसे ही वो पलटा, उसने देखा अभिजीत उसे ही घूर रहा था। शैलेन्द्र ने तुरंत दांत दिखाते हुये कहा,”तुमनें मुझे दिलाने का वादा किया था न,याद करो।”

“तुम्हें तो बेटा, मैं तम्बाकू के साथ खेत में दफनाउँगा। मरने के बाद खाना वहीं बैठ के। तम्बाकू जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी।” अभिजीत ने हंसकर कहा। और तीनों खिलखिलाकर हँसने लगे।

“अच्छा अब सुनो! यहाँ थोड़ी ही दूर एक अच्छा होटल है। रात वहीं गुज़ारेंगे।” शैलेन्द्र ने अभिजीत का मूड ठीक देखकर कहा। होटल का नाम सुनते ही अभिजीत कुछ बोलने वाला था कि राकेश ने बीच में कहा,”मैंने उससे पूछने के लिये कहा था।” अभिजीत उसकी ओर मुड़ा और कमर पर हाथ रखकर हताश होकर देखा।

“अभि समझने की कोशिश करो यार।” राकेश ने समझाने की कोशिश की।

“तुम्हें पता है न सयाना कौआ कहाँ गिरता है? मतलब फिर से नहीं माननी मेरी बात। “ अभिजीत ने चिढ़कर शैलेन्द्र से कहा। फिर उसने शांत होकर आगे कहा, “ ठीक है चलो। पर फिर से ट्रेन छूटी तो....”

“नहीं छूटेगी भाई। मैं सबसे पहले उठाऊंगा तुम्हें।” अभिजीत की बात काटकर शैलेन्द्र बीच में बोल पड़ा। दोनों ने उसकी तरफ मसखरी के अन्दाज में देखा।

“अच्छा! और वो कैसे होगा? रातभर उल्लू की तरह जागकर तारे गिनोगे सुबह तक?” राकेश ने हंसकर कहा।

“रहने दो, जगा लिया तुमनें। खुद तो लातें खाकर भी उठते नहीं, हमें उठाएंगे जनाब। चलो, चलते हैं।” तीनों ने चाय के गिलास रखे और पैसे देकर होटल की तरफ बढ़ गये। शैलेन्द्र आगे चलकर रास्ता देख रहा था, जैसे दुकान वाले ने उसे बताया था।

दस बज चुके थे और गलियां लगभग सुनसान हो चुकी थीं। सूरतगढ़ आम शहरों की तरह ही था। कोई भी नहीं दिखाई दे रहा था, सिवाय एक दो भिखारियों के, जो सड़क किनारे किसी दुकान के चबूतरे पर रोजाना की तरह सोने की तैयारी कर रहे थे। कहीं दूर किसी गली में कुत्ते भौंक रहे थे। शैलेन्द्र के पीछे -पीछे बातें करते हुये बाकी दोनों एक गली में दायें मुड़े। एकाएक शैलेन्द्र रुक गया और कुछ सोचकर बाएं मुड़ गया।

“तुम्हें उसका बताया रास्ता याद भी है न। “ नहीं, तो बता दो, किसी से पूछ लेंगे। “ राकेश ने कहा।

“नहीं नहीं! मुझे याद है, यही गली है।” शैलेन्द्र ने कहा, और आगे बढ़ गया। थोड़ी आगे जाकर वो गली एक तिराहे पर ख़त्म हुई। गलियों में सन्नाटा पसरा हुआ था। होटल का कहीं नामोनिशान नहीं था।

“मिल गया होटल? बड़े आये रहनुमा बनने। मैं कह भी रहा था कि पूछ लो किसी से।” अभिजीत ने चिढ़कर कहा।

“क्या तुम लोग कुछ खोज रहे हो?” उनके पीछे से एक शाँत और गंभीर जनाना आवाज गूँजी। तीनों ने तुरंत पलटकर देखा।

उनसे थोड़ी ही दूरी पर एक औरत सड़क पर गली के बीचों -बीच खड़ी हुई थी। बिजली का खम्बा उसके पीछे थोड़े दूरी पर था, जिससे रोशनी हो रही थी। पीछे से रोशनी पड़ने के कारण वो लोग उसका चेहरा नही देख पा रहे थे।

“नहीं हम लोग बस पास में ही जा रहे थे।” शैलेन्द्र ने बात बदलने की कोशिश की। उसके चेहरे पर डर साफ झलक रहा था।

“मुझे तो ऐसा नहीं लगता। खैर....तुम्हारा तो पता नहीं ,लेकिन मैं जरूर किसी को खोज रही हूँ।” वो सीधा अभिजीत की तरफ देखकर बोलते हुये आगे आई और एक दुकान की मद्धम रोशनी में उसका चेहरा दिखाई दिया।

वो एक अधेड़ उम्र की औरत थी। उम्र का असर उसके गोल चेहरे पर दिखाई दे रहा था। उसके लंबे सफ़ेद बाल खुले और पीछे की ओर सपाट रूप से व्यवस्थित थे। पर जिस चीज ने तीनों को सबसे ज्यादा हैरान किया वो थी, उस औरत की लाल रंग की आँखे और माथे पे बना हुआ एक चिन्ह। वो चिन्ह उसके माथे के बीचोंबीच एक काली सीधी खड़ी रेखा थी जो उसकी दोनों भौंहों तक खिंची थी। उस रेखा के नीचे भौंहो के बीच एक कंटीला चक्र बना हुआ था, बिल्कुल वैसा ही जैसा अभिजीत ने अपने सपने में झंडे पर बना हुआ देखा था।

उसने काले रंग का एक कोट पहना हुआ था जो कि उसके पैरों तक लंबा और लबादे की तरह लग रहा था। उसके कोट में कमर पर एक बेल्ट बँधा हुआ था। कोट के अंदर उसने काला ही गाउन पहना हुआ था, जो गले तक बंद था। उसके गले में एक वैसे ही कंटीले चक्र वाला सोने का एक बड़ा सा लॉकेट लटक रहा था। कोट की आस्तीनें कलाइयों पर कसी हुई थी, जिसमे से उसकी पतली और नुकीली उँगलियाँ दिखाई दे रही थी। उसका व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली दिखाई दे रहा था।

"पर आप हैं कौन? और किसे ढूंढ रही हैं?" अभिजीत ने पूछा।

"मेरा नाम विशल्या है और मैं तुम्हें खोज रही हूँ। मैं तब से तुम्हारे पीछे हूँ, जब से तुमने मेरे क्षेत्र में कदम रखा है।" उस औरत ने अभिजीत की तरफ अपनी ऊँगली उठाकर कहा।

"पर आप मुझे कैसे जानती हैं? और आपको मेरी जरूरत क्यों है?" अभिजीत ने आगे पूछा। उसकी कुछ भी समझ में नही आ रहा था।

"मैं तुम्हें नहीं जानती, लेकिन तुममें कुछ विशेष है। तुम्हारे शरीर के औरा को मेरे तंत्र-जाल ने पहचान लिया था। और तुम्हारी स्थिति का पता चलते ही मैंने तुम्हारा पीछा करना शुरू कर दिया था। तुम मेरे काम आ सकते हो। मेरे साथ चलो, ताकि मैं अपना उद्देश्य पूरा कर सकूँ।" विशल्या ने उसे समझाकर कहा।

"देखिये, मैं एक आम इंसान हूँ और यहाँ बस गलत समय पर गलती से आ गया हूँ। हमें कहीं और नहीं जाना है। हम चलते हैं, माफ़ कीजिये।" अभिजीत के इतना कहते ही तीनों मुड़कर वापस जाने लगे। अचानक उन्हें ठिठक कर रुक जाना पड़ा, क्योंकि ऊर्जा के एक घेरे ने उनका रास्ता रोक दिया था। वो सहमकर पलटे और आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने देखा कि वो ऊर्जा का घेरा विशल्या के दोनों हाथों से निकल रहा है और उसकी लाल आँखें तेज चमकने लगी है।

"मैंने तुमसे इजाज़त नहीं मांगी थी लड़के। वो मेरा आदेश था।" विशल्या ने तेज़ आवाज में कहा।

"हे भगवान! ये तो कोई चुड़ैल है। अब क्या करें अभि?" शैलेन्द्र ने डरते हुये कहा।

"मैंने तुम लोगों से पहले ही कहा था, वहीं रुकते हैं, पर तुम लोग नहीं माने। हमें यहाँ से भागना होगा। हम इससे जीत नहीं सकते।" अभिजीत ने परिस्थिति को समझते हुये कहा। दोनों ने हामी भरी और सभी एक दूसरी गली में भागने लगे।

विशल्या को बाकी दोनों से कोई सरोकार नहीं था। उसे अभिजीत की जरूरत थी। उसने अपने दायें हाथ को रस्सी फेंकने के अंदाज़ में झटका और उससे ऊर्जा की एक लहर निकली, जिसने अभिजीत को जकड़ लिया। उसने छूटने की अथक कोशिश की, उसके दोस्त ये देखकर रुक गये और उसकी मदद करने के लिए उसकी तरफ बढ़े। लेकिन

अचानक ही अभिजीत को जकड़ने वाली ऊर्जा लहर गायब हो गयी और उसके दोस्तों के साथ- साथ विशल्या भी दंग रह गई। अभिजीत खुद नहीं समझ पा रहा था कि ये कैसे हुआ?

“तुझे मेरा ऊर्जा बंधन बांधकर नहीं रख पाया? मैंने कहा था न कि तू कोई साधारण इंसान नहीं है। पर अब दोबारा ऐसा नहीं होगा।” इतना कहकर विशल्या ने अपने दोनों हाथ घुमाए और तेजी से आगे की ओर किये, जिससे कुछ चमकते हुये गोले उनकी ओर लपके। तीनों ने भागते हुये बचने का प्रयास किया। लेकिन एक गोला शैलेन्द्र को जाकर लग गया और वो बेहोश होकर गिर पड़ा। राकेश और अभिजीत दोनों उसे सँभालने के लिये पीछे मुड़े। तब -तक विशल्या अगला वार करने के लिये तैयार हो गयी थी। उसने एक जहरीली मुस्कान के साथ अगला वार किया।

राकेश और अभिजीत के पास संभलने का कोई अवसर नहीं था। तभी अचानक विशल्या के वार को एक अनजान शख्स ने रोक लिया।

संकटमोचक

अभिजीत हैरान होकर उस शख्स को देख रहा था, जो उसकी ओर पीठ करके खड़ा हुआ था। उस शख्स के हाथ आगे की ओर थे, जिससे एक ऊर्जा से बनी हुई ढाल निकल रही थी। ढाल ने विशल्या के वार को उसी की ओर लौटा दिया जिससे वो वापस विशल्या को ही आ लगा और वो पीछे की ओर उछल गयी।

वो अजनबी अभिजीत की ओर पलटा। अभिजीत ने देखा कि वो उसकी ही उम्र का एक लड़का है। उसके बाल छोटे और चेहरा गोल था। उसके सांवले चेहरे पर हल्की दाढ़ी और मूछें थीं। उसके ऊपरी होंठ पर एक गहरा घाव का निशान था जो उसकी मूछों के नीचे से भी दिखाई दे रहा था। उसके माथे पर भी वही काले रंग का चिन्ह था, जैसा विशल्या के माथे पर बना हुआ था। उसने एक काले रंग की हाफ टी शर्ट और चुस्त पैंट पहनी हुई थी। उसके पैरों में घुटनों से कुछ नीचे तक की लंबाई वाले चमड़े के जूते थे। उसके ऊपर उसने विशल्या जैसा ही लंबा कोट पहन रखा था, पर कोट में आस्तीन नहीं थी, जिससे उस अजनबी की बलिष्ठ बाँहें दिखाई दे रही थी। उसकी कलाइयों में भी काले रंग की ही पट्टियां बंधी हुई थी।

"अब तुम कौन हो? और ये सब चल क्या रहा है?" अभिजीत ने पूछा।

"अभी बातों का समय नहीं है। मुझे बस अपना मित्र समझो। मेरे साथ आओ। जल्दी!" उस अजनबी शख्स ने कहा।

उन दोनों ने बिना कुछ और पूछे तेजी से शैलेन्द्र को उठाया और उस अजनबी के पास आ गये। उस अजनबी ने तुरंत ही अपने हाथों से उन सब के चारों तरफ एक ऊर्जा का घेरा बनाया और सभी उसमें गायब हो गये। तब तक अपने ही वार को सहने के बाद संभलकर खड़ी होने का प्रयास कर रही विशल्या ने उन्हें रोकने के असफल प्रयास में एक और वार किया। पर तब तक देर हो चुकी थी। उसका वार पीछे की दीवार ही तोड़ सका।

"भाग गये बचकर।" विशल्या ने दाँत पीसते हुये कहा, "मुझे उस अप्रत्याशित बचाव

की उम्मीद नहीं थी, वरना मेरा वार पलटकर मुझे ही नहीं लगता। मेरी इतने वर्षों की तलाश अधूरी रह गयी, पर मैं उसे जल्दी ही फिर से ढूंढ लूँगी। पर मुझे कुछ और तैयारी करनी होगी। और फिर मेरा उद्देश्य पूरा होकर रहेगा।” इतना कहकर निराश विशल्या भी काले धुएं के एक गुबार में गायब हो गयी।

आधी रात हो चुकी थी। अभिजीत और उसके दोस्त एक दूसरी सुनसान गली में प्रकट हुये। उनके साथ वह अजनबी भी था। अजनबी ने इधर उधर देखा। गली में सन्नाटा पसरा हुआ था। शैलेन्द्र अभी तक बेहोश था। गली में सिर्फ एक ही मकान था। वो उसकी तरफ बढ़े।

उनके सामने एक दो-मंजिला बहुत पुराने समय का जर्जर मकान था। उसके निचल हिस्से में मुख्य द्वार के दोनों ओर चबूतरे थे, जिन पर नक्काशीदार खम्बे लगे हुये थे। मुख्य द्वार पर लकड़ी का दो पल्ले वाला एक मोटा और मजबूत दरवाजा था, जो एक साँकल से बंद था और जिस पर एक मोटा ताला जड़ा हुआ था। उसकी दूसरी मंजिल पर एक बालकनी थी, जिस पर लोहे की जंग खाई हुई बेहद पुरानी रेलिंग लगी हुई थी। बालकनी की छत लोहे की लहरदार चादरों की बनी हुई थी, जिनके किनारों पर नीचे की ओर लोहे की पतली नक्काशीदार पट्टी लगी हुई थी।

अजनबी ने अपनी जेब से एक चाभी निकाली और दरवाजा खोलकर सबको जल्दी से अंदर आने का इशारा किया। सबके अंदर आते ही उसने दरवाजा बंद करके साँकल लगा दी।

अभिजीत ने तब तक बत्ती जला दी थी। उसने खुद को एक खाली कमरे में पाया जिसमें आगे एक और कमरा था। बत्ती बंद करके सभी लोग अगले कमरे को भी पार करते हुये, एक खुले आँगन में पहुंचे। उनकी दायीं तरफ क्यारियों में एक घनी बेल लगी हुई थी जो कि लगभग सुख चुकी थी। सामने एक और कमरा था। अजनबी ने उस दरवाजे की साँकल खोली और सबको अंदर बुलाया और दरवाजा लगा दिया। राकेश ने बत्ती जलायी। कमरा बहुत बड़ा था और किताबों की आलमारियों से भरा हुआ था। वहीं कोने में एक बड़ा सा पलंग था। अभिजीत ने शैलेन्द्र को वहां लिटा दिया और पलटा।

“वो सिर्फ बेहोश है। चिंता की कोई बात नहीं है। हम यहाँ फ़िलहाल सुरक्षित हैं।” अजनबी ने कहा।

“हमें बचाने के लिये धन्यवाद। पर तुम हो कौन? और ये शक्तियाँ तुम्हारे पास कैसे आईं? और ये सब चल क्या रहा है?” अभिजीत ने उस अजनबी से कहा।

“मेरा नाम नैमिष है और बाकी प्रश्नों के जवाब तुम्हें जल्दी ही मिल जायेंगे।” उस अजनबी ने कहा।

“क्या तुम मेरे दोस्त को होश में ला सकते हो?” अभिजीत ने परेशान होकर पूछा।

“कोशिश करता हूँ।” नैमिष ने कहा और शैलेन्द्र की ओर गया। उसने झुककर उसके माथे पर हाथ रखा और अपनी आँखें बंद कर ली। उसके हाथ और माथे के बीच में रौशनी चमकने लगी। थोड़ी देर बाद उसने अपना हाथ हटाया और पलटकर अभिजीत को देखा।

“क्या हुआ?” अभिजीत ने घबराकर पूछा।

“मैं इसे ठीक नहीं कर सकता। इसे या तो विशल्या ठीक कर सकती है या फिर वार का असर ख़त्म होते ही ये स्वयं होश में आ जायेगा।” नैमिष ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर सहानुभूति से कहा।

“मैं ये सब नहीं जानता। मुझे मेरा दोस्त होश में चाहिए और हमें सुबह की ट्रेन से तुरंत वापस लौटना है। न मुझे तुमसे कोई मतलब है न विशल्या से और न ही मुझे इन सब चक्करों में फंसना है।”

इतना कहकर वह पलटा और राकेश से कहा, “शैलेन्द्र को उठाओ। नैमिष हमें अभी इसी वक्त स्टेशन ले जायेगा। हम वापस चलकर इसे किसी डॉक्टर को दिखाएंगे।” इससे पहले राकेश कुछ समझता, अभिजीत शैलेन्द्र की ओर बढ़ा।

“तुम लोग यहाँ से कहीं नहीं जा पाओगे।” नैमिष ने शांत आवाज़ में कहा। अभिजीत और राकेश उसकी ओर घूमे। अभिजीत की भौंहें तन गयी।

“तुम हमें धमकी दे रहे हो? तुम खुद को समझते क्या हो? तुम्हें क्या लगता है हम तुम्हारे बगैर वापस नहीं जा पाएंगे? तुम्हारे माथे का चिन्ह देखकर तो ऎसा लगता है कि तुम भी विशल्या के ही साथी हो।” अभिजीत ने आवाज ऊँची करते हुये कहा।

नैमिष ने एक गहरी साँस ली और शांत स्वर में अभिजीत को समझाते हुये कहा,”अभिजीत, तुम मुझे गलत समझ रहे हो। न मैं उसका साथी हूँ और न ही मैं तुम्हें धमकी दे रहा हूँ। मैं सिर्फ ये बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि विशल्या तुम्हें यहाँ से कहीं जाने नहीं देगी। अगर हमनें तुम्हें किसी तरह कोशिश करके यहाँ से निकाल भी दिया, तो वो चुप नहीं बैठेगी। वो एक बार तुम्हें ढूँढ चुकी है। अब वो दुनिया में कहीं से भी तुम्हें ढूँढ निकालेगी। तुम फ़िलहाल हमारे साथ ही सुरक्षित हो।”

अभिजीत ने शांत होकर कुछ सोचा और फिर पूछा,”तुम बार- बार 'हमारे' शब्द का प्रयोग कर रहे हो, इसका मतलब तुम्हारे जैसे और लोग भी हैं? और तुम्हें कैसे पता चला कि विशल्या हम पर हमला कर रही है?”

नैमिष कुछ सोच के मुस्कुराया और फिर बोला,"उन्होंने ठीक ही कहा था। तुम चालाक हो।"

"किसने कहा था?"

"तुम उनसे जल्दी ही मिलोगे। हम उन्हीं के पास चल रहे हैं। तुम्हारे सारे सवालों के जवाब वही देंगी। क्या तुम चलने के लिये तैयार हो?" नैमिष ने पूछा।

अभिजीत ने राकेश की ओर देखा। "मेरे ख्याल से हमें फ़िलहाल नैमिष की बात मान लेनी चाहिए।" राकेश ने कहा।

"ठीक है। हम तुम्हारे साथ चलने के लिये तैयार हैं। लेकिन मुझे सब कुछ जानना है कि ये क्या मामला है? और मेरा इस सब से क्या सम्बन्ध है?" अभिजीत ने कहा।

"उचित है। चलो अब चलते हैं।" नैमिष ने कहा। फिर सभी लोग उस मकान से बाहर आ गये। नैमिष ने ताला लगाया और फिर से एक बार फिर इधर- उधर देखा। गली पहले की तरह ही सुनसान थी। उसने सबको पास बुलाया और सब एक बार फिर से ऊर्जा के घेरे में गायब हो गये।

वहाँ से बहुत दूर एक अनजान जगह पर बनी एक सुनसान गुफा में विशल्या गहन तंत्र साधना में लीन थी। गुफा मशालों की रौशनी से प्रकाशमान थी। जमीन में दो त्रिकोण मिलकर एक सितारे की आकृति बना रहे थे, जिसके प्रत्येक किनारे पर मोमबत्तियां जल रही थी। उस आकृति के मध्य में विशल्या आँखें बंद किये एक आसन पर बैठी थी। अचानक उसके आसपास दो आकृतियाँ प्रकट हुईं।

"हम आपकी सेवा में उपस्थित हैं महामना। आदेश कीजिये।" उन दोनो आकृतियों ने हाथ जोड़कर सिर झुकाये हुये कहा। विशल्या ने धीरे से अपनी आँखें खोली और मुस्कुराकर अपना सिर हिलाया।

"तक्षिका, यक्षिका। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।" उसने दोनों की तरफ बारी- बारी से देखकर कहा।

तक्षिका और यक्षिका जुड़वाँ बहनें थी। देखने में बिल्कुल एक जैसी। शरीर दुबला- पतला , छोटा चेहरा , सफ़ेद आँखें , सिर पर मध्य में लंबे बालों की एक खुली चोटी जो कमर तक आ रही थी। उनकी भौहें किनारों से बिजली की आकृति में ऊपर की ओर उठी

हुई थीं। दोनों गले तक बंद चुस्त कपड़े पहने हुये थी। तक्षिका के कपड़ों का रंग गहरा लाल और यक्षिका के कपड़ों का रंग गहरा पीला था। उन दोनों के गले में एक गोल मणि का लॉकेट था, जो उनके कपड़ों के ही रंग का था। जिससे उनकी पहचान हो रही थी।

तक्षिका और यक्षिका, विशल्या की तंत्र शक्तियों का अंग थीं। जिसे उसने वर्षों की गहन साधना से प्राप्त किया था। वो दोनों मानव रूप में रहकर विशल्या की सेवा करती थीं। दोनों ने उसी मुद्रा में खड़े हुये फिर से कहा,"महामना, आपके हर आदेश का पालन होगा। बताइये हमें क्या करना है?"

"तुम्हें एक लड़के का पता लगाकर मुझे सूचित करना है और मुझे उसके पास ले जाकर उसे बंदी बनाने में मेरी सहायता करनी है।" विशल्या ने कहा। "चूँकि तुम दोनों मेरी शक्तियों का ही अंग हो, इसीलिये उस लड़के क औरा पहचान कर उसे खोज सकती हो।" विशल्या ने आगे कहा।

"किन्तु महामना! उसे तो आप एक बार खोज चुकी है। अब तो उसे खोजना कोई समस्या की बात नहीं होगी।" तक्षिका ने पूछा।

"हाँ, लेकिन वह कोई साधारण लड़का नहीं है और अब तक उसे भी ये बात पता नही है। इससे पहले कि वो जाने. वो कौन है?और मेरे लिये मुसीबत खड़ी करे, हमें उसे यहाँ लेकर आना होगा। अगर वो सब कुछ जान गया और उन लोगों के साथ मिल गया तो मेरी वर्षों की प्रतीक्षा व्यर्थ हो जायेगी। " विशल्या ने तक्षिका को समझाया,"तुम्हें बस उसकी स्थिति का पता लगाना है और मुझे सूचित करना है। फिर हम आगे की योजना बनाएंगे।"

"जी महामना। ऐसा ही होगा। आज्ञा दीजिये।" इतना कहकर तक्षिका और यक्षिका धुंए के गुबार में अदृश्य हो गई। विशल्या ने फिर से अपनी आँखें बंद कर ली और साधना में लीन हो गई।

दूसरी तरफ नैमिष, अभिजीत और उनके दोस्त एक सुनसान जंगल में प्रकट हुये। अभिजीत को जंगल कुछ जाना पहचान सा लगा पर उसने कुछ कहा नहीं। नैमिष ने उन्हें साथ में आगे बढ़ने को कहा। थोड़ी दूर चलने के बाद वो एक खुली जगह में पहुंचे। कुछ ही दूरी पर एक शानदार महल था। हालाँकि अँधेरे में महल की रुपरेखा ठीक से स्पष्ट नहीं हो रही थी लेकिन फिर भी अभिजीत खुद को कुछ कहने से रोक नहीं सका,"ये तो वही

महल है।”

“कौन सा महल? तुम फिर सपना देखने लगे। नींद में हो क्या?” राकेश ने चौंकते हुये कहा।

“क्या तुम्हें महल दिखाई नहीं दे रहा?” अभिजीत ने पूछा और फिर नैमिष की ओर पलटा।

नैमिष भी आश्चर्यचकित था, क्योंकि अभिजीत महल देख पा रहा था और वो उसे पहचानता भी था। उसने अभिजीत को समझाया,”ये इस बात का प्रमाण है कि तुम साधारण नहीं हो क्योंकि एक तंत्र द्वारा रक्षित किए जाने के कारण आम लोगों को यह महल दिखाई नहीं देता है। पर तुमने ये महल कब देखा है?”

“मैंने ये आज सपने में देखा था। अजीब सपना था। मैं खुद नहीं समझ पाया कि उसका मतलब क्या था?” अभिजीत ने कहा।

“इस बारे में बाद में बात करेंगे, आओ चलते हैं।” नैमिष ने चलने का इशारा किया। और वो लोग महल की ओर जाने लगे।

अभिजीत ने ध्यान से महल की ओर देखा। महल बिलकुल वैसा ही था, जैसा उसने सपने में देखा था बस फर्क इतना था कि अब महल अपने पूरे रुबाब में था और बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा था। महल के ऊपरी हिस्से में वही झंडा लहरा रहा था। उसने सोचा की बाद में वह नैमिष से उस झंडे और उसके माथे पर बने उस कंटीले चक्र के बारे में पूछेगा।

वो लोग महल की तरफ आगे बढ़े ही थे कि अचानक अभिजीत रुक गया। राकेश को भी झटका लगा क्योंकि वो दोनों शैलेन्द्र को संभाले हुये थे। नैमिष भी उन्हें रुकता देख रुक गया।

“क्या हुआ?” नैमिष ने पूछा। उसने देखा अभिजीत एकटक सामने देख रहा है और अचानक अपनी आँखें जोर से बंद कर ली है। “क्या तुम ठीक हो?” नैमिष ने फिर से पूछा।

“कुछ नहीं। फिर से वही अजीब सा एहसास हुआ जैसा पहले स्टेशन पर हुआ था।” अभिजीत ने नैमिष और फिर राकेश की ओर देखकर कहा।

“पर चिंता की कोई बात नहीं है। चलो चलते हैं।” उसने कहा और वो लोग आगे बढ़ गये।

महल के थोड़े पास पहुँचकर उन्होंने देखा कि मुख्य द्वार पर दो पहरेदार खड़े हुये थे। नैमिष ने बताया कि ये दोनों महल की ओर आने वाले किसी भी व्यक्ति या खतरे से महल की रक्षा करते हैं। पहरेदार नैमिष को पहचानते थे, इसलिये उन्होंने द्वार खोल दिया और सभी लोग अंदर प्रवेश कर गये।

वहां से कुछ ही दूरी पर तक्षिका और यक्षिका एक पेड़ के पीछे से उन सब को देख रही थीं। उन्होंने सारी परिस्थिति का अनुमान लगाया और वहाँ से धुएँ के गुबार में गायब हो गई। द्वार में प्रवेश करते ही नैमिष, अभिजीत और उसके दोस्त एक गलियारे में पहुंचे, जिसके दोनों ओर खम्बों वाले चबूतरे थे, जो छोटे कमरों जैसे लग रहे थे। गलियारा पार करते ही वे एक बड़े से आँगन में पहुंचे। वहाँ मध्य में विशाल और बहुत ही सुंदर फव्वारा था जो रंग -बिरंगे पानी और रोशनियों से जगमगा रहा था। वहाँ कुछ लोग आ- जा रहे थे और अभिजीत और उनके दोस्तों को अजीब तरीके से देख रहे थे। इस पर नैमिष ने बताया कि उन्होंने पहली बार इस महल में साधारण इंसानो को आते देखा है।

अभिजीत ने ध्यान दिया कि उन सभी की वेशभूषा काफी कुछ नैमिष और विशल्या की तरह ही थी। नैमिष ने उनमें से दो व्यक्ति को बुलाया और उनसे कुछ कहा। नैमिष ने बताया कि वो शैलेन्द्र का तब तक ध्यान रखेंगे, जब तक उसे होश नहीं आ जाता। आँगन के दोनों तरफ गलियारे और ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां थी। उन लोगों ने राकेश और अभिजीत से शैलेन्द्र को लिया और सीढ़ियों से ऊपर ले गये।

गलियारों में बहुत ही पुराने चित्र बने हुये थे जिनमें भगवान शिव और विष्णु के अवतारों की पौराणिक गाथाओं का वर्णन था। महल पूरी तरह नक्काशी से भरा हुआ था। फव्वारे की दूसरी ओर उनके सामने मुख्य भवन था।

मुख्य भवन में भी एक नक्काशीदार बड़ा- सा लकड़ी का द्वार था। उसमें प्रवेश करते ही अभिजीत और राकेश आश्चर्यचकित रह गये। वहाँ एक विशाल हॉल था जिसके दोनों तरफ बहुत से कमरे थे। सामने हॉल के दोनों किनारों से बड़ी- बड़ी सीढ़ियां ऊपर की ओर जा रही थी। ऊपर सिर्फ एक ही कमरा था। हॉल में चारों तरफ विभिन्न प्रकार के बड़े - बड़े चित्र जड़े हुये थे, जिनमें कुछ लोगो के चित्र भी थे। उनकी वेशभूषा नैमिष से मिलती जुलती थी। हॉल के बीचों बीच छत पर एक विशाल और भव्य झूमर लटका हुआ था जिससे रंग बिरंगी रौशनी छन कर आ रही थी।

नैमिष ने उन्हें एक कमरे की तरफ इशारा किया और उसे खोलकर उन्हें अंदर ले गया। कमरा साधारण -सा था। और अच्छी तरह सजा हुआ था। कमरे के बीच में एक बड़ा सा पलंग था, जिसके पास टेबल पर एक सुंदर छोटा -सा लैंप था। छत पर भी एक छोटा- सा झूमर था, जो मद्धिम रौशनी से चमक रहा था। कमरे में पंखा नहीं था लेकिन उसकी जरुरत नहीं थी क्योंकि एक बड़ी- सी खिड़की से ठंडी-ठंडी हवा अंदर आ रही थी, जिससे वहाँ अच्छी खासी ठंडक हो रही थी।

“अब तुम दोनों आराम करो। सुबह हम सरानी से मिलने जायेंगे, जो तुम्हारे सारे

सवालों का उत्तर देंगी। और कोई जरूरत पड़े तो मुझे बुला लेना, मैं सामने वाले कक्ष में हूँ। शुभरात्रि।" इतना कहकर नैमिष ने उनसे विदा ली।

"हुँह! शुभरात्रि। सारी रात्रि का कचरा कर दिया, शुभ होने को बचा ही क्या है?" नैमिष के जाते ही राकेश ने मुँह बना कर कहा। अभिजीत मुस्कुराने लगा।

"वो तो है। खैर चलो आराम करते हैं, सुबह पता करेंगे ये सब कौन हैं और यहाँ पर चल क्या रहा है?" अभिजीत ने कहा। और वो दोनों बत्तियां बुझाकर सोने चले गये।

रहस्य के गर्भ में

सुबह होने वाली थी। सूर्य ने अँधेरे को चीरते हुये अपनी लालिमा बिखेरना प्रारम्भ कर दिया था।

विशल्या अभी भी साधना में लीन थी। उसके समक्ष तक्षिका और यक्षिका प्रकट हुईं और उन्होंने हाथ जोड़कर विशल्या का अभिवादन किया,"प्रणाम महामना!"

विशल्या ने कुछ देर बाद धीरे से अपनी आँखें खोलीं और उन दोनों की ओर देखकर सिर हिलाया। दोनों अपने हाथ बांधकर सावधान की मुद्रा में खड़ी हो गयीं। तक्षिका ने कहना शुरू किया,"महामना! हमनें उस लड़के का पता लगा लिया है। वह सरानी के महल तक पहुँच गया है। और अभी भी वहीं पर है। वहाँ की सुरक्षा भेद कर उसे यहाँ लेकर आना अत्यंत दुष्कर कार्य है।"

"यानि वह फिर हाथ से निकल गया।" विशल्या ने झुँझलाकर कहा। "अब वह सब कुछ जान जायेगा और फिर यदि हम उसे किसी तरह यहाँ ले आए, तब भी वो हमारी

सहायता नहीं करेगा।" विशल्या ने परिस्थिति को समझते हुये कहा।

"तो अब हम क्या करें, महामना?" यक्षिका ने पूछा।

"हमें उसे यहाँ लाना ही है, चाहे वह हमारी सहायता करे या उससे बलपूर्वक वह कार्य कराना पड़े। मैंने इस समय की बहुत प्रतीक्षा की है और अब मैं इतनी शीघ्रता से हार नहीं मान सकती। नियति को बदलना ही होगा। जो मेरा है, मैं उसे प्राप्त करके ही रहूँगी।" विशल्या ने आँखों में दृढ़ता लाकर कहा।

"हम आपकी हर संभव सहायता करेंगे महामना। आप बस आदेश दीजिये।" तक्षिका और यक्षिका ने एक स्वर में कहा।

"मैं जानती हूँ। और ये भी जानती हूँ की वो सरानी के साथ शक्ति केंद्र जरूर जायेगा। पर उनके साथ कुछ खास लोग ही होंगे। हम उसे वहीं पर बंदी बनाएंगे। चलने की तैयारी करो।" विशल्या उठकर खड़ी हो गयी और आगे की योजना बनाने लगी।

अभिजीत ने खुद को एक बड़े से गोलाकार कक्ष के मध्य में पाया। कक्ष बहुत ही विशाल और ऊंचा था और पूरी तरह पत्थर का बना हुआ था। छत एक विशालकाय नक्काशीदार गुम्बद के रूप में थी। गुम्बद के मध्य से एक लंबा तराशा हुआ पत्थर झूमर की तरह नीचे की ओर लटका हुआ था। उसने अपने चारों तरफ देखा। पथरीली दीवारों पर फूल पत्तियां , हाथी, मोर और अन्य जलीय जीवों के चित्र उकेरे हुये थे। उसने पत्थरों पर इतनी गहरी नक्काशी पहली बार देखी थी। वो आश्चर्यचकित था। उस कक्ष में आने जाने के लिये केवल एक छोटा -सा दरवाजा था। और बाकी हिस्से में छोटी -छोटी खिड़कियां थीं।

कक्ष के मध्य में ठीक उसके सामने एक सप्तभुजाकार स्तम्भ था जो कि उसके सीने तक ऊँचा था। उस पर एक नारियल के आकार का सप्तकोणीय नीला स्फटिक हवा में लटका हुआ था, जो अपनी धुरी पर धीरे- धीरे घूम रहा था। स्फटिक से निकली रोशनी चारों ओर फ़ैल रही थी। अभिजीत उसे देखकर खुद को रोक नहीं पाया और उसका हाथ अनायास ही उस स्फटिक को छूने के लिये बढ़ा।

"रुक जाओ! उसे छूना वर्जित है।" तभी अचानक उसके पीछे से आई एक तेज़ आवाज ने उसे रोक लिया। अभिजीत घबराकर पीछे हट गया। वह अपनी जगह पर घूमा

और फिर से आश्चर्यचकित हो गया। पर इस बार आश्चर्य की अनुभूति सुखद थी। उसके सामने वही लड़की खड़ी थी। जिसे उसने अपने पिछले सपने में देखा था। वो लड़की उसके पास आई और बोली,"ये हमारे लिये विशेष महत्व रखता है।"

"पर ये है क्या? और आप हैं कौन?" अभिजीत ने पूछा।

"तुम्हें अपने सवालों के जवाब जल्दी ही मिलेंगे।" इतना कहते ही वहाँ हवा के झोंके चलने शुरू हो गये और स्फटिक के ऊपर ऊर्जा का एक नीला द्वार बन गया। इससे पहले कि अभिजीत कुछ समझ पाता, वो लड़की हवा में उड़ी और सीधी उस ऊर्जा द्वार में जाकर गायब हो गई।

"नहीं! रुक जाओ।" अभिजीत चिल्लाते हुये आगे बढ़ा जिससे उसके पीछे जा सके लेकिन स्तम्भ के पास पहुँचते ही उसे एक तेज़ झटका लगा और वह पीछे की ओर उछल गया।

एक झटके के साथ अभिजीत की आँख खुल गई। उसने खिड़की से बाहर देखा। सुबह हो चुकी थी और सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी। उसके बगल में राकेश करवट लिये सो रहा था। उसने अपने सपने में आई लड़की के बारे में सोचा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे एकाएक अजीब सपने आने क्यों शुरू को गये हैं? और इनका आखिर क्या मतलब है। एक सपना सच हो चुका था और वो उसी महल में था। तो क्या ये सपना भी सच होगा? अभिजीत इसी कशमकश में उलझा हुआ था कि दरवाजे पर हुई दस्तक ने उसका ध्यान खींचा। राकेश भी दस्तक सुनते ही आँखें मलता हुआ उठ बैठा और ऊँघने लगा।

अभिजीत ने उठकर दरवाजा खोला। सामने नैमिष था। उसने उन्हें तैयार हो जाने के लिये कहा और चला गया। अभिजीत और राकेश नहा धोकर तैयार हुये। चाय- नाश्ता कमरे में ही आ गया था। थोड़ी देर बाद नैमिष उन्हें लेने आया। और वो सरानी से मिलने उनके कक्ष की ओर चल दिये।

"तुम्हें ठीक से नींद आई न?" नैमिष ने रास्ते में पूछा।

"हाँ, बस तुमने थोड़ा जल्दी उठा दिया।" राकेश ने कहा और मुस्कुरा दिया। नैमिष ने अभिजीत की ओर देखा जो कुछ सोच रहा था और पूछा,"अभिजीत तुम ठीक हो न?"

"हाँ हाँ मैं ठीक हूँ। बस एक सपना देखा था, बस उसी के बारे में सोच रहा था।" अभिजीत ने कुछ सोचते हुये ही कहा।

नैमिष ने उसे ध्यान से देखा, पर कुछ कहा नहीं। थोड़ी ही देर में वो लोग सीढ़ियों के पास पहुँच गये। नैमिष ने एक व्यक्ति को इशारा किया। उसके पास आने पर उसने उससे कुछ कहा और फिर राकेश की ओर पलटा ,"राकेश! तुम इसके साथ जाओ। ये

तुम्हें शैलेन्द्र के कमरे तक ले जायेगा। तुम थोड़ी देर वहां उसके पास रुक कर उसका ध्यान रखो, तब तक हम सरानी से मिलकर आते है।”

“पर क्यों? मुझे भी उनसे मिलना है। मैं भी तो जानूँ कि ये सब क्या झमेला है?” राकेश ने कहा।

“क्षमा करना। पर तुम उनसे नहीं मिल सकते। केवल अभिजीत को ही उनसे मिलने की अनुमति है। तुम लोग यहाँ पर भी इसलिये हो, क्योंकि अभिजीत के साथ हो।” नैमिष ने हाथ जोड़कर कहा।

“ओ हो ...भाई अभि! तुम तो मसीहा बन गये। थोड़ी बहुत कृपा हम पे भी कर दो।” राकेश ने जोर से मसखरी के अंदाज में हंसकर कहा। नैमिष और अभिजीत भी हँसने लगे।

राकेश ने फिर आगे कहा,”कोई बात नहीं मैं तैयार हूँ, पर बाद में मुझे सब बता देना। कम से कम कुछ किस्सा सुनाने को तो हो जायेगा। तुम जाओ , मैं शैलेन्द्र का ध्यान रखूँगा।”

अभिजीत ने मुस्कुरा कर सिर हिलाया और फिर राकेश चला गया। नैमिष ने चलने का इशारा किया। दोनों सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर बने उस इकलौते दरवाजे के पास पहुँचे और उसे खोलकर अंदर प्रवेश कर गये।

दरवाजा एक गलियारे में खुलता था। गलियारे की छत पर छोटी- छोटी बत्तियों से रौशनी हो रही थी। गलियारे को पार करके वो एक हॉल में पहुंचे। हॉल में तीन दरवाजे थे। नैमिष बाएं दरवाजे की ओर बढ़ा और उसे खोलकर अभिजीत को अंदर जाने का इशारा किया। अभिजीत ने एक गहरी साँस ली और अंदर प्रवेश किया।

अंदर प्रवेश करते ही उसकी साँसे थम गयी। उसके सामने वही लड़की थी, जो उसने अपने सपने में देखी थी और एक और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली एक स्त्री खड़ी हुई थी, जो उस लड़की से कुछ कह रही थी। नैमिष और अभिजीत के आने की आहट पाकर वो दोनों उनकी ओर मुड़ी। अभिजीत ने ध्यान से उस लड़की को देखा, जो एकटक उसकी ओर ही देख रही थी। वो बिल्कुल वैसी ही थी, जैसा उसने सपने में उसको देखा था। उसने अपने बाल एक खुली चोटी के रूप में पीछे बांधे हुये थे। वही हल्की कत्थई आँखें, वही नाक के पास तिल, वही होंठ और वही चेहरा। उसका कद अभिजीत से थोड़ा छोटा था। उस लड़की और उस स्त्री की वेशभूषा बिल्कुल विशल्या की तरह थी। लड़की के कपड़े गहरे नीले और उस स्त्री के कपड़े गहरे हरे रंग के थे।

अभिजीत ने अब तक सपने में ही उस लड़की को देखा था। लेकिन उसे सामने देखकर उसे एक विचित्र एहसास हुआ। उसके हृदय में एक टीस सी उठी और वो मंत्रमुग्ध सा उसकी ओर धीरे से बढ़ा। वो कुछ कहने ही वाला था कि एक पतले और प्रभावशाली स्वर ने उसका सम्मोहन तोड़ दिया।

“अंततः तुमसे भेंट हो ही गयी।” स्वर उस स्त्री का था। अभिजीत एक झटके से रुक गया। उसने उस स्त्री की ओर देखा और फिर से थोड़ा अचंभित हो गया। उसने ध्यान दिया की उस स्त्री की कदकाठी और चेहरा काफी कुछ विशल्या से मिलता था। उसका चेहरा लंबा था और हरे रंग की छोटी- छोटी आँखें थी। उसके बाल छोटे और खुले हुये थे और कंधो तक ही आ रहे थे। उसके मुस्कुराने से गालों पे छोटे- छोटे गड्ढे पड़ रहे थे। माथे पर भी सभी के जैसा खड़ी रेखा और चक्र वाला चिन्ह था।

“प्रणाम सरानी!” नैमिष की आवाज से अभिजीत का ध्यान फिर से टूटा। उसने देखा कि नैमिष अपने दायें हाथ को आगे सीने पर जोड़ने की मुद्रा में सीधा रखकर आगे की ओर थोड़ा झुका हुआ है और उसका बायाँ हाथ पीठ के पीछे कमर की सीध में मुड़ा हुआ है। अभिजीत ने भी वैसी ही मुद्रा बनाकर प्रणाम करना चाहा।

“इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।” सरानी ने अपना हाथ उठाकर मुस्कुरा कर रुकने के लिये कहा।

अभिजीत रुक गया और सीधा खड़ा हो गया। सरानी ने उस लड़की की ओर देख कर धीमे से सिर हिलाया और वो लड़की मुड़कर जाने लगी। अभिजीत ने उसकी ओर देखा। वो उसके पास से निकली।

उसने एक बार सीधे अभिजीत की आँखों में देखा और चली गयी। उसके जाने के बाद सरानी ने उन्हें बैठने का इशारा किया और वो पास ही रखी हुई कुर्सियों पर बैठ गये।

“मेरे विचार में तुम्हारे मन में काफी सवाल होंगे।” सरानी ने कहा।

“हाँ, और इतने सारे है कि मेरी समझ में नहीं आ रहा कहाँ से शुरू करूँ?” अभिजीत ने उलझन में पड़ते हुये कहा।

“कोई जल्दी मत करो। आराम से पूछो जो जानना चाहते हो?” सरानी ने अभिजीत को समय देते हुये कहा।

“सबसे पहले मैं उस लड़की के बारे में जानना चाहूँगा, जो अभी यहाँ से गयी है?” अभिजीत ने तपाक से पूछा। सरानी और नैमिष ने पहले एक दूसरे को देखा और फिर अभिजीत की ओर।

“माफ़ कीजिये, मेरा कोई गलत मतलब नहीं था। मैंने कल से उसे दो बार सपने में देखा है, इसलिये पूछ रहा हूँ।” अभिजीत ने बात को सँभालते हुये कहा। और उन्हें अपने दोनों सपनों के बारे में और अपने उस अजीब एहसास के बारे में भी विस्तार से बताया। सरानी और नैमिष ने आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखा।

“ये बहुत ही विचित्र बात है कि तुम्हें ये स्वप्न आ रहे हैं। मैंने जितना सोचा था, तुममें उससे भी ज्यादा विशेषतायें हैं। पर तुम्हें ये सब समझ आ जायेगा, जब तुम जान जाओगे कि तुम कौन हो? पर इस प्रश्न का उत्तर मैं तुम्हें थोड़ी देर बाद दूंगी।” सरानी ने अभिजीत

को समझाते हुये कहा।

“उस लड़की का नाम इलाक्षी है। वो और नैमिष मेरे मुख्य सहायक है।” सरानी ने आगे कहा। अभिजीत ने उस लड़की के बारे में और सवाल न करना ही उचित समझा।

“आप लोग कौन हैं? नैमिष बार- बार ’हमारे’ शब्द का प्रयोग कर रहा था, तो मैं इतना तो समझ गया था कि उसके जैसे और लोग भी हैं।” अभिजीत ने पूछा।

“तुम हमें 'प्रतिहारी' कह सकते हो।” सरानी ने मुस्कुरा कर कहा।

“प्रतिहारी? लेकिन इसका अर्थ क्या है? क्या ये कोई जाति है?” अभिजीत ने असमन्जस में पड़ते हुये पूछा।

“हाँ। ये हमारी जाति का नाम है। ’प्रतिहारी’ का अर्थ है रक्षक। हमारी जाति सदियों से इस भूमि के निवासियों की रक्षा करती आ रही है।”

“पर आप लोग है कौन? मतलब आपकी उत्पत्ति कैसे हुई और ये शक्तियाँ आप लोगों के पास कहाँ से आईं?” अभिजीत ने पूछा। वह अभी भी उलझा हुआ था।

“मैं तुम्हें प्रारम्भ से बताती हूँ।” सरानी ने कहना आरम्भ किया।

“आज से हजारों वर्ष पूर्व इस धरती पर भगवान शिव के शिष्य सात महान महर्षि हुये थे, जिन्हें तुम सप्तर्षि के नाम से जानते हो।”

“हाँ मैं जानता हूँ ,मैंने उनके बारे में पढ़ा है।” अभिजीत ने याद करते हुये कहा।

सरानी ने धीमे से सिर हिलाया और आगे कहा, “ये सातों महर्षि इस भूमि पर ज्ञान और विकास को सभी प्राणियों तक पहुँचाने के लिये कार्य करते थे। उस समय असुरों का आतंक भी बहुत था। बड़े- बड़े असुरों के संहार के लिये भगवान अवतरित होते थे। परन्तु कुछ छोटे- छोटे दैत्य और असुर छुपकर राज्यों और गांवों में अत्याचार करते रहते थे। इन्हीं से निपटने के लिये इन सप्तऋषियों ने युद्धकला में निपुण अपने कुछ चुने हुये शिष्यों को इकठ्ठा कर, उन्हें शक्तियाँ प्रदान की और इन असुरों के संहार का प्रशिक्षण दिया।

उन्होंने ही हमारी जाति को 'प्रतिहारी' नाम दिया और इसके कुछ नियम बनाये। उन नियमों के अनुसार हमें किसी भी आपात स्थिति में लोगों की सहायता करनी होती थी और विशेष परिस्थितियों में यदि किसी राज्य पर संकट आये तो राजा के आह्वान पर उनकी सहायता करनी होती थी। धीरे- धीरे हमारी संख्या बढ़ती गई। और हमारा कार्यक्षेत्र भी बढ़ता चला गया। कार्यक्षेत्र बढ़ने के साथ ही हम भी कई समूहों में बँट गये। और सारी पृथ्वी पर अलग- अलग स्थानों पर अपने- अपने शक्ति केंद्रों के पास बस गये।”

“ये शक्ति केंद्र क्या हैं?” अभिजीत ने पूछा। उसे अब इसमें रुचि उत्पन्न हो गयी थी।

“शक्ति केंद्र हमारी शक्तियों के स्रोत हैं। हर शक्ति केंद्र में एक दिव्य स्फटिक स्थापित है, जिससे हमें शक्तियाँ प्राप्त होती है। जैसा कि तुमने अपने सपने में देखा था। इसीलिये हमे थोड़ा आश्चर्य हुआ था कि तुम्हें वो क्यों दिखाई दिया था?”

“बीच में रोकने के लिये क्षमा कीजिये, पर क्या बिना शक्ति केंद्र के आपकी शक्तियाँ समाप्त हो जाएँगी?” अभिजीत ने कुछ सोचते हुये पूछा।

सरानी मुस्कुरा दी। और फिर उन्होंने हाथ के इशारे से मना करते हुये कहा, “अरे नहीं! ऐसा नहीं है। शक्तियां हमारे अंदर ही विद्यमान है। शक्ति केंद्र केवल हमारी शक्तियों को नियंत्रित एवम् केंद्रित करते हैं और हमें अपनें उद्देश्य को पूरा करने के लिये अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं।” अभिजीत ने मुस्कुराकर हामी भरी और सरानी से आगे बताने के लिये कहा।

सरानी ने अपनी पिछली बात पूरी करते हुये कहा,”इसके अतिरिक्त हमें सीधे तौर पर किसी से भी संपर्क की मनाही थी। हमें आदेश और कार्य सीधे सप्तऋषियों से मानसिक संपर्क द्वारा प्राप्त होते थे, जब कोई राज्य संकट आने पर सुरक्षा की मांग करता था। सुरक्षा की दृष्टि से हम अन्य पृथ्वीवासियों से छिपकर इस महल में जीवन यापन करते थे। हमारा कार्यक्षेत्र सारी पृथ्वी पर था, जिसके कारण प्रतिहारियों की संख्या अधिक थी, इसीलिये हमारी जाति के लोग आपस में ही विवाह सम्बन्ध करते थे। हम लोगों का अन्य सामान्य लोगों से विवाह भी प्रतिबंधित था, क्योंकि हमारी शक्तियाँ वंशानुगत थीं और हमारी संतानें उन सभी शक्तियों के साथ जन्म लेती थी। हमें बस उन्हें उन शक्तियों के उपयोग के लिये प्रशिक्षित करना होता था। और सामान्य लोगों से विवाह करने में हमारी शक्तियों का दुरूपयोग होने अथवा उन सन्तानों पर दुष्परिणाम होने की सम्भावना थी।”

“फिर से रोकने के लिये क्षमा चाहता हूँ। एक बात समझ नहीं आई, यदि आप इतने समय से यहाँ हैं तो आपकी संख्या इतनी कम क्यों है? मैं जब से इस महल में आया हूँ, मुझे बहुत ही कम लोग दिखाई दिये हैं।” अभिजीत ने फिर से टोककर पूछा।

“तुम्हें बार- बार क्षमा मांगने की आवशयकता नहीं है। मैं जानती हूँ, तुम्हारे मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं।” सरानी ने मुस्कुराकर कहा।

“हमारी संख्या कम होने का कारण हमारी आयु है। शक्ति केंद्र में स्थापित स्फटिक हमें हजारों वर्षों की आयु भी प्रदान करता है। जिसके कारण हमें अपनी संख्या बढ़ने की आवश्यकता नहीं हुई। धीरे -धीरे समय के साथ असुरों का विनाश हो गया और बचे हुये असुर या तो पाताल लोक चले गये या फिर छुपकर जीवन -यापन करने लगे। हमारा कार्य भी कम हो गया और हमें भी छुपकर रहना पड़ा, क्योंकि आधुनिक लोग हमारी शक्तियों के कारण हमें ही असुर मानकर अपना शत्रु समझने लगे।”

“किन्तु जब असुर अब अस्तित्व में नहीं हैं ,तब आप लोग अब किसकी रक्षा करते हैं?” अभिजीत ने पूछा।

“किसने कहा असुर अब आस्तित्व में नहीं हैं।” सरानी ने भौंहें उठाकर पूछा। सरानी की बात समझते ही अभिजीत का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

“हाँ अभिजीत! असुर अब भी अस्तित्व में हैं।” अभिजीत से मुड़कर नैमिष की तरफ देखा, जिसने बड़ी देर बाद बातचीत में हिस्सा लिया था। “परन्तु कुछ असुर अब मानवों के बीच में उनके ही रूप में रह रहे हैं और अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अब आतंकवाद और अराजकता का रुप ले लिया है। हमनें पिछले सैंकड़ों वर्षों में न जाने कितनी बार इस क्षेत्र की रक्षा की है और बड़े बड़े युद्धों को टाला है। कई युद्ध तो मैंने स्वयं लड़े हैं और अभी भी हम छुपकर उनको रोकने का कार्य करते रहते हैं।” नैमिष ने अपनी बात रखते हुये कहा। अभिजीत सरानी की तरफ मुड़ा। उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

“तो क्या विशल्या भी एक असुर है?” अभिजीत ने मन में उठे संदेह के वशीभूत होकर पूछा।

“नहीं! विशल्या हममें से ही एक है। वह भी एक प्रतिहारी है। पर उस पर हम थोड़ी देर बाद आएंगे। क्या तुम कुछ और पूछना चाहते हो?” सरानी ने बात को फ़िलहाल टालते हुये कहा।

“आप लोग ये जादू कैसे करते हैं?” अभिजीत ने उत्सुक होकर पूछा।

सरानी मुस्कुराई और कहा,”हम इसे जादू नहीं कहते। जादू का मतलब है, मन्त्र, पराविद्या या कर्मकाण्ड के प्रयोग से दुनिया के सामान्य प्राकृतिक और वैज्ञानिक नियमों को असामान्य रूप से बदलना या उनपर नियंत्रण करना, अथवा ऐसा करने की कोशिश या ढ़ोंग करना। ज्यादातर लोग जादू को काल्पनिक और झूठ मानते हैं, क्योंकि उनके मुताबिक विज्ञान के नियम-कानूनों को बदलना नामुमकिन है। कुछ लोग, जो जादू को सच मानते भी हैं, इसे अधर्म और पाप मानते हैं। अधिकांश लोग धार्मिक कर्मकांड और मन्त्रों को जादू नहीं मानते, बल्कि उनको 'प्रार्थना और ईश्वर की शक्ति' मानते हैं। चमत्कार, इन्द्रजाल, अभिचार, टोना या तन्त्र-मन्त्र जैसे शब्द भी जादू कि श्रेणी में आते हैं।”

“तो फिर आपकी शक्तियाँ क्या कहलाती हैं?” अभिजीत ने और अधिक उत्सुकता से पूछा।

“हम इसे 'तंत्र' कहते हैं। तन्त्र का शाब्दिक उद्भव इस प्रकार माना जाता है - “तनोति त्रायति तन्त्र”। जिससे अभिप्राय है – तनना, विस्तार, फैलाव इस प्रकार इससे त्राण होना ’तन्त्र’ है। हिन्दू, बौद्ध तथा जैन दर्शनों में तन्त्र परम्परायें मिलती हैं। यहाँ पर तन्त्र साधना से अभिप्राय “गुह्य या गूढ़ साधनाओं” से किया जाता रहा है।” सरानी ने कहना शुरू किया तो अभिजीत ने न समझ पाने की मुद्रा में मुँह बनाया।

ये देखकर सरानी मुस्कुरा दी और आगे कहा,”इसको तुम इस तरह समझ सकते हो। व्याकरण शास्त्र के अनुसार 'तन्त्र' शब्द ‘तन्’ धातु से बना है जिसका अर्थ है 'विस्तार'। शैव सिद्धान्त के ‘कायिक आगम’ में इसका अर्थ किया गया है, 'तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम्

अनेन्, इति तन्त्रम् '(वह शास्त्र जिसके द्वारा ज्ञान का विस्तार किया जाता है)। तन्त्र की निरुक्ति 'तन' (विस्तार करना) और 'त्रै' (रक्षा करना)। इसका तात्पर्य यह है कि तन्त्र अपने समग्र अर्थ में ज्ञान का विस्तार करने के साथ उस पर आचरण करने वालों का त्राण (रक्षा) भी करता है।"

"शैव सिद्धांत...?? तो क्या इसका वर्णन हमारे वेद पुराणों में भी है?" अभिजीत ने चौंककर पूछा।

"हाँ, वेदों और अन्य आगमों में इसका वर्णन है।" सरानी ने उत्तर दिया।

"तो आप लोग शक्तियों का प्रयोग तंत्र के द्वारा करते हैं?" अभिजीत ने पूछा।

"हाँ, हम अपनी शक्तियों का प्रयोग तंत्र सिद्धांतों में वर्णित मन्त्रों के रूप में करते हैं। इसके लिये हमें दीक्षित किया जाता है। एक बार मन्त्रों की सिद्धि हो जाने पर हमें इनकी शक्ति का प्रयोग करने के लिये इन्हें बार -बार बोलना नहीं पड़ता। केवल सोचने मात्र से ही हम मन्त्र शक्तियों को हाथों द्वारा प्रयोग में ले आते हैं।" सरानी ने समझाया।

"तो आप लोगों ने मुझे अपनी शक्तियों से ही ढूँढा। लेकिन विशल्या तो कुछ औरा जैसे शब्द की बात कर रही थी। ये 'औरा' आखिर है क्या? "अभिजीत ने आगे पूछा।

"वो सही थी। हमनें भी तुम्हें तुम्हारे औरा से ही ढूंढा था। तुमने ईश्वर और देवी-देवताओं की मूर्ति या चित्र देखा होगा। इन मूर्ति या चित्र में जो भी देव हैं, उनके मस्तिष्क के बराबर पीछे की ओर सप्तरंगीय ऊर्जा तरंगे निष्कासित होती रहती है, एक गोलीय चक्र सा प्रतिबिंब रहता है, वही उनका 'प्रभामण्डल' या 'आभामण्डल' या 'औरा चक्र' होता है। यह आभामण्डल जीव मात्र- मनुष्यओं, जीव-जंतुओं, पशुओं, पेड़- पौधों, पदार्थों के इर्द-गिर्द एक प्रकाश पुंज के रुप में रहता है। प्रत्येक मनुष्य का अपना एक अलग 'आभामण्डल' या 'औरा' होता है। जिसके कारण से ही दूसरे अन्य मनुष्य उससे प्रभावित होते हैं। यह आभा मनुष्य के संपूर्ण शरीर से सतरंगी किरणों के रूप में अंडाकार रूप में उत्सर्जित होती रहती है। वास्तव में यह प्राणी के शरीर से निकलने वाली प्रज्वलित शक्ति किरणें हैं, जिसकी ऊर्जा हर व्यक्ति में रहती है। इस प्रभामंडल का संचालन हमारे शरीर के सात चक्र करते हैं, और ये चक्र हमारी मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक इत्यादि कई कड़ियों से जुड़कर 'औरा' के रूप में हमारे वर्तमान समय के दर्पण को तैयार करते हैं।" सरानी ने स्पष्ट करते हुये कहा।

"ठीक है। मैं समझ गया। पर आपने मेरा 'औरा' ही क्यों ढूँढा?"
अभिजीत ने पूछा।

"जैसा कि हमनें पहले भी कहा है, तुम में कुछ विशेष बात है। सच तो यह है कि हमनें तुम्हें नहीं ढूँढा। सबसे पहले तुम्हारे 'औरा' के संकेत शक्ति केंद्र में स्थापित स्फटिक ने तुम्हारे यहाँ आते ही ग्रहण किए। वे संकेत शक्ति केंद्र द्वारा पहले विशल्या को प्राप्त हुये

और फिर मुझे। इसीलिये विशल्या तुम तक पहले पहुँची।" सरानी ने सारी स्थिति स्पष्ट करते हुये कहा।

"पर शक्ति केंद्र ने विशल्या को संकेत क्यों भेजे? वो तो आपकी शत्रु है।" अभिजीत ने फिर कुछ सोचते हुये प्रश्न किया।

"नहीं! पहली बात तो यह की विशल्या हमारी शत्रु नहीं है। जैसा मैंने बताया था, वह हम में से ही एक है। और तुम्हारे प्रश्न का उत्तर यह है कि प्रत्येक शक्ति केंद्र अपने क्षेत्र में आने वाले हर नए प्रतिहारी या असुर की सूचना अपने संरक्षक को देता है। तभी विशल्या को संकेत पहले प्राप्त हुये।" सरानी से अभिजीत को समझाया।

"यानि विशल्या इस शक्ति केंद्र की संरक्षक है? क्या वो यहीं है?" अभिजीत ने उत्तेजित होकर पूछा।

"नहीं! विशल्या यहाँ की पूर्व संरक्षक थी। एक घटना के पश्चात उसे इस पद से और प्रतिहारियों की जाति से निष्कासित कर दिया गया था। अब वो यहाँ नहीं रहती।"

"तो क्या अब आप इस शक्ति केंद्र की संरक्षक हैं?"

"हाँ!" सरानी ने सर हिलाकर उत्तर दिया।

"क्षमा कीजियेगा। पर यदि ऐसा है, तो नैमिष आपको आपका नाम लेकर कैसे बुला सकता है? आप तो इन लोगों की मुखिया हैं न?" अभिजीत ने नैमिष की ओर इशारा करके थोड़ा असंगत होते हुये पूछा। नैमिष इस बात पर मुस्कुरा दिया।

"ये मेरा नाम नहीं है, मेरी उपाधि है, जो शक्ति केंद्रों के प्रत्येक संरक्षक को मिलती है। सरानी शब्द का ही अर्थ 'संरक्षक' है।" सरानी ने समझाकर कहा।

"तो फिर आपका असली नाम क्या है?" अभिजीत ने थोड़ा असहज होकर पूछा।

"मेरा नाम विशाला है।" सरानी के यह कहते ही अभिजीत आश्चर्य से तन गया। "तुम सही अनुमान लगा रहे हो। विशल्या से मेरा गहरा सम्बन्ध है। वो मेरी बड़ी बहन है।"

विशल्या

अभिजीत अभी तक आश्चर्यचकित था। उसके सामने हर पल नए रहस्य खुलते जा रहे थे। सरानी समझ गयी कि अब सब कुछ बताने का वक़्त आ गया है।

“अभिजीत! मैं जानती हूँ कि तुम विशल्या के बारे में जानने के लिये उत्सुक हो। किन्तु अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने का समय आ गया है। सुनो!” सरानी ने कहना प्रारम्भ किया। अभिजीत उत्सुकता में थोडा आगे की ओर झुककर बैठ गया।

“ये उस समय की बात है, जब सप्तऋषियों ने प्रतिहारियों की स्थापना की थी। विशल्या के माता- पिता उनके प्रारम्भिक शिष्यों में से एक थे। समय के साथ प्रतिहारियों का प्रभाव बढ़ता गया। जैसा की मैंने तुम्हें बताया था कि प्रतिहारी अपनी ही जाति में विवाह कर सकते थे, विशल्या के माता -पिता अपनी जाति के प्रथम प्रतिहारी थे, जिनके मध्य विवाह हुआ था। उनके संयोग से विशल्या का जन्म हुआ। उस पर सप्तऋषियों का आशीर्वाद था। अतः वो जन्म से ही अत्यंत प्रतिभावान थी। उसने अपनी समस्त शक्तियों पर शीघ्रता से प्रवीणता प्राप्त कर ली और सभी को अचंभित कर दिया। वो प्रत्येक कौशल में निपुण थी। आयु बढ़ने के साथ -साथ उसकी शक्तियां भी बढ़ती गयी और उसने कई नई तन्त्र शक्तियों का भी सृजन किया।

विशल्या अब तैयार थी और उसे प्रतिहारी अभियानों में साथ ले जाया जाने लगा। उसका रण कौशल अत्यंत उत्कृष्ट था। असुर उससे भय खाते थे। सप्तऋषियों ने उसकी कौशल और प्रतिभा को देखकर उसे शक्ति केंद्र का संरक्षक नियुक्त करने का निश्चय किया। ये वही समय था, जब प्रतिहारियों को समूहों में बांटकर विश्व के कोने- कोने में स्थापित शक्ति केंद्रों में भेजा जा रहा था। सप्तऋषियों ने इस क्षेत्र में भी एक शक्ति केंद्र स्थापित किया और इसके संरक्षण के लिये विशल्या को चुना।”

“विश्व में कुल कितने शक्ति केंद्रों की स्थापना की गयी थी?” अभिजीत ने बीच में पूछा।

“ऐसे कुल सात शक्ति केंद्रों की स्थापना की गयी थी।” सरानी ने उत्तर दिया।

"मैं उस समय बाल्यावस्था में थी। वो मुझे भी कभी -कभी युद्धकला का और तंत्र शक्तियों के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया करती थी। विशल्या ने अपने शक्ति केंद्र का संरक्षण भी अपनी पूरी क्षमता से किया। उसने धीरे- धीरे अपने क्षेत्र का विस्तार किया और सम्पूर्ण भारतवर्ष को सुरक्षित कर दिया। सप्तऋषि विशल्या के कार्य से अत्यंत प्रसन्न थे। अतः उन्होंने विशल्या को नियमों में कुछ शिथिलता दे रखी थी। जब सप्तऋषियों के जाने का समय आया तो उन्होंने अपनी अपनी शक्तियों का एक अंश प्रत्येक शक्ति केंद्र में स्थापित स्फटिक में समाहित कर दिया, जिससे कि उनके जाने के पश्चात भी हमें निर्देशन मिलता रहे। सप्तऋषियों के जाने के पश्चात प्रत्येक शक्ति केन्द्र के संरक्षक अपने अपने समूह का नेतृत्व करने लगे, अब राज्यों की सुरक्षा के लिये संकेत हमें स्फटिक द्वारा सीधे प्राप्त होने लगे और हमारा कार्य पूर्ववत जारी रहा।

विशल्या मानवीय गुणों से भी परिपूर्ण थी और वह सामान्य नागरिकों की, वेश बदल कर यथासम्भव सहायता भी करती थी। सौ वर्ष पूर्व एक बार ऐसे ही किसी अभियान के पश्चात् वो लोगो की सहायता के लिये रुकी हुई थी। अपने साथियों को उसने वापस भेज दिया था। वापस लौटते समय वन में अचानक एक असुर ने मानव रूप में कुछ दस्युओं के साथ मिलकर दोबारा विशल्या पर आक्रमण कर दिया। चूँकि विशल्या ऐसे छोटे और सीधे आक्रमणों से निपटने में सक्षम थी, असुर ने एक चाल चली। उसने दस्युओं को आगे भेज दिया और स्वयं घात लगाकर पीछे से वार करने के लिये छिप गया।

दस्युओं ने विशल्या पर आक्रमण कर दिया। चूँकि वे सामान्य मानव ही थे, विशल्या अकेले ही तलवार से उनका मुकाबला कर रही थी। उस असुर ने मौका देख कर वार करना ही चाहा कि अचानक एक व्यक्ति उसके और विशल्या के बीच में आ गया। वह एक कुशल योद्धा था और सहायता के लिये आ गया था। वह छोटा सा युद्ध शीघ्रता से समाप्त हो गया। अब उस असुर के पास कोई चारा नहीं था। वह खुलकर सामने आ गया और उसने उन दोनों पर वार कर दिया। उसे सबसे पहले विशल्या ने देखा और तुरंत ही उस योद्धा व्यक्ति को बचाने के लिये उसे धक्का देकर अपनी शक्तियों से असुर के वार को रोका। योद्धा व्यक्ति आश्चर्यचकित होकर दूर जा गिरा। एक और युद्ध शुरु हो चूका था जिसमें वह मात्र एक मूक दर्शक था।

उस असुर ने अपना नाम "दुराक्ष" बताया जो कि पाताल लोक से आया था। विशल्या उसके उद्देश्यों को पूरा करने में सबसे बड़ी रूकावट बनी हुई थी। इसीलिये वह उसका विनाश चाहता था। उन्होंने एक दूसरे पर तांत्रिक वार करने शुरू कर दिये। विशल्या ने पहले भी ऐसे कई असुरों का सामना किया था परन्तु ये असुर कुछ अधिक ही शक्तिशाली था। दोनों का युद्ध अंतहीन नजर आ रहा था।

वो योद्धा व्यक्ति, जिसका नाम "विरोचन" था, आश्चर्यचकित होकर यह सब देख

रहा था अब तक संभल गया था। वह एक योद्धा था और ऐसे अवसर पर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठ सकता था। एक साधारण मानव होते हुये भी उसने दुराक्ष पर आक्रमण कर दिया। दुराक्ष का पूरा ध्यान पहले से ही विशल्या पर था जो उसे परास्त करने के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ प्रहार कर रही थी। दुराक्ष ने अपने एक हाथ से तांत्रिक ढाल बनाकर विरोचन की तलवार के वार को रोकने का प्रयास किया, जिससे उसका ध्यान थोड़ा सा भंग हुआ। इतना अवसर विशल्या के लिये पर्याप्त था। उसने अपनी पूरी शक्ति के साथ दुराक्ष पर वार किया और वह घायल होकर दूर जा गिरा।

वह धीरे से उठा और दोबारा वापस आने की धमकी देकर वहां से चला गया। विशल्या भी थकी और थोड़ी घायल थी। उसने दुराक्ष के पीछे जाने का प्रयास किया परन्तु मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

जब विशल्या की चेतना वापस आई तो उसने स्वयं को एक छोटे से निवास में पाया। विरोचन ने अपना परिचय देकर बताया की वह उसका निवास है और वही उसे लेकर आया है। विशल्या ने उसे अपना परिचय दिया और प्राणरक्षा के लिये धन्यवाद दिया और वहां से वापस आ गयी। विरोचन ने विश्वास दिलाया कि वह यह बात गुप्त रखेगा।

परंतु एहसास का बीज बोया जा चुका था और प्रेम पनपने लगा था और प्रेम का पौधा एक ऐसी बेल की तरह होता है, जो लताओं के मध्य अपना रास्ता स्वयं बनाती है। विशल्या को विरोचन से प्रेम हो गया था। विरोचन को भी विशल्या से प्रेम था और दोनों ने विवाह करने का निश्चय किया। पर प्रतिहारियों को यह स्वीकार्य नही था। शक्ति केंद्रों के सभी संरक्षकों एवं हमारे शक्ति केंद्र के लोगों ने उसका विरोध किया। प्रेम ऐसी धारा होती है जो सारे बंधन तोड़ देती है और इसी प्रकार समस्त विरोधों की परवाह न करते हुये विशल्या ने विरोचन से विवाह कर लिया। इसी कारण विशल्या को पदच्युत करके उसे प्रतिहारियों में से निष्कासित कर दिया गया। परन्तु जाने से पूर्व विशल्या ने मुझे शक्ति केंद्र का संरक्षक बनाने का प्रस्ताव रखा और सर्वसम्मति से मुझे इस शक्ति केन्द्र का संरक्षक नियुक्त किया गया।

प्रतिहारियों ने उन्हें त्याग दिया था परन्तु उन्होंने अपना कर्तव्य नहीं त्यागा। वो अभी भी असुरों के विरुद्ध गुप्त रुप में मेरी सहायता करती थी और मेरे संपर्क में रहती थी। वो विरोचन के साथ एक सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी। विरोचन सुंदरगढ़ के एक धनी परिवार से सम्बन्ध रखता था। उसके पिता व्यापारी थे, परन्तु उन्होंने विरोचन को युद्धकला की शिक्षा भी दिलाई। माता-पिता के देहांत के पश्चात् विरोचन ने अकेले ही व्यापार संभाला था। जब वह विशल्या से मिला था, तब वह दूसरे नगर से व्यापार करके ही लौट रहा था और अब उनके सुखी जीवन में एक और नया अध्याय जुड़ने वाला था, क्योंकि विशल्या गर्भवती थी।

कुछ समय बाद विशल्या ने एक पुत्र को जन्म दिया। उनका परिवार पूर्ण हो गया था। परन्तु शायद नियति को ये स्वीकार्य नहीं था। दुराक्ष ने विशल्या की प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि बनाये रखी हुई थी। विशल्या को भले ही निष्कासित कर दिया गया था परन्तु वो अभी भी दुराक्ष के लिये संकट बन रही थी। किन्तु विशल्या अब अकेली थी। पिछली बार विरोचन के अप्रत्याशित आक्रमण के कारण दुराक्ष असफल हो गया था, परन्तु इस बार वो सचेत था और प्रतिहारियों से विशल्या कोई सहायता नहीं मिलने वाली थी।

दुराक्ष के लिये ये एक स्वर्णिम अवसर था और ये अवसर उसे शीघ्र ही मिल गया। एक दिन विशल्या का परिवार किसी कार्य से दूसरे नगर जा रहा था। वे भोजन और लघु विश्राम के लिये एक नदी के तट पर रुके हुये थे। तभी दुराक्ष ने कुछ दस्युओं के साथ पुनः उन पर आक्रमण कर दिया। विशल्या संकट में थी, क्योंकि अपने पुत्र के साथ होने के कारण उसकी रक्षा आवश्यक थी, जिसके कारण वह अपनी पूरी शक्ति से आक्रमण का प्रत्युत्तर नहीं दे सकती थी।"

"पर आप तो उनके संपर्क में थी न? तो क्या आपने उनकी सहायता नहीं की?" अभिजीत ने पूछा।

"हाँ!" सरानी ने उत्तर दिया।

"मैं सहायता के लिये गई थी, पर जब तक मैं पहुँची, तब तक स्थिति नियंत्रण से बाहर हो चुकी थी। दुराक्ष इस बार पूरी तैयारी के साथ आया था। विशल्या ने अपने पुत्र को विरोचन को सौंप दिया और भागने को कहा और अकेले ही दुराक्ष से युद्ध करने लगी। विरोचन पुत्र को बचाने के लिये वन में भागा। दस्यु उसके पीछे चले गये। उसी समय मैं वहाँ पहुँची। विशल्या ने मुझसे विरोचन और उसके पुत्र के पीछे जाने के लिये कहा, परन्तु मैं विशल्या की सहायता के लिये वहीं रुक गयी, क्योंकि दुराक्ष हम पर,उस पर भारी पड़ रहा था और मैं उन्हें अकेला नहीं छोड़ सकती थी। इसके अतिरिक्त मैं ये भी जानती थी कि विरोचन उन दस्युओं से आसानी से निपट सकता था।

दुराक्ष अत्यंत शक्तिशाली था। परंतु हम दोनों की सम्मिलित शक्ति के आगे वह ज्यादा देर टिक नहीं सकता था। ये बात वह भी जानता था, इसलिये उसने एक चाल चली। वह युद्ध छोड़कर उसी ओर भागा जिस ओर विरोचन गया था। हम उसकी चाल समझ गये थे। हम भी उसी ओर भागे। विरोचन ज्यादा दूर नहीं जा पाया था। वह वन में भागता हुआ पास में ही एक गहरी घाटी के निकट पहुँचा, जहाँ नदी झरने के रूप में नीचे गिर रही थी। जब हम उस स्थान तक पहुँचे, विरोचन अंतिम बचे दो दस्युओं से एक साथ लड़ रहा था और उसने एक हाथ में बच्चे को संभाला हुआ था।

दुराक्ष उसके निकट पहुँचने ही वाला था और हम अभी भी थोड़ी दूर थे।जैसे ही उसने अंतिम दस्यु को मारकर गिराया, दुराक्ष ने बच्चे को मारने के लिये तंत्र वार किया। विरोचन

ने दुराक्ष के वार से बच्चे को बचाने के लिये वार स्वयं पर ले लिया। हम उसे बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते थे। विरोचन और विशल्या दोनों के मुँह से एक चित्कार निकली और इसी के साथ विशल्या ने क्रोध और वेदना में दुराक्ष पर घातक वार शुरू कर दिये। दुराक्ष के वार से विरोचन की मृत्यु हो गयी और बच्चा उछलकर झरने में जा गिरा। मैंने अपनी तंत्र शक्ति से बच्चे को बचाने का भरसक प्रयास किया, परन्तु प्रयास विफल रहा। बच्चा झरने में बह गया। मैंने तंत्र शक्तियों की सहायता से उसे खोजने का प्रयास किया, परंतु उसके कोई संकेत नहीं मिले।

मैं भी क्रोध से पागल हो गयी और दुराक्ष पर टूट पड़ी। परन्तु दुराक्ष जाने किस मिट्टी का बना था। वो बुरी तरह घायल था, परन्तु मृत्यु को प्राप्त नहीं हो रहा था। घायल होने के पश्चात् भी उसने भागने का प्रयास किया और बचने के लिये झरने में कूद गया। विशल्या भी उसके पीछे झरने में कूदने के लिये भागी, परन्तु मैंने उसे रोक लिया। विशल्या भी अचानक रुक गयी और विरोचन की ओर भागी। उसने विरोचन का सिर अपनी गोद में रख लिया और विक्षिप्तता में विलाप करते हुये, उसे बचाने का विफल प्रयास करने लगी।

मैं उसे ये सब करते हुये चुपचाप देखती रही। मैं कुछ भी करने में असक्षम थी। जब वह थक गयी, तब वह धीमे से उठी और उसने मेरी ओर देखा। उसकी आँखें क्रोध से लाल थी। उसने मुझे उसके बच्चे को न बचा पाने के लिये धिक्कारा और मुझसे सारे सम्बन्ध तोड़ लिये। मेरी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। वह वहाँ से अदृश्य हो गई और उसने जाते -जाते मुझसे कहा कि वह अपने बच्चे की रक्षा अवश्य करेगी, परन्तु मैं उसका आशय नहीं समझ पायी।" इतना कहकर सरानी कुछ क्षणों के लिये चुप हो गयी। उन सभी घटनाओं को स्मरण करके उसकी आँखें नम हो गयी थीं।

कक्ष में गहरी ख़ामोशी छा गई। अभिजीत सिर झुकाये सब कुछ ध्यान से सुन रहा था और ये सब जानकर स्तब्ध था। अब तक वह विशल्या को शत्रु समझ रहा था। परन्तु अब उसके हृदय में विशल्या के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो गयी थी।

"फिर आगे क्या हुआ?" अभिजीत ने उत्सुकता से पूछा।

"उसके जाने के पश्चात् मैंने उसे शक्ति केंद्र की सहायता से ढूँढने के अनेक प्रयत्न किये क्योंकि हम शक्ति केंद्र के द्वारा जुड़े हुये थे। परन्तु मैं विफल रही।" सरानी ने खुद को संभाला और आगे कहना आरम्भ किया, "मैंने प्रतिहारियों की सहायता से दुराक्ष को भी ढूंढने के अनेक प्रयत्न किये, परन्तु विफलता ही हाथ लगी। उस दिन के बाद वह भी कभी दिखाई नही दिया। उसके बाद विशल्या ने कई बार शक्ति केंद्र में प्रवेश करने की चेष्टा की, परन्तु असफल रही। हम समझ गये थे कि वह भूतकाल में जाने का प्रयास कर रही है। इसी बीच उसने अपनी तंत्र शक्तियों का भी विस्तार किया। उस दिन के बाद से विशल्या गुप्त रूप से अपनी तंत्र साधना में लगी रही और उपाय खोजती रही, जिससे कि

वो अतीत में जा सके। उसका मातृप्रेम उसे बार -बार ऐसा करने पर विवश कर रहा था। परन्तु यह बात विशल्या भी जानती थी और मैं भी कि भूतकाल को परिवर्तित नहीं किया जा सकता था।"

"एक मिनट रुकिए! क्या आप भूतकाल में जा सकती हैं?" अभिजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"हाँ! परन्तु तभी जब शक्ति केंद्र आवश्यकता पड़ने पर इसकी अनुमति दे तभी।" सरानी ने कहा।

"अद्भुत!" अभिजीत के मुँह खुला रह गया। उसने आगे पूछा, "क्या आप कभी भूतकाल में गयी हैं?"

"हाँ! अनेक बार। कभी- कभी किसी विशेष घटना का विवरण जानने के लिये शक्ति केंद्र की अनुमति से हम भूतकाल में जाते हैं। परन्तु ये सरल कार्य नहीं है। हमें इसके लिये अत्यंत कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है। परन्तु अभी ये हमारा विषय नहीं है।" सरानी ने समझाया। अभिजीत ने भी आगे पूछना उचित नहीं समझा।

"तो मेरा इस सब से क्या वास्ता है? विशल्या ने मुझे पकड़ने का प्रयास क्यों किया? क्या वो मुझे भूतकाल में भेजना चाहती है?" अभिजीत ने पूछा।

"यही हम भी जानना चाहते हैं। और इसीलिये हम तुम्हें यहाँ लाये हैं। यह मेरी भी समझ से परे है कि विशल्या तुम्हारे द्वारा अपना उद्देश्य कैसे पूरा करेगी क्योंकि शक्ति केंद्र ने तुममें कुछ विशेष भले ही देखा हो परन्तु विशल्या तुम्हें भूतकाल में नहीं भेज सकती। मैंने तुम्हें अभी बताया की इसके कुछ नियम हैं।" सरानी ने विचार करते हुये कहा।

"तो फिर हम ये सब कैसे पता लगाएंगे?" अभिजीत ने पूछा।

"हम तुम्हें शक्ति केंद्र में ले जायेंगे। अब केवल शक्ति स्फटिक ही सारी दुविधाओं को दूर करके ये रहस्य उजागर कर सकता है। हम अभी कुछ समय पश्चात् वहां चलेंगे।" सरानी इतना कहकर एक पल रुकी और फिर पूछा, "मेरा विचार है कि तुम्हें अपनें लगभग सारे प्रश्नों के उत्तर मिल गये होंगे।"

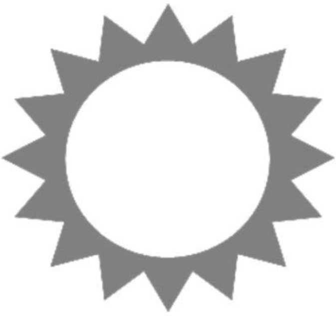
"हाँ! बस एक आखिरी और महत्वपूर्ण प्रश्न। मैं ये प्रश्न सबसे पहले पूछना चाहता था, परन्तु बाकी सब बातों की वजह से पूछना भूल गया।" अभिजीत ने थोड़ा हिचकिचाते हुये कहा।

"तुम निःसंकोच पूछ सकते हो।" सरानी ने अभिजीत को सहज करते हुये कहा।

अभिजीत ने नैमिष के माथे की ओर इशारा करके पूछा, "आप सब के माथे पर बने इस निशान का मतलब क्या है? और ये चक्र किस चीज को प्रदर्शित कर रहा है? मैंने ये चक्र आपके ध्वज और आपके गले में पड़ी माला में भी देखा है। परन्तु आपके लॉकेट का चक्र, ध्वज और माथे के चक्र से थोड़ा अलग है।"

सरानी मुस्कुराई और कहा, “तुम्हारी दृष्टि और अवलोकन क्षमता अत्यंत तीव्र है। तुमनें पूर्णतयः सत्य कहा। ये चक्र थोड़ा अलग है। इसमें केवल एक ओर काँटे है और वो भी केवल सात।” सरानी ने अपने गले का लॉकेट हाथ में लेकर अभिजीत को दिखाया।

अभिजीत ध्यान से देखने के लिये आगे की ओर झुका। उसने देखा की लॉकेट एक वृत्ताकार पट्टी के रूप में था। वह एक तरफ से आधी गोलाई तक वृत्ताकार था और बची हुई आधी गोलाई की तरफ से काँटेदार था। परन्तु काँटों में भी भिन्नता थी। उसके सात काँटों में से बीच वाला काँटा बड़ा था और उसके दोनों ओर छोटे-छोटे तीन काँटे थे। बीच वाले खाली भाग में दो त्रिभुज बने हुये थे, जो एक दूसरे के ऊपर उलटे रखे हुये थे और छः काँटों वाली एक आकृति बना रहे थे। देखने में वह किसी अस्त्र जैसा लग रहा था। फिर उसने सरानी और नैमिष के माथे की ओर देखा। और उसने ध्यान दिया कि माथे और ध्वज पर बना चक्र पूरी वृत्ताकार धुरी पर कँटीला था।



ध्वज चिन्ह



लाकेट पेन्डेंट

“निःसन्देह आप सही हैं। कृपया मुझे बताये इनका क्या अर्थ है?” अभिजीत ने उत्सुकता से पूछा।

“क्यों नहीं। देखो सर्वप्रथम मैं तुम्हें माथे के चिन्ह के विषय में बताती हूँ।” सरानी ने अपने माथे की ओर उँगली से संकेत करके कहा।

“देखो, इस चिन्ह में दो प्रतीक हैं। पहला है एक खड़ी रेखा और दूसरा है उसके नीचे बना हुआ कँटीला चक्र। सीधी खड़ी हुई रेखा 'दण्ड' का और चक्र 'रक्षा' का प्रतीक है। अर्थात् ये हमारे द्वारा किये जाने वाले दोनों कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, मानवजाति की रक्षा और मानवजाति पर संकट बनने वाले किसी भी कारक अथवा असुरों को दंड देना। ध्वज पर बना चक्र भी प्रतिहारियों का प्रतिनिधित्व करता है जिसका अर्थ है रक्षक। अब गले में पहने हुये लॉकेट के विषय में तुम्हें नैमिष बताएगा।” सरानी ने कहा और नैमिष की ओर इशारा किया।

नैमिष ने सिर हिलाकर प्रत्युत्तर दिया और कहना प्रारम्भ किया, “जैसा की तुमने देखा

कि ये लॉकेट अन्य चक्रों से भिन्न है और इसमें केवल एक तरफ ही काँटे है। ये हम सभी प्रतिहारियों को अपनी योग्यता का प्रमाण देने के लिये स्वयं प्राप्त करना पड़ता है।"

"मतलब? मैं कुछ समझा नहीं।"

"मैं समझाता हूँ। जैसा कि सरानी ने बताया था कि हम सभी में शक्तियां विद्यमान हैं परन्तु हमें उनके प्रयोग के लिये प्रशिक्षित किया जाता है।"

"हाँ मुझे याद है।"

"तो इस लॉकेट को प्राप्त करना हमारे प्रशिक्षण का अंतिम चरण होता है, या यूँ कहो कि ये एक परीक्षा है, जो प्रमाणित करती है कि हम प्रतिहारी बनने के लिये तैयार हैं।"

"किस तरह की परीक्षा होती है ये?"

"हमें एक लक्ष्य दिया जाता है, जिसे पूरा करके हमें अंत में लॉकेट प्राप्त करना होता है?"

"मतलब खजाने की खोज जैसा?"

"हम्म... कह सकते हो।" नैमिष ने मुस्कुरा कर कहा।

"पर आखिर ये लॉकेट करता क्या है?"

"ये हमारी मन्त्र शक्तियों को ऊर्जा वारों में बदल देता है और प्रहार करने में सहायता करता है।"

"अच्छा!" अभिजीत कुछ क्षण रुका फिर उसने चौंक कर पूछा. "पर अगर ऐसा है तो बिना लॉकेट के प्रशिक्षण के समय तुम लोग शक्तियों का प्रयोग कैसे करते हो?" नैमिष जोर से हँसा। अभिजीत सकपका गया।

"क्या हुआ? क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?"

"नहीं! क्षमा करना पर तुम सच में बहुत चतुर हो और हर चीज पर बारीकी से सोचते हो। ये अच्छी बात है।"

"कृपया मेरी तारीफ करना बंद करो और आगे बताओ।"

"प्रशिक्षण के समय हमें एक साधारण लॉकेट दिया जाता है, जो हमें प्रहार करने में सहायता करता है, परन्तु तैयार होने पर हमें हमारे योग्य लॉकेट प्राप्त करने के लिये परीक्षा देनी होती है।"

"और ये परीक्षा कौन लेता है?"

"शक्ति केन्द्र। वही हमारी परीक्षा लेता है और हमें हमारी योग्यता के अनुसार लॉकेट प्रदान करता है।"

“वाह, क्या बात है! क्या मुझे भी एक लॉकेट मिल सकता है? “ अभिजीत से ख़ुशी से चहकते हुये पूछा।

“नही! क्षमा करना, पर चूँकि तुम हममें से एक नहीं इसीलिये.....” नैमिष ने मुँह बनाकर कहना शुरू किया तो अभिजीत ने बीच में ही बात काटकर हंसते हुये कहा, “मैं तो बस मज़ाक कर रहा था।”

तीनों जोर -जोर से हँसने लगे। फिर थोड़ी देर बाद सामान्य होने पर सरानी ने अभिजीत से कहा,”मेरे विचार में तुम्हारे सभी सन्देह दूर हो गये होंगे, सिवाय इसके कि तुम्हें ही विशल्या द्वारा क्यों लक्ष्य बनाया गया?”

“जी! सही कहा आपने। और अपने यह भी बताया था कि ये हमें शक्ति केंद्र में चलकर ही पता चलेगा।”

“हाँ! इसके लिये हमें शक्ति केंद्र जाना है परन्तु मेरे विचार में इस बातचीत में काफी समय हो गया है। तुम अभी जाकर भोजन करो और थोड़ा विश्राम करो। हम कुछ समय बाद शक्ति केंद्र में चलेंगे।”

“जी बिल्कुल! जैसा आप कहें।” कहकर नैमिष और अभिजीत खड़े हो गये। नैमिष ने पूर्व की भाँति सरानी का अभिवादन और अभिजीत ने भी हाथ जोड़कर नमस्ते किया और वो लोग उस कक्ष से बाहर निकल आए।

शक्ति-केंद्र

“नैमिष! क्या तुम कभी भूतकाल में गये हो?” अभिजीत ने सरानी के कक्ष से बाहर निकलकर सीढ़ियां उतरते हुये नैमिष से पूछा।

“हाँ! एक बार जा चुका हूँ। मुझे एक मंदिर जिसे नष्ट कर दिया गया था, उसकी दीवारों पर उत्कीर्ण की गयी, एक सूचना को पढ़ने के लिये भेजा गया था।” नैमिष ने कहा।

“तो भूतकाल में जाना कैसा लगता है? क्या इसमें कुछ अलग होता है?”

“नहीं ज्यादा कुछ विशेष तो नहीं होता। ऐसा लगता है, बस जैसे हम किसी दूसरी जगह पर आ गये हों, परन्तु आज के समय के हिसाब से बहुत ही अलग परिवेश देखने को मिलता है।”

“काश, मैं भी कभी भूतकाल में जा पाता।” अभिजीत ने एक गहरी साँस लेकर कुछ सोचते हुये कहा।

“तुम भूतकाल में जाकर क्या देखना चाहते हो?” नैमिष ने जिज्ञासावश पूछा।

“मैं आपने माता-पिता को देखना चाहता हूँ।” अभिजीत ने उदास होकर कहा।

नैमिष विस्मित रह गया। “क्या तुमनें अपने माता-पिता को नहीं देखा? क्या वो मर चुके हैं?” नैमिष ने पूछा।

“पता नहीं। मैं अपने जन्म और माता-पिता के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैं अनाथालय में पला-बढ़ा हूँ।” अभिजीत ने उत्तर दिया। नैमिष ने उसके कंधे पर हाथ रखा और उसकी तरफ देख कर सांत्वना में सिर हिलाया ताकि वह अतीत और दुःख के इन क्षणों से बाहर निकल सके।

फिर वो दोनों चिकित्सालय की ओर मुड़ गये। दोनों ने चिकित्सालय में प्रवेश किया। वहां एक पलंग पर शैलेन्द्र बेहोश लेटा हुआ था और उसके बगल में एक स्टूल पर राकेश बैठा हुआ था। अभिजीत और नैमिष को आता देखकर राकेश खड़ा हो गया।

“ये अब कैसा है? क्या हालत में कुछ सुधार हुआ?” अभिजीत ने पूछा।

“नहीं! वैसा ही है। तुम सुनाओ? कुछ पता चला हम पर हमला करने वाली कौन थी और ये सब क्या चल रहा है?” राकेश ने पूछा।

नैमिष कुछ बोलने ही वाला था कि अभिजीत ने हाथ के इशारे से उसे रोक दिया और कहा, “हम्म ज्यादा कुछ खास नहीं। मुझे अभी फिर से उनसे मिलने जाना है। फिर लौट कर पूरी बात बताऊंगा।” अभिजीत जानता था कि नैमिष नहीं चाहता कि किसी बाहरी व्यक्ति को उनके बारे में बताया जाये। और वह भी इसी पक्ष में था, क्योंकि उसे भी अभी तक पूरी जानकारी प्राप्त नहीं हुई थी, इसीलिये उसने निश्चय किया कि वह प्रतिहारियों के विषय में अपने दोस्तों को नहीं बताएगा।

“क्या तुमनें कुछ खाया?” अभिजीत ने पूछा।

“फ़िलहाल नहीं। तुम्हारे जाने के बाद से मैं यहीं हूँ। और सच बताऊँ तो बहुत बोर हो गया यार, कोई कुछ बताता ही नहीं है। बहुत खड़ूस लोग हैं ये सब।”

नैमिष ने भौंहे उठाई, तो राकेश ने उसको देखकर आँख मारी।

“भाई, ये तुम्हारे बारे में नहीं था। तुम तो अच्छे आदमी हो। “राकेश ने मसखरी करते हुये कहा और खीसें निपोरने लगा।

अभिजीत ने पीछे मुड़कर नैमिष से आँखों के इशारे से माफ़ी मांगी और फिर राकेश से कहा, “हो गया तुम्हारा मजाक? तो चलो अब कुछ खाते हैं।”

“मैं भोजन तुम्हारे कक्ष में भिजवाने की व्यवस्था करता हूँ। तुम लोग चलो।” नैमिष ने कहा और दूसरी तरफ चला गया।

“तुम्हें मजाक करते हुये, जरा भी शर्म नहीं आई। आखिरकार उसने हमारी जान बचाई है।” अभिजीत ने राकेश को डाँटते हुये कहा और वो अपने कमरे की तरफ बढ़ गये।

थोड़ी देर बाद वो दोनों अपने कमरे में थे। हाथ -मुंह धोकर तरोताजा होने के बाद अभिजीत बैठा ही था कि दरवाजे पर हुई दस्तक ने उसका ध्यान खींचा।

“लगता है खाना आ गया।” राकेश ने कहा।

अभिजीत ने उठकर दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही अभिजीत वहीं का वहीं जम सा गया। उसके सामने इलाक्षी खड़ी थी, जिसके पीछे दो सेविकाएं भोजन से भरी थालियां लिये खड़ी हुई थी।

अभिजीत की आँखें इलाक्षी के चेहरे पर ठहर सी गयी। उसकी उस भूरी आँखों पर, जो उसे न जाने क्यों बांध लेती थीं। उसकी नाक के दायीं ओर बने तिल पर, जिससे उसकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती थी। अभिजीत के लिये समय जैसे रुक सा गया था और शायद रुका ही रहता, अगर इलाक्षी की आवाज ने उसका सम्मोहन न तोड़ा होता।

"क्या आप मार्ग देंगे, जिससे कि भोजन अंदर लाया जा सके।" इलाक्षी ने कहा। अभिजीत का ध्यान एक झटके से भंग हुआ और वो झेंपकर तुरंत पीछे की ओर हट गया। सेविकाएं अंदर आईं और उन्होंने मेज पर थालियां रख दीं और जाने लगी। अभिजीत अभी भी इलाक्षी को ही देख रहा था।

"क्या आपने खाना खा लिया?"

"क्या बेवकूफी भरा सवाल है!"

"आपका नाम क्या है?"

"तुम्हें उसका नाम पता तो है बेवक़ूफ़।"

"मैंने आपको अपने सपने में देखा था।"

"हाँ! क्यों नहीं जैसे वह तुमसे सपने के बारे में सुनने बैठ ही जायेगी।"

"तो फिर क्या करूँ? कैसे बात शुरु करूँ?" ये बातें सोचते हुये अभिजीत ने अपने माथे पर हथेली से चपत लगायी। वह खुद अपने आप से ही बातें कर रहा था। इलाक्षी ने उसे ऐसा करते हुये देख लिया और उसने भौंहें सिकोड़कर अजीब ढंग से उसकी ओर देखा।

"क्या कोई समस्या है?" इलाक्षी ने पूछा।

"न..नहीं तो ऐसी कोई बात.... नहीं है। सब ठीक है।" अभिजीत ने कहा और खुद को मन ही मन अपनी हरकतों के लिये कोसा।

"उचित है। तो फिर भोजन कर लीजिये, नहीं तो ठंडा हो जायेगा।" इलाक्षी ने कहा और मुड़कर जाने लगी।

"अ अ..आपका नाम...क्या है?" अभिजीत ने हिम्मत करके मुंह खोला। इलाक्षी जाते हुये, अपने स्थान पर रुक गयी। वह मुड़ी और उसने सीधे अभिजीत की आँखों में देखा।

"मैंने उससे पूछा ही क्यों? शायद उसे पता है कि मैं उसका नाम जानता हूँ।" अभिजीत ने मन ही मन खुद को ताना मारा।

"मेरा नाम इलाक्षी है। मैं और नैमिष सरानी के मुख्य अंगरक्षक हैं।" इलाक्षी ने कुछ क्षण रुककर कहा। और फिर से मुड़कर जाने लगी।

“मेरा नाम अभिजीत है।” अभिजीत ने हिचककर फिर से कहा। इलाक्षी दरवाजे के पास जाकर रुकी और उसने फिर से मुड़कर अभिजीत को देखा और सिर हिलाकर प्रत्युत्तर दिया और फिर मुड़कर तेजी से चली गयी। सेविकाएं पहले ही जा चुकी थी।

अभिजीत अभी भी दरवाजे की ओर मुँह करके स्तब्ध खड़ा हुआ था। राकेश, जो आँखें फाड़े ये सब देख रहा था और समझने की कोशिश कर रहा था, अभिजीत को पुकारा। अभिजीत जैसे किसी सपने से बाहर आया हो , एकदम से चौंक गया। उसने पलट कर राकेश की ओर देखा।

राकेश ने संदेहात्मक दृष्टि से अभिजीत की ओर देखा और पूछा, “तुम आखिर कर क्या रहे थे? और वो लड़की थी कौन?”

“क्यों? क्या किया मैंने? नाम ही तो पूछा था।”

“नाम तो ठीक है, लेकिन उससे पहले तुम्हें क्या हुआ था? तुम पागलों की तरह सिर हिला रहे थे और अपने में ही गुम थे? वो लड़की तुम्हें पागल समझ रही थी।”

अभिजीत ने जब याद किया, तो उसने अपनी बेवकूफी पर सिर पीट लिया। फिर उसने राकेश को बताया की ये वही लड़की थी, जो उसने अपने सपने में देखी थी।

“अच्छा! तो ये बात थी। पर तुम उसके सामने हकला क्यों रहे थे? ठीक से बात क्यों नहीं की?”

“मुझे खुद नहीं पता कि मैं उससे कुछ क्यों नहीं कह पाया। सच कहूँ, तो मुझे उससे थोडा डर लग रहा था।”

“तुमसे कुछ नहीं होगा। चलो आओ खाना खाते हैं।” राकेश ने कहा और दोनों खाने बैठ गये। पर अभिजीत अभी भी इलाक्षी के बारे में ही सोच रहा था।

दोपहर में थोड़ी देर आराम करने के बाद नैमिष अभिजीत को लेने आया और दोनों फिर से सरानी के कक्ष में उपस्थित हो गये। इलाक्षी पहले से ही वहां उपस्थित थी। अभिजीत की सांसे एक बार फिर थम सी गयीं। पर इस बार उसने खुद को संयमित रखा। नैमिष ने पूर्ववत झुककर सरानी को प्रणाम किया और अभिजीत ने नमस्ते में हाथ जोड़ दिये। सरानी ने सिर हिलाकर अभिवादन स्वीकार किया और कहा, “आशा है कि तुम्हें यहाँ कोई परेशानी महसूस नहीं हो रही होगी।”

“जी नहीं! मैं बिल्कुल ठीक हूँ।”

“तो तुम शक्ति केंद्र चलने के लिये तैयार हो? मैं जानने के लिये उत्सुक हूँ कि तुम आखिर हों कौन।”

“जी बिल्कुल! मैं भी उत्सुक हूँ। चलिये।” अभिजीत ने मुस्कुराकर कहा।

सरानी ने सभी को अपने पास आने के लिये कहा और चारों एक गोले की आकृति में खड़े हो गये। सरानी ने अपनी आंखें बंद की और चारों एक ऊर्जा के गोले में गायब हो गये।

थोड़ी देर बाद अभिजीत ने खुद को एक घने जंगल में पाया। सूर्यास्त होने वाला था। और दूर आसमान में सूर्य संध्याकालीन नारंगी छटा बिखेरता हुआ अस्त हो रहा था। उसने अपने आसपास देखा। उसे अपने पीछे लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर वही महल दिखाई दिया, जिसमें से वह लोग यहां पर आए थे। उसके सामने एक बड़ा वृत्ताकार भवन था, जिसका गुंबद ज्यादा ऊंचा नहीं था। भवन एक ऊंचे आधार पर स्थित था, जिसके सामने की ओर बड़ी और चौड़ी सीढ़ियां थी, जो कि मुख्य द्वार तक जाती थी।

भवन पूर्णत: पत्थर का बना हुआ था, जिसमें केवल एक मुख्य द्वार था और बाकी की वृत्ताकार दीवार पर खिड़कियां अलंकृत थी। गुंबद की ऊंचाई अपेक्षाकृत थोड़ी कम थी। भवन के बाहर सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी।

अभिजीत को यह बात थोड़ी खटकी। उसने सरानी से पूछा, “ क्या यही शक्ति-केंद्र है? यहां तो कोई भी दिखाई नहीं दे रहा है। ना ही कोई सुरक्षा है और ना ही पहरेदार।”

“ऐसा इसलिये क्योंकि शक्ति- केन्द्र अपनी सुरक्षा स्वयं करता है। एक अदृश्य ऊर्जा कवच चारों तरफ से इसकी सुरक्षा करती है, यदि तुम हमारे साथ ना आए होते, तो तुम्हें यह शक्ति -केंद्र दिखाई भी नहीं देता। इसके अतिरिक्त शक्ति -केंद्र पर होने वाले किसी भी आघात की सूचना स्फटिक हमें तत्काल प्रेषित कर देता है।”

“परंतु शक्ति- केंद्र इतनी दूर क्यों स्थापित है? मुझे लगा था, यह महल में ही कहीं गुप्त रूप से स्थित होगा।”

इसके प्रत्युत्तर में सरानी केवल मुस्कराई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। अभिजीत समझ गया कि यह सब शक्ति- केंद्र की सुरक्षा के लिये किया गया है ताकि सभी यही समझे की शक्ति -केंद्र महल के अंदर ही कहीं स्थापित है। वह भी प्रत्युत्तर में मुस्कराया और सभी लोग अंदर जाने के लिये सीढ़ियां चढ़ने लगे।

मुख्य द्वार पर पहुंच कर सभी लोग रुक गये। सरानी ने अपना दायां हाथ मुख्य दरवाजे पर रखा और आंखें बंद करके कुछ बुदबुदायी। एक हल्की सी खट की आवाज के साथ दरवाजा धीरे- धीरे खुलना शुरु हो गया। मुख्य द्वार ज्यादा ऊँचा नहीं था, इसीलिये सभी

ने थोड़ा झुक कर अंदर प्रवेश किया। उनके प्रवेश करते ही अंदर लगी मशालें स्वतः ही जल उठी और कक्ष रौशनी से भर गया। अभिजीत अब तक रहस्यों का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि अब उसके आश्चर्यचकित होने के लिये कुछ नहीं बचा था। शक्ति- केंद्र हूबहू वैसा ही था, जैसा कि उसने अपने सपने में देखा था।

वह एक वृत्ताकार कक्ष में था। कक्ष बहुत ही विशाल और ऊंचा था, और पूरी तरह से पत्थर का बना हुआ था। छत एक विशालकाय नक्काशीदार गुम्बद के रूप में थी। गुम्बद के मध्य से एक लंबा तराशा हुआ पत्थर झूमर की तरह नीचे की ओर लटका हुआ था। उसने अपने चारों तरफ देखा। पथरीली दीवारों पर फूल पत्तियां , हाथी, मोर और अन्य जलीय जीवों के चित्र उकेरे हुये थे। उसने पत्थरों पर इतनी गहरी नक्काशी पहली बार देखी थी। वो आश्चर्यचकित था। उस कक्ष में आने-जाने के लिये केवल एक छोटा सा दरवाजा था, और बाकी हिस्से में छोटी-छोटी अलंकृत खिड़कियां थीं।

मुख्य दरवाजे से कुछ दूरी पर सीढ़ियां थीं, जो कि सारे कक्ष की परिधि में कक्ष के मध्य भाग की ओर नीचे की ओर जाती हुई फैली हुई थी। सभी लोग सीढ़ियाँ उतरकर कक्ष के मध्य भाग की ओर बढ़े। कक्ष के मध्य में एक सप्तभुजाकार स्तम्भ था, जो कि उसके सीने तक ऊँचा था। स्तम्भ की बनावट साधारण थी। उस पर एक नारियल के आकार का सप्तकोणीय नीला स्फटिक हवा में लटका हुआ था, जो अपनी धुरी पर धीरे- धीरे घूम रहा था। स्फटिक से निकली रोशनी चारों ओर फ़ैल रही थी।

नैमिष और इलाक्षी आधी सीढ़ियाँ उतरकर रुक गये। उन्हें देख कर अभिजीत भी रुक गया। सरानी स्तम्भ तक गयी और उन्होंने स्फटिक को पारंपरिक मुद्रा में प्रणाम किया। अभिजीत ने भी वैसा ही किया। फिर सरानी पीछे मुड़ी और अभिजीत को अपने पास आने का इशारा किया। अभिजीत सरानी के ठीक बगल में जाकर खड़ा हो गया। सरानी ने अपनी आँखें बंद कीं और सिर झुकाकर कुछ बुदबुदाने लगी। कुछ क्षणों बाद स्फटिक से एक नीली ऊर्जा का घेरा निकलना शुरु
हुआ, जिसने सरानी और अभिजीत को अपने घेरे में ले लिया।

अभिजीत को कुछ अजीब सा एहसास हुआ। उसे ऐसा लगा, जैसे वह शून्य में पहुँच गया है। उसके चारों ओर एक हल्का सा नीला घेरा था, जिसके बीच में वो और सरानी खड़े हुये थे और सामने स्फटिक तेज़ आभा के साथ दमक रहा था। एक अनोखी सुखद शांति ने उसे घेर लिया। उसने सरानी की ओर देखा। सरानी सिर झुकाए हुये शांत खड़ी हुई थी। उसके हाथ उनके पारम्परिक प्रणाम की मुद्रा में थे। उसकी आँखें बंद थी, लेकिन पलकों का हिलना बता रहा था कि वो जो कुछ भी अभिजीत के बारे में जान पा रही है,

वो उसे बेचैन कर रहा है। अभिजीत कुछ क्षणों तक एकटक सरानी की ओर देखता रहा।

अचानक सरानी ने एक झटके से अपनी आँखें ख़ोल दी और मुड़कर अभिजीत की ओर देखा। उसकी आँखों से छलकते भावों को अभिजीत पढ़ नहीं पाया। उनके चारों ओर का घेरा वापस शक्ति स्फटिक में समा चुका था। सरानी ने अभिजीत से कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि मुख्य द्वार की ओर से आई एक आवाज ने उन सभी का ध्यान खींच लिया।

"अंततः तुम्हें खोज ही लिया। अब बचकर कहाँ जाओगे?" विशल्या ने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा। वह मुख्य द्वार पर खड़ी हुई थी और उसके अगल-बगल तक्षिका और यक्षिका खड़ी हुई थीं।

आक्षेप

अभिजीत स्तब्ध था, क्योंकि विशल्या उस तक पहुँच चुकी थी। किन्तु इस बार वह डरा नहीं, क्योंकि सरानी उसके साथ थी। वो जानता था कि वो लोग विशल्या को उसे ले जाने नहीं देंगे। उसने सोच लिया कि इस बार वह उसका मुकाबला करने की कोशिश करेगा हालाँकि वह जानता था कि इन लोगों की शक्ति के आगे उसकी शक्ति एकदम तुच्छ थी।

"क्या चाहती हो विशल्या?" सरानी बहुत शांत स्वर में पूछी।

"तुम जानती हो विशाला..कि मैं क्या चाहती हूँ।" विशल्या ने सरानी को उसके असली नाम से सम्बोधित करके कहा। "मुझे ये लड़का चाहिए। मैं तुम सब को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहती, इसलिये अंतिम बार कह रही हूँ। मुझे इसे ले जाने दो।" विशल्या ने कहा।

"दीदी!" सरानी विशल्या को सहानुभूति के साथ संबोधित करते हुये आगे की ओर बढ़ी, "कृपया रुक जाइये। मेरी बात सुनिए। आप..."

"मुझे कुछ नहीं सुनना। तुम लोगों ने मेरा जीवन नष्ट कर दिया, किन्तु अब मैं और सहन नहीं करुँगी। मैं अपने पुत्र को प्राप्त करके रहूंगी।" विशल्या ने क्रोध में आँखें लाल करते हुये कहा।

"किन्तु दीदी! आपका पुत्र..."

"बस बहुत हो चुका।" सरानी ने कहना चाहा, किन्तु विशल्या ने उसकी बात काट दी और अभिजीत को बंदी बनाने के लिये आगे बढ़ी। उसने अपने हाथों को घुमाया और एक तंत्र बंधन अभिजीत को बांधने के लिये लपक पड़ा। सरानी तेजी से अभिजीत के आगे आ गयी और अपने तंत्र वार से उस बंधन को निष्क्रिय कर दिया। विशल्या क्रोध से उन्मत्त हो गयी और उसने घातक तंत्र वार करने शुरू कर दिये।

एक युद्ध शुरू हो गया। सरानी अपना पूरा ध्यान अभिजीत को बचाने पर लगाये हुये

थी और विशल्या के घातक से घातक तंत्र वारों का प्रत्युत्तर दे रही थी। वहीं दूसरी ओर सरानी के दायीं ओर इलाक्षी तक्षिका से और बायीं ओर नैमिष यक्षिका से उलझा हुआ था। सभी अपनी पूरी शक्ति लगाकर एक -दूसरे को परास्त करने में लगे हुये थे।

अभिजीत सरानी के पीछे कुछ दूरी पर खड़ा, उन तीनों को उसे बचाते हुये देख रहा था। अभिजीत सामान्यतः लड़ाई- झगडे से दूर रहता था पर ऐसा नहीं की वो डरपोक था। वो बहादुर था और अत्यंत मजबूत गठीले शरीर का मालिक था। परन्तु उसे ये लड़ाई-झगडे औचित्यहीन लगते थे। किसी झगड़े को सुलझाने के लिये लड़ाई से भी बेहतर और भी तरीके होते हैं, ऐसा उसका मानना था। परन्तु यहाँ तो वो लड़कर बहादुरी भी नहीं दिखा सकता था। इन शक्तियों का मुकाबला करना उसके बस की बात नहीं थी। पर उसने चुप बैठना भी नहीं सीखा था।

अचानक उसने देखा कि इलाक्षी अपने प्रतिद्वंदी के वार से एक तरफ जा गिरी और सँभलने की कोशिश रही थी और उसकी प्रतिद्वंदी उस पर दोबारा वार करने के लिये तैयार हो रही थी। अभिजीत तेजी से उस तरफ लपका और उसे खींचकर उस स्थान से हटा लिया। ठीक तभी एक तंत्र वार उनके करीब से गुज़रा और शक्ति स्फ़टिक से जा लगा।

“क्या आप ठीक हैं?” अभिजीत ने पूछा। इलाक्षी ने एक नज़र अभिजीत को देखा और पुनः अपने प्रतिद्वंदी पर और तीव्रता के साथ वार करने लगी।

अभिजीत ने अपने पीछे थोड़ी रौशनी महसूस की और पीछे मुड़कर देखा। तक्षिका का वार लगने से स्फटिक को हानि तो नहीं पहुंची थी किन्तु वह धीरे -धीरे अजीब ढंग से चमकने लगा था।

“सरानी! स्फटिक पर एक वार लग गया है।” अभिजीत ने तुरंत सरानी, जोकि विशल्या के साथ कड़ा युद्ध कर रही थी, से स्फटिक के बारे में कहा। स्फटिक पर वार लगने की बात सुनकर सरानी ने एक क्षण के लिये पीछे मुड़कर स्फटिक की ओर देखा और विशल्या को मौका मिल गया। उसने सरानी पर वार कर दिया और सरानी उछलकर स्फटिक के समीप जा गिरी। विशल्या ने बिना समय गंवायें अभिजीत को बंदी बनाने के लिये उस पर वार करने प्रारम्भ कर दिये।

अभिजीत ने फुर्ती से यहाँ- वहाँ भागते हुये बचने का प्रयास शुरू कर दिया क्योंकि वह जानता था, सरानी जल्दी ही संभलकर उसकी सहायता के लिये आ जायेगी। परन्तु उसके बचते- बचाते भी विशल्या के एक दो वार स्फटिक से जा लगे।

"विशल्या! रुक जाइये, आप स्फटिक को हानि पहुंचा देंगी।" सरानी चीखी, पर विशल्या पर कोई असर नहीं हुआ। वो पागलों की तरह वार पर वार करती रही।

तब तक इलाक्षी तक्षिका को परास्त कर चुकी थी। वो तुरंत अभिजीत की सहायता के लिये आ गयी और विशल्या के वारों को रोकने की चेष्टा करने लगी। तब तक सरानी संभल चुकी थी। वह भी विशल्या को रोकने के लिये आगे बढ़ी कि अचानक तभी व्हूश की एक तेज आवाज के साथ उनके पीछे एक तेज़ नीली रोशनी चमकी। अभिजीत और सरानी दोनों ने पीछे मुड़कर देखा। स्फटिक के ठीक ऊपर हवा में एक चमकीला द्वार प्रकट हो गया था जो कि स्फटिक से निकल रही ऊर्जा से ही बना हुआ था।

"विशल्या! कृपया रुक जाइये। स्फटिक की ऊर्जा अनियंत्रित हो रही है। हम नहीं जानते इसका क्या परिणाम होगा।" सरानी ने चीखकर कहा। परन्तु विशल्या आवेश में अंधी हो चुकी थी। उसने इलाक्षी को रास्ते से हटाने के लिये एक घातक वार किया। इलाक्षी,जो कि पहले ही विशल्या की तंत्र शक्ति के आगे कमजोर थी, उस वार से संभल नहीं सकी और सीधा स्फटिक से बने द्वार की ओर उछाल गयी।

नैमिष जो यक्षिका को बंदी बना चुका था, तेजी से इलाक्षी को बचाने के लिये उस द्वार की ओर लपका। दूसरी ओर अभिजीत जो अब तक मूक दर्शक बना उसे बचाने के लिये उन सभी का भरसक प्रयास और ये सारा दृश्य हतप्रभ होकर देख रहा था; उसने इलाक्षी को उस द्वार में गिरते देख, उसको बचाने के लिये एक लंबी छलाँग लगाई। परन्तु तब तक देर हो चुकी थी। अभिजीत सिर्फ इलाक्षी की उँगली को स्पर्श कर पाया था। इलाक्षी द्वार में गिर चुकी थी और अभिजीत उस खम्बे से जा टकराया, जिसपर स्फटिक स्थापित था।

"नहींऽऽऽ..." सरानी की एक तेज़ वेदनापूर्ण चीख गूँजी और इसी के साथ उस द्वार से चिंगारियां निकलनी शुरू हो गयीं और रोशनी के एक तेज़ धमाके के साथ वह द्वार गायब हो गया। उस धमाके का प्रभाव इतना तीव्र था कि कक्ष में उपस्थित सभी लोग झटके से पीछे उछल गये। अभिजीत जो कि स्फटिक के पास ही था, वो भी उछलकर दूर जा गिरा और बेहोश हो गया।

नैमिष तुरंत अभिजीत को सँभालने के लिये भागा। सरानी भी खुद को संभालकर उठ खड़ी हुई ताकि विशल्या को रोक सके। परन्तु विशल्या शान्त खड़ी हुई थी। स्तब्ध। उसकी आँखें शून्य में ताक रही थी। सरानी विशल्या की ओर आगे बढ़ी।

"दीदी! ये आपने क्या किया? वर्षों पूर्व आपके उठाये एक कदम से हमने किसी अपने को खोया था और आज एक बार फिर आपके प्रतिशोध की आग ने किसी और को भी हमसे छीन लिया।" सरानी ने विशल्या के कंधे पर हाथ रखा और कुछ पल रुक कर कहा, "रुक जाइये दीदी! आपको इससे कुछ हासिल नहीं होगा। कहीं ऐसा न हो ,आप

जिसे प्राप्त करना चाहती हैं , उस पाने के प्रयास में आप उसे ही खो दें।"

विशल्या ने पथरायी आँखों से सरानी की ओर देखा और पूछा, "तुम्हारे कहने का क्या तात्पर्य है विशाला?"

"आपका पुत्र जीवित है दीदी।" सरानी ने कहा। विशल्या स्तब्ध रह गयी। एक आंसू उसकी दायीं आँख से बाहर उभरा और उसके गाल पर लुढ़क गया।

"क्या तुम सच कह रही हो?" उसने अपने दोनों हाथों से सरानी के कंधों को पकड़ा और पूछा।

"मैं सच कह रही हूँ दीदी! अभिजीत आपका ही पुत्र है। मैंने स्फटिक के द्वारा पता लगाने का प्रयास किया था। पर स्फटिक ने मुझे सिर्फ यही दृश्य दिखाया कि वो आपका पुत्र है।" सरानी ने कहा।

"परन्तु ऐसा कैसे हो सकता है। इसकी उम्र तो बहुत कम है। और ये इतने वर्षों तक कहाँ रहा?" विशल्या ने पूछा।

"मैं नहीं जानती दीदी। स्फटिक ने इससे ज्यादा कुछ ज्ञात नहीं होने दिया। पर मुझे लगता है कि उसका जन्म किसी विशेष उद्देश्य के लिये हुआ है और शायद उसकी नियति में कुछ विशेष कार्य लिखे हैं, जो उसके अपने पहले वाले जीवन में उसके इस रहस्य को उजागर करेंगे।" सरानी ने विश्वास से भर कर कहा।

"उसने मुझे बताया था कि उसका पालन-पोषण एक अनाथालय में हुआ था और उसने अपने माता-पिता को नहीं देखा।" नैमिष ने बातचीत में हस्तक्षेप किया। सरानी और विशल्या दोनों उसकी तरफ मुड़े।

"और क्या बताया उसने तुम्हें?" सरानी ने नैमिष से आगे पूछा।

"नहीं बस इतना ही। परन्तु वह जानना चाहता है कि उसके माता-पिता कौन थे?" नैमिष ने बताया।

"तो हम उसे बताएंगे कि वो कौन है और फिर सब ठीक हो जायेगा।" विशल्या ने कहा।

"ठीक है।" सरानी ने मुस्कुरा कर कहा और फिर तुरंत ही उसके चेहरे पर गंभीर भाव आ गये, "परन्तु पहले हमें इलाक्षी को वापस लाना होगा। हमें तो ये भी नहीं पता कि वो कहाँ गयी है?"

"तुम ठीक कह रही हो विशाला। सब मेरा ही दोष है। मैं प्रतिशोध में अंधी हो गयी थी। उसे वापस लाने में तुम्हारी पूरी सहायता करूँगी।" विशल्या ने सरानी के कंधे पर हाथ रखकर कहा। सरानी ने सिर हिलाकर प्रत्युत्तर दिया।

"और फिर हम सब साथ रहेंगे।" सरानी ने आगे कहा और विशल्या ने आश्चर्यचकित होकर सरानी की ओर देखा।

"हाँ दीदी! आप पर्याप्त दंड की भागी बन चुकी हैं। अब प्रसन्नता के दिन आने वाले हैं। हमारा परिवार फिर से पूर्ण हो जायेगा।" सरानी ने कहा और आगे बढ़कर विशल्या को गले से लगा लिया। दोनों की आँखें नम थी।

"परन्तु हम इलाक्षी का पता कैसे लगाएंगे?" नैमिष ने पूछा। सरानी और विशल्या ने मुड़कर नैमिष की ओर देखा। उसका कहना उचित था।

"हमें उसके 'औरा' से उसे खोजना होगा और अगर वह न मिली तो फिर हमें शक्ति स्फटिक से ही सहायता लेनी होगी। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।" विशल्या ने कहा।

"उचित है। परन्तु फ़िलहाल हमें यहाँ से चलना चाहिए। अभिजीत को चिकित्सा की आवश्यकता है। फिर हम इलाक्षी को खोजने का प्रयत्न करेंगे।" सरानी ने कहा।

तक्षिका और यक्षिका को बंधनमुक्त कर दिया गया और इलाक्षी की खोज में भेज दिया गया। नैमिष ने अभिजीत को हाथों में उठा लिया और वह सरानी व विशल्या के साथ ऊर्जा के घेरे में गायब हो गया।

"अभिजीत।"

"अभिजीत।"

"क्या तुम मुझे सुन सकते हो?"

अचानक अभिजीत की आँख खुली। उसने स्वयं को एक जंगल में एक टूटे हुये मंदिर के पास में पाया। मंदिर बहुत ही पुराना था और खंडहर हो चुका था। इलाक्षी उसके सामने खड़ी थी। वो थोड़ी विचलित सी लग रही थी।

"ये हम कहाँ आ गये है?" अभिजीत ने पूछा।

"हम नहीं सिर्फ 'मैं'। मैं भूतकाल में हूँ। उस समय में जब विशल्या के बच्चे को मारने का प्रयास किया गया था। जब तुम जागो तो सरानी को ये बताना कि मैं कहाँ हूँ ताकि वो मुझे वापस ला सके।" इलाक्षी ने जल्दी- जल्दी कहा।

"जब मैं जागूँ? इसका क्या मतलब है? मैं तो पहले से जागा हुआ हूँ।" अभिजीत ने उलझन में कहा।

"अभिजीत! मेरे पास ज्यादा वक़्त नहीं है। मैं बड़ी मुश्किल से केवल तुमसे संपर्क साध पायी हूँ। मेरा वापस आना अब तुम्हारे हाथ में है।" इलाक्षी ने कहा और वो दृश्य धुंधला होने लगा।

"लेकिन... सुनो। मैं कैसे....इलाक्षी..." अभिजीत चिल्लाया।

"इलाक्षीऽऽऽ..." अभिजीत एक झटके के साथ चिल्लाता हुआ उठ बैठा। उसने स्वयं को चिकित्सालय में पाया। सुबह हो चुकी थी। वो पूरी रात बेहोश रहा था। उसने देखा कि सरानी, विशल्या और नैमिष उसके बिस्तर के आसपास थे और उसे आश्चर्य से देख रहे थे। अभिजीत विशल्या को वहां देखकर थोड़ा असहज हुआ। उसने सरानी की ओर देखा।

"सब ठीक है अभिजीत। वो अब हमारी शत्रु नहीं हैं।" सरानी ने मुस्कुराते हुये कहा।

"मैं कभी नहीं थी विशाला।" विशल्या ने कहा। सरानी प्रत्युत्तर में मुस्कुराई। फिर सरानी ने अभिजीत को सारी घटना बतायी। केवल इस बात को छोड़कर कि वो विशल्या का ही पुत्र है। विशल्या ने सरानी को कुछ और समय के लिये अभिजीत को इस रहस्य से वंचित रखने का आग्रह किया था। वो चाहती थी कि इलाक्षी को वापस लाने के पश्चात अभिजीत को ये सत्य बताया जाये।

"क्या बात है? क्या तुमने कोई बुरा स्वप्न देखा।" विशल्या ने अभिजीत से पूछा।

"पता नहीं। सपना था या सच? कुछ समझ नहीं आ रहा। मुझे ऐसे सपने अभी- अभी आने शुरु हुये हैं।" अभिजीत ने अपना सिर पकड़ कर कहा।

"पर तुमनें देखा क्या स्वप्न में?" सरानी ने पूछा। अभिजीत ने उन्हें अपने स्वप्न में देखी हुई, सारी बातें अक्षरशः बता दीं।

"असंभव। क्या तुम सच कह रहे हो? ऐसा कैसे हो सकता है?" सरानी ने स्तब्ध होकर कहा।

"ऐसा हो सकता है।" विशल्या ने कहा। सभी ने उसकी तरफ नजरें घुमा ली।

"अभिजीत मुझे बताओ कि तुम्हारे ये कहने का क्या अर्थ है कि ऐसे स्वप्न तुम्हें अभी-अभी आने शुरु हुये हैं?" विशल्या ने अभिजीत से पूछा।

अभिजीत ने संक्षेप में विशल्या को अपने अभी तक आये सारे स्वप्नों के बारे में बताया। सरानी और नैमिष ने भी अभिजीत के स्वप्नों और उनके सही साबित होने की पुष्टि

की। विशल्या की आँखें संकुचित हो गयी।

“तुम्हारे अंदर भविष्य को अनुभव करने की क्षमता है। जो तुम्हें आने वाली घटनाओं के प्रति सचेत कर देती हैं।” विशल्या ने स्पष्ट करते हुये कहा।

“पर ये सपनें मुझे यहाँ आने के बाद आने शुरु हुये हैं। मुझे कभी ऐसे सपनें नहीं आते। लेकिन इन सपनों का क्या मतलब है? क्या सच में उसने मुझसे संपर्क करने का प्रयास किया था? या ये सिर्फ एक सपना था?” अभिजीत ने पूछा। वो उलझा हुआ था।

“मैं नहीं जानती। वो इस प्रकार सम्पर्क तो स्थापित नहीं कर सकती, परन्तु मैं इतना अवश्य जानती हूँ कि तुम्हारा स्वप्न अर्थहीन नहीं था। हमनें इलाक्षी को ढूंढने के अनेक प्रयत्न किये। किन्तु उसका कोई पता नहीं चला, क्योंकि शायद तुम्हारे अनुसार वो इस काल में है ही नहीं। हमें उसे स्फटिक की सहायता से भूतकाल में खोजना होगा। अगर अभिजीत का स्वप्न सत्य है, तो हमें उसे वहां से शीघ्र वापस लाना होगा।” विशल्या ने अपनी बात रखी।

“क्या वो स्वयं वहाँ से वापस नहीं आ सकती?” अभिजीत ने पूछा।

“नहीं, केवल सरानी ही ऐसा कर सकती है। केवल शक्ति -केंद्र के संरक्षक के पास ही यह अधिकार और शक्ति है कि वह स्वयं या किसी को भूतकाल में भेज सके या वापस ला सके और वह भी किसी विशेष परिस्थिति में।” विशल्या ने समझाकर कहा। अभिजीत ने सर हिलाकर हामी भरी।

“उचित है दीदी। हमें यही करना चाहिए। चलिये।” सरानी ने कहा।

“मैं भी साथ चलूँगा।” अभिजीत ने पलंग से उठते हुये कहा।

“नहीं अभिजीत, अभी तुम्हें विश्राम की आवश्यकता है। हम आकर तुम्हें सूचित कर देंगे।” विशल्या ने कहा।

अभिजीत ने गौर किया कि विशल्या के शब्दों में अब एक अनजाना सा अधिकार और अपनापन सा था, और उसी अधिकार के वशीभूत होकर जाने क्यों अभिजीत ने भी सिर हिलाकर चुपचाप विशल्या की बात मान ली।

“नैमिष! अभिजीत को उसके कक्ष में ले जाओ। हम वापस लौट कर तुम्हें सूचित करेंगे।” सरानी ने कहा। नैमिष ने सिर झुकाकर हामी भरी और अभिजीत के साथ उसके कक्ष की ओर चल दिया।

अभिजीत और नैमिष उसके कक्ष में पहुंचे। और दरवाजा खोलते ही अभिजीत ने देखा कि राकेश के साथ शैलेन्द्र भी कक्ष में बैठा हुआ था।

“तुम होश में आ गये? कब? कैसे?” अभिजीत ने प्रसन्नता से पूछा।

“इसे विशल्या ने ठीक किया जब तुम बेहोश थे।” नैमिष ने उत्तर दिया। “अब तुम विश्राम करो। मैं कुछ समय बाद तुमसे मिलता हूँ।” कहकर नैमिष जाने के लिये मुड़ गया।

“अभिजीत! ये सब चल क्या रहा है? और रात भर तुम थे कहाँ? मैं परेशान हो गया था।” राकेश ने नैमिष के जाते ही कहा।

“अभी मैं कुछ नहीं बता सकता राकेश। फ़िलहाल मुझे इजाज़त नहीं है और मैं ये भी नहीं चाहता कि तुम लोग किसी मुसीबत में पड़ो।” अभिजीत ने शांत स्वर में समझाते हुये कहा।

“लेकिन अभिजीत कुछ तो बताओ? कौन हैं ये लोग और चाहते क्या हैं हमसे? अब तो वो विशल्या भी इनके साथ मिल गयी है।” शैलेन्द्र ने पूछा। वो डरा हुआ था।

“सब ठीक है शैलेन्द्र। डरने की बात नहीं है। ये सब अच्छे लोग हैं।” अभिजीत ने समझाया।

“म म म..मैं कहाँ डर रहा हूँ। मैं तो बस यहाँ से चलने की बात कर रहा हूँ। अब अगर सब कुछ ठीक है तो।” शैलेन्द्र ने झेंपते हुये कहा, जबकि डर उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था।

“मैं तुम्हारी नहीं राकेश की बात कर रहा था। वो डरा हुआ है न?” अभिजीत ने राकेश को आँख मारते हुये कहा। और दोनों हंस पड़े। शैलेन्द्र फिर झेंप गया।

“लेकिन मैं सच कह रहा हूँ। डरने की बात नहीं है, लेकिन मैं तुम लोगों को और किसी मुसीबत में नहीं डाल सकता। मेरी वजह से पहले ही तुम लोग काफ़ी मुसीबतें झेल चुके हो। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से और कोई मुसीबत में पड़े। इसीलिये मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों कल सुबह की गाड़ी से वापस लौट जाओ।” अभिजीत ने इलाक्षी के साथ हुये हादसे के बारे में सोच कर कहा।

“क्या?” राकेश और शैलेन्द्र दोनों के मुँह से एक साथ निकला।

“क्या मतलब है चले जाओ? तुम्हें इन लोगों के बीच अकेला छोड़कर। तुम्हारा दिमाग तो सही है?” राकेश ने गुस्से में कहा।

“राकेश! मुझे कुछ नहीं होगा, मेरा विश्वास करो। मैं जल्दी वापस आऊंगा और सब कुछ बताऊंगा। पर अभी नहीं, अभी तुम लोगों का यहाँ से जाना ठीक रहेगा।” अभिजीत ने राकेश को शांत कराते हुये कहा।

“अभिजीत! मैं नहीं जानता तुम क्या और क्यों कर रहे हो? पर मैं जानता हूँ कि जो तुम करोगे, सही ही करोगे। ठीक है हम लोग कल सुबह निकल जायेंगे।” राकेश ने अभिजीत के कंधे पर हाथ रखते हुये कहा।

“अच्छा हाँ! एक बात बताओ। ये विशल्या किसी की आत्मा को दूसरे आदमी के शरीर में डाल सकती है क्या? मेरे एक दोस्त को शरीर बदलने की जरूरत है। उसका ये वाला शरीर ठीक से काम नहीं करता।” राकेश ने अभिजीत को आँख मारते हुये ऊँची आवाज में कहा। अभिजीत मुस्करा दिया।

“हाँ! वो कर सकती हैं। मेरा भी एक दोस्त है, जिसे इसकी जरूरत है।” अभिजीत ने कहा और वो दोनों शैलेन्द्र की ओर पलटे।

“म..म..मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं ठीक हूँ। मुझे कुछ नहीं बदलना।” इशारा समझते ही शैलेन्द्र डर से काँप गया। अभिजीत और राकेश जोर से हँस पड़े और फिर वो लोग शैलेन्द्र की खिंचाई करने में लग गये।

निर्णय

सरानी और विशल्या शक्ति -केंद्र के सामने प्रकट हुईं। वे दोनों इलाक्षी की स्थिति का पता लगाने के लिये स्फटिक की सहायता प्राप्त करने जा रही थीं। वे द्वार पर पहुँचने के लिये सीढ़ियां चढ़ने लगीं।

“विशाला! क्या तुम कभी मुझे क्षमा कर पाओगी?” विशल्या ने पूछा।

“दीदी आपने ऐसा कुछ किया ही नहीं, जिसके लिये आपको क्षमा माँगनी पड़े। कृपया मुझे लज्जित न करें।” सरानी ने कहा।

“नहीं विशाला! मुझसे भूल हुई है, और इसका परिणाम किसी निर्दोष को भोगना पड़ रहा है। मैं नहीं जानती थी कि मेरे कार्यों का परिणाम इतना बुरा होगा।” विशल्या ने पश्चाताप के स्वर में कहा।

“कुछ बुरा नहीं हुआ है दीदी। हम इलाक्षी को सही सलामत वापस ले आएंगे।” सरानी ने सांत्वना देते हुये कहा। वे द्वार पर पहुँच चुके थे। सरानी ने पूर्व की ही भाँति द्वार खोला और अंदर प्रवेश किया।

“परंतु मेरी समझ में एक बात नहीं आई दीदी। शक्ति स्फटिक अनियंत्रित कैसे हो गया और इलाक्षी भूतकाल में कैसे चली गयी? क्या आपनें इस प्रकार स्फटिक का व्यवहार पहले कभी देखा है?” सरानी ने आश्चर्य से पूछा।

“नहीं! मैंने भी ऐसा पहले कभी नहीं देखा। परन्तु अगर ऐसा हुआ है तो इसमें अवश्य ही नियति का कोई विशेष प्रयोजन होगा। अगर मेरा पुत्र जीवित है, तो अवश्य ही उसकी नियति ने उसके लिये किसी विशेष कार्य का चुनाव किया होगा।” विशल्या ने अनुमान लगाते हुये कहा।

“परन्तु सबसे बड़ा प्रश्न ये है कि जन्म के बाद से अनाथालय पहुँचने तक, इतने वर्षों तक अभिजीत कहाँ रहा?” सरानी ने अपना संशय व्यक्त किया।

“तुम सही हो विशाला। यही प्रश्न मेरे भी मस्तिष्क में घूम रहा है। इन सारी घटनाओं का कुछ न कुछ अर्थ तो है।” विशल्या ने सोचते हुये कहा।

कुछ ही क्षणों पश्चात वे दोनों स्फटिक के सम्मुख खड़ी थीं। उन्होंने पारम्परिक मुद्रा में शक्ति स्फटिक को प्रणाम किया और फिर आँखें बंद करके कुछ मन्त्र बुदबुदाये। फ़िर दोनों हाथ जोड़कर ध्यान मुद्रा में खड़ी रहीं।

“हे शक्तिदायक! अपनी भूल के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरे कर्मों का दंड उस लड़की को मिल रहा है। कृपया इलाक्षी को खोजने में हमारी सहायता करें। ताकि उसे वापस लाकर मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर सकूँ।” विशल्या ने याचना के स्वर में कहा।

पूर्व की भाँति ही स्फटिक से नीली ऊर्जा का घेरा निकला, जिसनें उन दोनों को घेर लिया। कुछ देर तक वो उर्जा के घेरे में अदृश्य रहीं और उसके बाद वो घेरा वापस स्फटिक में सिमट गया।

“अभिजीत सत्य कह रहा था। इलाक्षी वहीं है मेरे समय में। हमें वहां जाना होगा।” विशल्या ने कहा।

“ठीक है दीदी। चलिये अभिजीत को ये बताते हैं और फिर चलने की तैयारी करते हैं।” सरानी ने कहा।

“एक क्षण रुको।” विशल्या ने कहा।

“क्या हुआ?” सरानी ने पूछा।

विशल्या उत्तर देने के स्थान पर स्फटिक की ओर वापस घूमी और उसने हाथ जोड़कर स्फटिक से प्रार्थना के स्वर में कहा, “हे शक्तिदायक! क्या आप मेरे पुत्र के जन्म से लेकर अब तक के समय के विषय में कुछ बता सकते हैं?”

स्फटिक यथावत रहा। उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ क्षणों तक जब कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, तो विशल्या ने निराशा में सिर झटका।

“कोई बात नहीं दीदी, सब समय का खेल है। जब समय आयेगा, सारे प्रश्नों के उत्तर हमारे सम्मुख प्रकट हो जायेंगे। आपने ही कहा था कि नियति ने उसके लिये कुछ विशेष चुनाव किया है। थोड़े समय तक और प्रतीक्षा कीजिये। नियति ने उसके लिये जो

निर्धारित किया है, वह सारे रहस्यों को उजागर कर देगा।" सरानी ने विशल्या के कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना देते हुये कहा।

"तुम ठीक कहती हो बहन। हमें अब उचित समय की ही प्रतीक्षा करनी होगी।" विशल्या ने गहरी साँस लेकर कहा।

अभिजीत और उसके दोस्त भोजन के पश्चात आराम से लेटे हुये बातचीत कर रहे थे कि अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई। राकेश ने उठकर दरवाजा खोला। सामने नैमिष था। नैमिष को देखकर अभिजीत तुरंत उठकर आया।

"कुछ पता चला?" अभिजीत ने चिंतित स्वर में पूछा।

"हाँ! सरानी तुम्हें बुला रही हैं।" नैमिष ने सिर हिलाकर हामी भरते हुये कहा।

"मैं अभी आता हूँ।" अभिजीत ने राकेश से कहा और तेजी से नैमिष के साथ बाहर निकल गया। दोनों तेजी से सरानी के कक्ष की ओर चल दिये।

"क्या पता चला नैमिष?" अभिजीत ने तेजी से सीढ़ियां चढ़ते हुये पूछा।

"मुझे नहीं पता। मुझे सरानी का सन्देश प्राप्त हुआ कि तुम्हें साथ लेकर जल्द से जल्द उनसे भेंट करूँ।" नैमिष ने उत्तर दिया।

"ठीक है। हम बस पहुँच ही गये।" अभिजीत ने कहा। दोनों तेजी से सीढ़ियां चढ़ते हुये सरानी के कक्ष तक पहुँच गये।

उन्होंने जल्दी से द्वार खोला और अंदर प्रवेश किया। कक्ष का द्वार खोलते ही अभिजीत ने देखा कि विशल्या और सरानी आपस में कुछ विचार-विमर्श कर रही हैं। अभिजीत को देखते ही दोनों ने बातचीत बंद की और अभिजीत की ओर मुड़ गयी।

"क्या हुआ? कुछ पता चला?" अभिजीत ने बिना किसी औपचारिकता के कहा।

"धैर्य रखो अभिजीत। चिन्ता की कोई बात नहीं है।" विशल्या ने मुस्कुराते हुये कहा। अभिजीत ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"इलाक्षी का पता चल गया है अभिजीत। वो वहीं है, उसी समय में, जहाँ तुमने उसको अपने स्वप्न में देखा था।" सरानी ने कहा।

"तो फिर देर किस बात की है? चलो उसे वापस ले आते हैं।" अभिजीत ने कहा।

"हाँ बिल्कुल। हम उसी के लिये प्रस्थान करने वाले थे, परन्तु उससे पूर्व हमनें सोचा

कि तुम्हें ये बात बता दिया जाये। हम नैमिष को वहाँ भेज रहे हैं। वो इलाक्षी को सुरक्षित वहाँ से वापस ले आयेगा।” सरानी ने आगे कहा।

“नहीं! इलाक्षी को लेने मैं भी वहां जाऊंगा।” अभिजीत ने विरोध जताते हुये कहा।

“किन्तु अभिजीत...” सरानी ने बोलने के लिये मुँह खोला।

“मुझे कुछ नहीं सुनना। ये सब मेरी वजह से हुआ है, और इसे ठीक भी, मैं ही करूँगा।” अभिजीत ने तैश में आकर कहा।

“अभिजीत!” एक तेज और अधिकारपूर्ण स्वर के साथ विशल्या ने कहा। उसने विशल्या की ओर देखा। विशल्या के चेहरे पर हल्का क्रोध का भाव था। अभिजीत वहीं ठिठक कर शांत हो गया। उसने आगे कुछ नहीं कहा।

“अभिजीत! कदाचित तुम भूल गये हो कि अपने से बड़ों से सम्मान में बात की जाती है।” विशल्या ने कहा और अभिजीत ने अपनी नजरें झुका ली और चुपचाप बात को सुनने लगा।

“मैं जानती हूँ कि तुम स्वयं को इन सब का दोषी मानते हो। परन्तु जो तुम करना चाहते हो, वह आसान नही हैं। केवल प्रतिहारी ही काल-यात्रा करके भूतकाल में जा सकते हैं। अगर हम वहां तुम्हें भेज भी दें, तो तुम्हें वहां संकट के समय जिन तंत्र शक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी, वो भी तुम्हारे अंदर विद्यमान नहीं हैं।” विशल्या ने बात पूरी करते हुये कहा।

“संकट? कौन सा संकट? क्षमा कीजिये, परन्तु हमें जाकर बस इलाक्षी को वापस ही तो लाना है। वहाँ रहना थोडे ही है। इसमें समय ही कितना लगेगा? और अगर ऐसी ही बात है, तो थोड़ी बहुत तंत्र शक्तियाँ मुझे भी दे दीजिये। लौट कर आने पर वापस ले लीजियेगा।” अभिजीत ने खुद को संयमित रखने की कोशिश करते हुये कहा।

“ये सब आसान नहीं है अभिजीत। इसमें बहुत समय लगेगा और चूँकि तुम प्रतिहारी नहीं हो इसीलिये तुम्हें शक्तियां प्रदान करना संभव नहीं है।” नैमिष ने कहा।

“लेकिन क्यों?” अभिजीत ने सरानी से पूछा।

“जब मैं यहाँ आया था, तब आपने ही कहा था न कि शक्ति- केंद्र इस क्षेत्र में आने वाले किसी भी प्रतिहारी या असुर की सुचना तुरन्त आपको देता है। लेकिन मैं तो कोई असुर नहीं हूँ और न ही प्रतिहारी हूँ फिर मुझे शक्ति- केंद्र ने क्यों चुना? क्या ये अजीब नहीं हैं?” अभिजीत ने अपना तर्क रखा।

सरानी और विशल्या सोचने पर विवश हो गईं। उन्होंने एक दूसरे को एक क्षण के लिये देखा। विशल्या ने धीमे से सिर हिलाया।

“ठीक है अभिजीत, हम तुम्हें इलाक्षी को वापस लाने के लिये वहां भेजेंगे। परन्तु उससे पूर्व तुम्हें शक्तियाँ प्रदान की जाएँगी। परन्तु एक बात तुम्हें याद रखनी होगी ,

ये कोई खेल नहीं है। शक्तियां तुम्हें प्रशिक्षण के द्वारा अर्जित करनी होंगी और उसके लिये परीक्षा भी देनी होगी। शक्तियां तुमसे वापस नहीं ली जा सकेंगी। तुम एक प्रतिहारी कहलाओगे। और उन सभी नियमों का पालन करोगे, जो एक प्रतिहारी को करने होते हैं। क्या तुम्हें ये स्वीकार है?" सरानी ने गंभीर स्वर में कहा।

अब सोचने की बारी अभिजीत की थी, वो असमंजस में था। उसने अपने दोस्तों और अपने जीवन के बारे में कुछ क्षण सोचा। वो हमेशा के लिये यहीं का हो जायेगा। दुनिया के लिये उसका अस्तित्व मिट जायेगा। एक नया जीवन शुरू होगा, नयी जिम्मेदारियों के साथ और नए अनुभवों के साथ। उसने इलाक्षी के विषय में सोचा। शायद वो उसे पसंद करने लगा था। उसने इलाक्षी के साथ अपने भविष्य के बारे में भी सोचा। फिर उसने अपनी आँखें बंद करके एक गहरी साँस ली और मन में निर्णय ले लिया। उसने अपनी आँखें खोली। सरानी, विशल्या और नैमिष उसकी तरफ ही देख रहे थे।

"मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है।" उसने एक विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"ठीक है। परन्तु मैं तुम्हें अब भी थोड़ा और विचार करने का अवसर देती हूँ। हम कल सुबह से प्रशिक्षण प्रारम्भ करेंगे। यदि तब तक तुम अपना निर्णय बदलना चाहो, तो बदल सकते हो।" सरानी ने मुस्कराते हुये कहा। अभिजीत ने सर हिलाकर सहमति प्रदान की।

"परन्तु प्रशिक्षण में तो बहुत समय लगेगा। तब तक इलाक्षी का क्या होगा?" अभिजीत ने अचानक मन में आये प्रश्न को पूछा।

"उसकी चिंता मत करो। हम तुम्हें ठीक उस समय के कुछ क्षणों के पश्चात् भूतकाल में पहुंचाएंगे, जिस समय में इलाक्षी वहाँ पहुँचेगी।" विशल्या ने अभिजीत के प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा।

"क्या आप ऐसा कर सकती हैं?" अभिजीत ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ बिल्कुल। एक बार उसकी स्थिति और समयकाल का पता चलने के पश्चात ये बहुत ही आसान कार्य है। इलाक्षी को वहां ज्यादा समय व्यतीत नहीं करना पड़ेगा।" विशल्या ने मुस्कराकर कहा। अभिजीत ने मुस्कराकर सहमति में सिर हिलाया।

"ठीक है। एक बात और मैंने अपने मित्रों को यहाँ से जाने के लिये मना लिया है। मैंने उन्हें आप लोगों के बारे कुछ भी नहीं बताया है। मैं आपसे वादा करता हूँ कि वो कभी इस विषय में किसी से कुछ नहीं कहेंगे। कृपया उन्हें यहाँ से जाने की अनुमति दें।" अभिजीत ने सरानी से विनती करते हुये कहा।

"मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है। मैं कल उनके जाने की व्यवस्था कर दूंगी।" सरानी ने आश्वासन दिया।

"अब मुझे चलना चाहिए।" अभिजीत ने नमस्ते में हाथ जोड़ दिये और वहाँ से जाने के लिये मुड़ गया। उसके कक्ष से बाहर जाने के पश्चात् सरानी विशल्या की ओर मुड़ी।

“दीदी! क्या ये उचित है? हम उसे बाध्य नहीं कर सकते कि वो प्रतिहारी बने। अभी वो ऐसा अपनी ऐसी गलती सुधारने के लिये कर रहा है, जो उसने की ही नही है। यदि समय बीतने के पश्चात् कभी उसने इस जिम्मेदारी से दूर जाने का निर्णय लिया तब क्या होगा?” सरानी ने चिंतित स्वर में पूछा। विशल्या ने गर्वीली मुस्कान के साथ सरानी की ओर देखा।

“वो मेरा पुत्र है विशाला। ये उसकी नियति है। आज नहीं तो कल सत्य जानने के पश्चात् उसका निर्णय यही होता। मुझे लगता है, उसका भूतकाल में जाने की जिद करना नियति का ही कोई खेल है। हो सकता है शायद वो वहाँ जाकर अपने जन्म का सत्य जान ले। इसीलिये मैंने उसे प्रशिक्षित करने की बात रखी थी, क्योंकि उसे वहाँ इन शक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी।” विशल्या ने कहा।

“आप उचित कह रही हैं दीदी। शायद ये नियति की ही इच्छा है।” सरानी ने कहा।

अगली सुबह की पहली गाड़ी से जाने के लिये राकेश और शैलेन्द्र स्टेशन पहुंचे। नैमिष और अभिजीत उन्हें छोड़ने आये थे। सुबह होने वाली थी, पर अभी भी अँधेरा था। स्टेशन पर ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं थी। नैमिष साधारण कपड़ों में था।

“तुम दोनों अपना ख्याल रखना और मेरे वापस आने तक कहीं अकेले घूमने मत चले जाना।” अभिजीत ने दोनों से बारी- बारी गले मिलते हुये कहा।

“हाँ हाँ। सारा घूमने- घुमाने का ठेका तो तुमने ले रखा है। है न?” राकेश ने मुस्कुराते हुये कहा।

“अभिजीत! क्या अब भी कुछ ऐसा नहीं है, जो तुम मुझे बताना चाहो?” राकेश ने अभिजीत से कहा फिर उसने एक नजर नैमिष पर डाली। वो जानता था अभिजीत उसके सामने कुछ नही कहेगा। अभिजीत ने मुड़कर नैमिष की तरफ देखा और सिर हिलाकर इशारा किया। नैमिष थोड़ी दूर चला गया।

“राकेश! मैं तुम्हें सब कुछ नहीं बता सकता, पर मैंने एक बहुत बड़ा फैसला लिया है और मैं अब हमेशा यहीं रहूँगा। इन लोगों के साथ, इनके जैसा ही बनकर।” अभिजीत ने कहना शुरु किया।

“लेकिन अभिजीत...” राकेश ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन अभिजीत ने

उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे चुप करा दिया और आगे कहना जारी रखा उसके स्वर में गंभीरता थी।

“मेरी बात ध्यान से सुनो राकेश। तुम दोनों मेरे इकलौते सबसे अच्छे दोस्त हो। तुमने आज तक मेरा हर कदम पर साथ दिया है और मेरी हर जिद को सहा है। मुझसे बस एक वादा करो। ये सब कुछ जो यहाँ पर हुआ है, वो तुम दोनों कभी किसी को नहीं बताओगे। क्या तुम मेरे लिये इतना करोगे?” अभिजीत ने कहा।

“तुम्हारे लिये हम कुछ भी करेंगे। क्या तुम हमसे मिलने भी कभी नहीं आओगे?” शैलेन्द्र जो अभी तक चुपचाप खड़ा था, उसने कहा।

“दोस्त कभी अलग नहीं होते। और न ही दोस्ती कभी ख़त्म होती है। मैं जल्दी ही तुमसे मिलने आऊँगा। और वैसे भी तुम्हारे बिना मैं क्या करूँगा। बस भाई ये तम्बाकू खाना छोड़ दे। हाथ जोड़कर विनती है।” अभिजीत ने कहा।

“अरे हाँ, अच्छा याद दिलाया। सुबह उठने के बाद से आज मैंने खाया ही नहीं।” शैलेन्द्र ने जेब से तम्बाकू का पैकेट निकाल कर खीसें निपोरते हुये कहा। अभिजीत ने मुँह बनाकर उसे देखा।

“रहने दो अभिजीत। वो नहीं सुधरेगा। तुम जानते तो हो कि सूअर टट्टी और कुत्ता हड्डी खाना कभी नहीं छोड़ता।” राकेश ने हँसते हुये कहा।

“भाड़ में जाओ तुम दोनों।” शैलेन्द्र ने गुस्से में कहा और फिर तीनों जोर- जोर से हंसने लगे। इतने में ट्रेन की सीटी बजी और वो तीनों एक बार फिर जल्दी- जल्दी एक-दूसरे गले मिले। फिर वो दोनों ट्रेन में चढ़ गये और ट्रेन धीरे- धीरे आगे बढ़ गयी।

प्रशिक्षण

अभिजीत सुबह जल्दी ही उठ गया था। उसे अपने निर्णय को बदलने के लिये सोचने का अवसर प्रदान किया गया था। परन्तु उसे सोचने की आवश्यकता नहीं थी। उसने यह निर्णय जल्दबाज़ी में नहीं, बल्कि बहुत सोच समझ कर लिया था। वो बचपन से ऐसा ही था। वह कभी भी किसी भी चीज को करने के लिये सोचने में समय बर्बाद नहीं करता था। उसका मानना था कि कोई भी कार्य करने से पूरा होता है न कि सोचने से। ऐसा नहीं था कि वो बिना सोचे समझे कोई भी निर्णय ले लेता था। वो सोचता था परन्तु केवल इतना कि उस कार्य को कैसे किया जाये। वो परिणाम की उतनी चिंता नहीं करता था, क्योंकि उसकी सोच और पुर्वानुमान कभी गलत नहीं होते थे।

वो अपने कक्ष में खिड़की के पास खड़ा हुआ था। खिड़की के बाहर का दृश्य उसे आकर्षित कर रहा था। उसने इस बात पर आज सुबह ही ध्यान दिया था। बाहर कुछ दूरी पर एक छोटी पहाड़ी थी, जिसके पीछे से अंधेरे की चादर को हटाता और प्रातःकाल की लालिमा बिखेरता हुआ सूर्य उदय हो रहा था। उसने बादलों की हलकी सी परतों के बीच से नारंगी सूर्य को निकलते हुये देखा। ये दृश्य हमेशा उसे एक सुखद अनुभूति और ऊर्जा प्रदान करता था। नैमिष के आने की आहट से उसका ध्यान भंग हुआ।

"अरे! तुम तो तैयार खड़े हो। क्या देख रहे हो?" नैमिष ने मुस्कराते हुये पूछा।

"एक नये जीवन की शुरुआत देख रहा हूँ। अब बस देखना ये है कि इस शुरुआत का अंत कहाँ होता है।" अभिजीत ने बिना मुड़े उसी दृश्य को देखते हुये कहा।

"पता है, अकेला तो सूर्य भी है, परन्तु फिर भी वो चमकता है और दूसरों को रौशनी भी दिखाता है। तुम्हारी नियति भी कुछ ऐसी ही है।" नैमिष ने मुस्कुराते हुये कहा। अभिजीत ने उसकी ओर मुस्कराकर देखा। और फिर दोनों सरानी के कक्ष की ओर चल दिये।

सरानी के कक्ष में पहुँचने पर अभिजीत ने देखा कि सरानी विशल्या के साथ मुख्य कक्ष के बीचोंबीच खड़ी हुई थी और कुछ वार्तालाप कर रही थी।

अभिजीत के आते ही दोनों अभिजीत की ओर मुड़ी। अभिजीत ने उन्हें आश्चर्यचकित करते हुये प्रतिहारियों की पारम्परिक मुद्रा में अपना दाहिना हाथ आगे प्रणाम की मुद्रा में लाकर और बायाँ हाथ पीछे रखकर आगे झुककर प्रणाम किया। नैमिष भी जो कि प्रणाम कर रहा था, ये देख के चकित रह गया।

"प्रणाम स्वीकार करें, सरानी।" अभिजीत ने कहा। विशल्या ने मुस्कराकर सरानी की ओर देखा। सरानी ने भी प्रत्युत्तर में सिर हिलाया। विशल्या अपने सही साबित होने और अपने पुत्र के निर्णय पर गर्वित थी। उसे एक दिन पूर्व ही सरानी के आग्रह पर शक्ति -केंद्र के नागरिकों द्वारा पुनः प्रतिहारी के रूप में सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया था। वो प्रसन्न थी कि उसे उसका परिवार पुनः वापस मिल गया था। सरानी ने तो उसे शक्ति- केंद्र का संरक्षक बनने के लिये भी निवेदन किया, परन्तु विशल्या ने आदर पूर्वक वो निवेदन अस्वीकार कर दिया। वो चाहती थी, अब वो अपने पुत्र के साथ बाकी का जीवन व्यतीत करे और उसे इस योग्य बनाये कि एक प्रतिहारी होने के दायित्वों का पूर्ण क्षमता से निर्वहन कर सके।

"अभिजीत! प्रतिहारियों में तुम्हारा स्वागत है। मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने अपना निर्णय ले लिया है। क्या तुम प्रशिक्षण के लिये तैयार हो?" सरानी ने पूछा।

"जी हां। मैं बिल्कुल तैयार हूँ।" अभिजीत ने कहा।

"ठीक है, तो फिर आओ प्रारम्भ करते हैं।" सरानी ने कहा और फिर वो सभी कक्ष से बाहर निकले। सीढियाँ उतर कर वो मुख्य भवन से बाहर निकले और उस प्रांगण में आ गये, जहाँ फव्वारा अपने पुरे आबोताब से रंगीन पानी की छटा बिखेर रहा था। वो फव्वारे के बायीं ओर से होते हुये एक कक्ष क ओर बढ़े, जिसका दरवाजा थोडा बड़ा था। नैमिष ने आगे बढ़कर कक्ष का दरवाजा खोला और सभी लोगों ने सरानी के पीछे उस कक्ष में प्रवेश किया। अभिजीत का चेहरा उस कक्ष में प्रवेश करते ही विस्मय और प्रसन्नता के मिश्रित भावों से युक्त हो गया।

उसके सामने एक विशाल पुस्तकालय था। कक्ष में चारों ओर लकड़ी की अलमारियां करीने से रखी हुई थीं। कुछ अलमारियां कक्ष के मध्य में भी रखी हुई थीं, जो कि कक्ष को कई भागों में बाँट रही थी। कक्ष के मध्य में ही एक खाली जगह भी थी, जहाँ पर एक बड़ी से आयताकार मेज थ, जिसके चारों ओर कुर्सियां सजी हुई थीं। अभिजीत ने देखा कि उस कक्ष में हर प्रकार की नई और पुरानी किताबें थीं। अभिजीत की पढ़ने की आदत के अनुसार ये कक्ष उसके लिये फायदेमन्द था। वो किताबों को देखता और छूता हुआ उस कक्ष में घूमने लगा।

"ये बहुत ही शानदार है।" अभिजीत ने कहा। उसकी आवाज में एक ख़ुशी थी, सभी ने उसकी ओर मुस्कराकर देखा।

“ये हमारा अध्ययन कक्ष है। यहाँ हमारी सभ्यता से सम्बंधित हर पुस्तक है। इसके साथ ही इसमें समय- समय पर हर काल की पुस्तकों को भी जोड़ा जाता रहा है।” सरानी ने अभिजीत को बताया।

“इन बक्सों में क्या है?” अभिजीत ने पुस्तकालय के एक भाग की ओर इशारा करते हुये कहा। जहाँ अलमारियों में कुछ लकड़ी के बक्से रखे हुये थे।

“उनमें ताड़पत्रों पर लिखे हुये अभिलेख और ग्रन्थ हैं। इन्हें सुरक्षित रखने की अधिक आवश्यकता होती है।” सरानी ने कहा।

“हम्म... पर हम यहाँ आये क्यों हैं? हमें तो प्रशिक्षण के लिये जाना है न?” अभिजीत ने पूछा।

“तुम्हें याद है न मैंने कहा था कि हम अपनी शक्तियों का प्रयोग तंत्र सिद्धांतों में वर्णित मन्त्रों के रूप में करते हैं। यहाँ तुम्हें उन्हीं पुस्तकों का अध्ययन करना है। इसमें नैमिष तुम्हारी सहायता करेगा। इसके अतिरिक्त किसी भी संशय की स्थिति में तुम विशल्या या मुझसे सीधे संपर्क कर सकते हो और शुरुआत तुम इस पुस्तक से करोगे।” सरानी ने पास की एक अलमारी से एक किताब निकाली और अभिजीत को दे दी।

अभिजीत ने वो किताब अपने हाथ में ले ली। वो एक मोटी सी पुरानी किताब थी। जिसके पन्ने बहुत पुराने और पीले पढ़ चुके थे। अभिजीत ने उस किताब को देखने के लिये खोला। उसमें लिखावट के बीच- बीच में कई चित्र भी बने हुये थे।

“ये तो कुंडली को जाग्रत करने के विषय में है।” अभिजीत ने किताब से सिर उठाकर सरानी से कहा।

“हाँ, तन्त्र शक्तियों को साधने के लिये कुंडली का जाग्रत होना आवश्यक है। सामान्यतः कुंडली को जाग्रत करने के लिये कुंडलिनी के सातों चक्रों को एक- एक करके जगाया जाता है। परन्तु विशेष स्थिति में ये कार्य शक्तिपात द्वारा किया जाता है। शक्तिपात योग अथवा शक्तिपात द्वारा आध्यात्मिक शक्ति एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को प्रदान की जाती है। मुख्यत: यह गुरु द्वारा अथवा उन्नत पुरुष द्वारा अपने शिष्य को प्रदान की जाती है। इसमें मंत्र अथवा किसी पवित्र शब्द, नेत्रों से, विचारों से अथवा स्पर्श से धारक के आज्ञाचक्र पर शक्ति पात किया जा सकता है। यह योग्य शिष्य पर गुरु द्वारा की गई कृपा समझी जाती है। इस शक्तिपात से कुंडलिनी जागृत होने लगती है।

कुंडलिनी जागृत होने के उपरांत, किस गति से कुंडलिनी ऊपर की दिशा में जाती है, वह शिष्य के निरंतर और लगातार साधना के बढते हुये प्रयासों पर निर्भर करता है। तुम्हें भी इसी प्रक्रिया से गुजरना है और अपनी कुंडली को जाग्रत करना है। परन्तु पहले तुम इस पुस्तक का पूर्ण अध्ययन करोगे।” सरानी ने अभिजीत को समझाया।

“जी। मुझे पढ़ना बहुत पसंद है। मेरे लिये ये आसान होगा। “ अभिजीत ने मुस्कराकर

कहा और जाकर मेज पर बैठ गया। नैमिष भी उसके पास जाकर बैठ गया। सरानी और विशल्या अन्य कार्यों के लिये कक्ष से बाहर निकल गयी।

“दीदी! मेरा एक निवेदन है।” सरानी ने कक्ष से बाहर निकलकर कहा। विशल्या ने सरानी की ओर देखा और सिर हिलाकर सहमति दी।

“मैं चाहती हूँ कि अभिजीत को आप प्रशिक्षित करें। उसको आपसे अच्छा गुरु नहीं मिल सकता। इसके साथ ही आप उसके साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत कर पाएंगी।” सरानी ने आगे कहा।

“ठीक है। मैं जानती हूँ, तुम्हारे कई अन्य दायित्व हैं। परन्तु तुम्हें भी समय- समय पर अभिजीत के प्रशिक्षण में सहायता करनी होगी।” विशल्या ने कहा और सरानी ने मुस्करा कर हामी भरी।

पूरे दिन अभिजीत ने नैमिष की सहायता से उस किताब का अध्ययन किया। इसके साथ ही उसने नैमिष से जिद करके तंत्र विद्या से सम्बंधित कई अन्य पुस्तकों को उठवा लिया और उनका भी अध्ययन कर डाला। अभिजीत बहुत ही जल्दी सीखने वाला व्यक्ति था। उसमें लगन थी और वो कभी भी किसी काम को करने से पीछे नहीं हटता था।

अगले दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में विशल्या ने शक्तिपात द्वारा उसकी कुण्डलिनी जाग्रत करने की प्रक्रिया आरम्भ की। नैमिष भी वहां उपस्थित था।

वो तीनों शक्ति -केंद्र में थे। अभिजीत के प्रशिक्षण के लिये शक्ति- केंद्र के प्रांगण का चयन किया गया था। अभिजीत ने नैमिष के जैसी पोशाक पहनी हुई थी। उसने काले रंग की एक चुस्त पैंट पहन रखी थी, जिस पर घुटनों से कुछ नीचे की लंबाई तक वाले जूते थे। ऊपरी हिस्से में उसने काले ही रंग की एक टी शर्ट पहनी हुई थी और उसके ऊपर उसने एक गहरे नीले रंग का कोट पहना हुआ था। कोट उसके घुटनों की लंबाई तक का था और उसकी आस्तीनें कलाइयों तक लंबी थी। कोट कमर पर एक पट्टी से बंधा हुआ था।

अभिजीत पद्मासन की मुद्रा में आँखें बंद किये हुये बैठा हुआ था। विशल्या उसके ठीक पीछे खड़ी हुई थी। उसकी आँखें बंद थी और दायाँ हाथ अभिजीत के सिर पर रखा हुआ था। वो कुछ मन्त्र बुदबुदा रही थी। कुछ देर बाद वो अभिजीत के सामने आई। उसने अभिजीत के माथे पर दोनों भौहों के मध्य में,जहाँ आज्ञाचक्र स्थित होता है, अपने दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा उँगलियाँ रखीं और आँखे बंद करके फिर से कुछ मन्त्र बुदबुदाये। उँगलियों और माथे के बीच हल्की सी रोशनी प्रस्फुटित हुई।

एक झटके के साथ अभिजीत को लगा कि उसका शरीर बहुत हल्का हो गया है और हवा में उठने लगा है। उसे लगा जैसे उसे हलके बिजली के झटके से लग रहे हो। एक अनजानी ऊर्जा उसे अपने शरीर में बहती हुई महसूस हुई और उसके अंग उस ऊर्जा के बहाव से फड़कने लगे। उसकी आँखें पहले से ही बंद थीं, परन्तु उसे लगा कि उस पर

बेहोशी सी छा रही है और सारा संसार उसके चारों और तेजी से घूमने लगा है। उसे अपनी बंद पलकों में लाल रोशनी महसूस हुई जो धीरे- धीरे पहले पीली और फिर सफ़ेद हो गई और बहुत तेज चमकने लगी। उसे लगा जैसे किसी दिव्य स्रोत से एक रोशनी की लहर आ रही है और उसे चारों ओर से घेर रही है।

एक अजीब सी शान्ति ने उसे घेर लिया और धीरे -धीरे सब शांत हो गया। उसे लगा जैसे किसी गहरे कुएँ से गूँजती कोई आवाज़ उसका नाम पुकार रही है। धीरे-धीरे वो आवाज स्पष्ट और तेज होती गयी और एक झटके से उसने अपनी आँखें खोल दी। उसने देखा विशल्या उसके सामने खड़ी उसका नाम पुकार रही थी। उसकी आँखों का रंग बदलकर नीला हो गया था। और उसका चेहरा वैसे ही तेज़ से दमक रहा था जैसा उसने बाकी प्रतिहारियों के चेहरों पर देखा था। विशल्या उसे देखकर मुस्करा दी।

“कैसा लग रहा है अभिजीत?” विशल्या ने पूछा।

“मैं ठीक हूँ। एक अजीब सी शांति और ऊर्जा का एहसास हो रहा है। ऐसा लग रहा है, जैसे नस -नस में चिंगारियां दौड़ रही हों।” अभिजीत ने कहा।

“कुछ समय के पश्चात तुम इसके अभ्यस्त हो जाओगे।” विशल्या ने कहा और उसकी आँखों में ध्यान से देखने लगी। अभिजीत की नीली हो चुकी आँखें चमक रही थी।

“क्या हुआ?” अभिजीत ने विशल्या को इस प्रकार देखते हुये पूछा।

“कुछ नहीं।” विशल्या ने ’न’ में सर हिलाया और मुस्कराकर कहा।

“आओ अंदर चलो शक्ति स्फटिक का आशीर्वाद ले लो। “ विशल्या ने शक्ति-केंद्र की ओर इशारा करके कहा। तीनों शक्ति केंद्र में गये और पारम्परिक मुद्रा में शक्ति स्फटिक का अभिवादन किया। शक्ति स्फटिक एक क्षण के लिये थोड़ा तेज़ चमका मानो अभिजीत को आशीर्वाद दे रहा हो।

“अभिजीत! मेरे विचार में तुम्हें अब थोड़ा विश्राम करना चाहिए। उसके बाद तुम्हें कुछ पुस्तकों का अध्ययन करना है, जिनके बारे में नैमिष तुम्हें बता देगा। हम शाम को प्रशिक्षण आरम्भ करेंगे।” विशल्या ने कहा। अभिजीत आगे बढ़ा और उसने झुककर विशल्या के पैर छू लिये। विशल्या ने प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरा।

“मुझे अपना शिष्य बनाने के लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिये ताकि मैं आप जैसा बन सकूँ।” अभिजीत ने खड़े होकर हाथ जोड़े और कहा।

“तुम्हें मुझसे भी योग्य बनकर दिखाना है।” विशल्या ने मुस्कराकर कहा। और तीनों वापस महल में लौट आये।

अभिजीत अपने कक्ष में आया और मुँह -हाथ धोकर शीशे के सामने आकर खड़ा हुआ। उसने शीशे में खुद को देखा और विस्मित रह गया। वो शीशे के थोड़े और पास आया और अचरज से खुद को देखने लगा। वो समझ गया कि विशल्या ने उसकी ओर

ध्यान से क्यों देखा था।

उसकी आँखों का रंग उसी तरह चमकदार नीला हो गया था जिस प्रकार विशल्या की आँखें लाल और सरानी की आँखें हरे रंग की थी और उसके माथे पर उसकी भौहों तक एक खड़ी रेखा बन गई थी और भौहों के मध्य में एक चक्र बना हुआ था। ये वैसा ही चिन्ह था जो उसने सभी प्रतिहारियों के माथे पर देखा था। इसका अर्थ था कि अब वो भी एक प्रतिहारी था।

बाकी का पूरा दिन अभिजीत ने नैमिष के साथ विशल्या द्वारा बताई गयी पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत किया। शाम को निश्चित समय पर अभिजीत नैमिष के साथ शक्ति-केंद्र पहुँच गया। शाम हो रही थी और आसमान में सूर्यास्त की लालिमा छाना शुरु हो गयी थ। विशल्या पहले से वहां उपस्थित थी। दोनों ने विशल्या का अभिवादन किया और खड़े हो गये। विशल्या ने इशारा किया तो नैमिष अभिजीत से कुछ दूरी पर जाकर खड़ा हो गया।

“अभिजीत! तंत्र विद्या सामान्य मानवों की सोच से परे है। उनके लिये एक भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं है। यहाँ हम वो करते हैं, जो कोई नहीं कर सकता। हम संसार को सुरक्षित रखते हैं, उन मायावी शक्तियों और असुरों से जो मानवों पर राज करना चाहती हैं। ये हमारा कर्तव्य है और दायित्व भी। सबसे पहले तुम्हें रक्षा मन्त्रों का अभ्यास करना सीखना होगा। क्योंकि संकट के समय में यही तुम्हारे काम आएंगे। क्या तुमने मंत्रो का ठीक से अध्ययन किया है?” विशल्या ने कहा।

“हाँ, मुझे सारे मन्त्र ठीक से याद हैं।” अभिजीत ने कहा।

“तो फिर बचो।” कहते हुये एकाएक विशल्या ने अभिजीत पर तंत्र वार कर दिया। अभिजीत को सम्भलने का अवसर नहीं मिला। उसे वार लग गया और वो पीछे की ओर जा गिरा। अभिजीत को ज्यादा चोट नहीं लगी, क्योंकि उसकी कुंडली जाग्रत हो चुकी थी। अब वो ऐसे छोटे- मोटे वार झेलने में सक्षम था।

“अभिजीत! मन्त्रों को रटने से कुछ नहीं होगा। तुम्हें ध्यान लगाना होगा और अपने अंदर के ऊर्जा को केंद्रित करके बाहर निकलने का प्रयास करना होगा। एक बार फिर से कोशिश करो। “ विशल्या ने समझाया और अभिजीत फिर से तैयार हो गया।

विशल्या ने अभिजीत पर दोबारा वार किया। इस बार अभिजीत संभल चुका था। उसने खुद को संयमित किया और वार रोकने के लिये अपने हाथ आगे कर दिये। एक जोरदार झटके से अभिजीत के कदम पीछे हट गये। उसके हांथों से निकली तंत्र ढाल ने विशल्या के वार को रोक लिया था। विशल्या प्रसन्नता के साथ रुक गयी।

“बहुत अच्छे। अब एक बार फिर से कोशिश करो।” विशल्या ने कहा और फिर से अभिजीत पर वार करना शुरू कर दिया और साथ ही आँख के इशारे से नैमिष को आदेश

दिया। विशल्या के वार को रोकते ही नैमिष ने भी अभिजीत पर वार करने शुरू कर दिये।

अभिजीत दो अलग -अलग दिशाओं से आने वाले वारों को अपने दोनों हाथों से बनी तंत्र ढाल के द्वारा रोकने की भरपूर कोशिश करने लगा। एकाएक विशल्या और नैमिष ने वार रोक दिये और अभिजीत की ओर देखा। अभिजीत की धड़कनें तेज़ थीं, और, और वो हांफ भी रहा था। लेकिन उसके चेहरे पर संतोष की मुस्कान थी। वो उनके वारों को रोकने में सफल हो गया था।

अगले कुछ दिनों तक अभिजीत अपना प्रशिक्षण पूरी लगन और मेहनत से लेता रहा। उसे तंत्र विद्या के साथ- साथ अन्य युद्ध कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया गया। उसकी दिनचर्या में सुबह- शाम प्रशिक्षण लेना और दोपहर तथा रात में अध्ययन शामिल था।

“नैमिष! हम जबसे मिले हैं, तब से साथ हैं, परन्तु मैं तुम्हारे विषय में कुछ भी नहीं जानता। अपने बारे में कुछ बताओ?” अभिजीत ने पूछा। नैमिष मुस्करा दिया। वो दोनों दोपहर में पुस्तकालय में थे और थोड़ी देर विश्राम करने के लिये अध्ययन रोक दिया था।

“मेरे माता पिता का देहांत एक अभियान के दौरान हो गया था। तब मैं 10 साल का था। मेरा पालन पोषण सरानी ने किया, उन्होंने मुझे शिक्षण और प्रशिक्षण दिलाया और मुझे इस योग्य बनाया। उन्होंने मुझे अपना अंगरक्षक नियुक्त किया और तब से ही मैं उनकी सेवा करता आ रहा हूँ।” नैमिष ने बताया। अभिजीत ने उसके कंधे पर हाथ रखा और उसकी तरफ देखकर मुस्करा दिया।

एक दिन प्रातःकाल में अभिजीत और नैमिष शक्ति-केंद्र के प्रांगण में प्रशिक्षण आरम्भ होने से पूर्व युद्धाभ्यास कर रहे थे। अभिजीत तेजी से युद्ध कला में पारंगत हो रहा था। उसके सीखने की गति अद्भुत थी। उसने कम समय में ही कई तंत्र शक्तियों में महारत हासिल कर ली थी। उसके साथ- साथ नैमिष ने भी विशल्या से नयी-नयी तंत्र विद्याएं सीखना आरम्भ कर दिया था।

कुछ समय पश्चात् विशल्या वहां उपस्थित हुई। दोनों ने अभ्यास रोक दिया और उसे प्रणाम किया। विशल्या ने हाथ के संकेत से उनके अभिवादन का उत्तर दिया।

“अभिजीत आज मैं तुम्हें दूर प्रेषण अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की विद्या सिखाउंगी। क्या तुम बता सकते हो, हम ये कैसे करते हैं?” विशल्या ने पूछा।

“हाँ, शायद मैंने पढ़ा था कि हम आयामों को पार करके अपने मन चाहे स्थान पर जा सकते हैं। परन्तु ऐसा कैसे होता है, ये मुझे नहीं पता।” अभिजीत ने उत्तर दिया।

“कोई बात नहीं। मैं समझाती हूँ। देखो! सर्वप्रथम तुम्हें जहाँ जाना है, वो स्थान तुम्हारे द्वारा देखा हुआ होना चाहिए, क्योंकि जहाँ तक तुम्हारी दृष्टि जा सकती है, तुम उतनी दूर तक ही प्रेषित हो सकते हो। अब यदि तुम ऐसे स्थान पर जाना चाहते हो, जो तुमने नहीं देखा है, तब तुम्हें विभिन्न आयामों को पार करके अपने गंतव्य तक पहुँचना होगा। हमारे

आसपास असंख्य आयाम हैं, जो कि हमें दिखाई नहीं देते। परन्तु हम अपनी तन्त्र विद्या के द्वारा उन आयामों में प्रवेश कर सकते हैं, जो अन्य आयामों के द्वार खोलता है और जिस स्थान पर हमें जाना है, उस आयाम का द्वार खोज कर हम अपने गंतव्य तक पहुँच सकते हैं। परन्तु याद रखना आयाम द्वारों की भूल- भुलैया में अपना गंतव्य खोजना सरल कार्य नहीं है। मेरे पास आओ। अब मैं तुम्हें आयामों की उस भूल -भुलैया में ले चलती हूँ। वहां मैं तुम्हें मार्ग खोजना सिखाऊँगी।" विशल्या ने हाथ बढ़ाकर कहा।

अभिजीत और नैमिष ने विशल्या का हाथ पकड़ा और तीनों ने एक घेरा बना लिया। वो तीनों ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गये। अचानक अभिजीत ने स्वयं को एक अलग ही दुनिया में पाया। चारों तरफ रंग बिरंगी रोशनी की लहरें आ -जा रहीं थी और वहां बहुत सारे चमकती रेखाओं से बने आयाम द्वार दिखाई दे रहे थे।

"यही है, आयामों की भूल-भुलैया। यहाँ विश्व के प्रत्येक स्थान पर जाने का द्वार है, बस उसे खोजने की आवश्यकता है। जैसे कि वहाँ देखो वह हमारे यूरोप के शक्ति- केंद्र में जाने का द्वार है। " विशल्या ने एक द्वार की ओर संकेत करते हुये कहा।

"यूरोप? तो क्या शक्ति- केंद्र सारी दुनिया में फैले हुये हैं?" अभिजीत ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! क्या विशाला ने तुम्हें ये नहीं बताया?" विशल्या ने पूछा।

"हाँ याद आया, बताया था। उन्होंने कहा था कि ऐसे सात शक्ति- केंद्रों की स्थापना की गयी थी। परन्तु उन्होनें उनकी स्थिति के विषय में कुछ नहीं बताया था।" अभिजीत ने कहा।

"ह्म्म्म... मैं समझ सकती हूँ। उसने तुम्हें उस समय इस विषय में केवल सामान्य जानकारी दी होगी। शक्ति-केंद्र छः महाद्वीपो में स्थापित किये गये थे। इसमें से दो एशिया में थे, जिनमें से एक भारत और एक रूस में है और शेष महाद्वीपों में एक एक शक्ति- केंद्र स्थापित किया गया था। तो बताओ अभी तुम कहाँ जाना चाहोगे?" विशल्या ने पूछा।

"मुझे सर्वप्रथम महल में जाने का द्वार दिखाइए। कम से कम महल का आयाम द्वार तो पहचान ही लूँ, जिससे कि यदि मैं कहीं भी गलती से चला जाऊँ, तो वापस आ सकूँ।" अभिजीत ने मुस्कराते हुये कहा। इस बात पर नैमिष और विशल्या दोनों हँस दिये। फिर वो तीनों आयाम द्वार से होते हुये महल में आ गये।

अभिजीत के तेजी से सीखने के गुण के कारण उसका प्रशिक्षण एक महीने में ही समाप्त हो गया। अभिजीत आधारभूत तंत्र विद्याओं में पारंगत हो चुका था। उसका बाकी प्रशिक्षण भूतकाल की यात्रा से वापस आने के पश्चात् होना था।

आज उसके प्रशिक्षण का आखिरी दिन था। अभिजीत नैमिष के साथ शक्ति -केंद्र

के प्रांगण में था। वो लोग विशल्या की प्रतीक्षा कर रहे थे। काफी देर हो गयी थी और उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था।

"मैं महल में देख कर आता हूँ कि वो अभी तक क्यों नहीं आईं।" नैमिष ने कहा। अभिजीत ने हामी भरी और नैमिष वहां से अदृश्य होकर चला गया।

अभिजीत वहीं टहलने लगा और नैमिष का इंतज़ार करने लगा। शाम का धुंधलका घिरने लगा था। अचानक उसे अपने पीछे हलचल महसूस हुई। उसने तुरंत पलट कर पीछे देखा। उसके पीछे दो लोग काला लबादा पहने हुये खड़े थे। वो धीरे -धीरे आगे बढ़े और बिना किसी चेतावनी के उन्होंने उस पर तंत्र वार करने शुरू कर दिये। शक्ति-केंद्र पर आक्रमण हो चुका था।

परीक्षा

अभिजीत अविश्वास से भर गया, पर जल्दी ही सतर्क हो गया। वो सोच रहा था कि ये लोग कौन हैं और यहाँ कैसे आ गये? उसके पास मदद बुलाने का समय नहीं था। उसने मुकाबला करने की ठान ली। अब वो कमजोर नहीं था।

उसने उनके वारों को रोक लिया और अपने और उन अजनबियों के मध्य एक रक्षा कवच बनाया और युद्ध के लिये तैयार हो गया। वो जानता था कि कवच तोड़ना उनके बस की बात नहीं है, किन्तु उसे झटका लगा जब उसने देखा कि उनमें से एक अजनबी ने एक वार में ही कवच तो तोड़ दिया है। अब कोई रास्ता नहीं था, वो उनकी तरफ तेजी से बढ़ा। उसके दोनों हाथों में ऊर्जा से बनी तंत्र ढाल और तलवार निकल आई और वो उन दोनों अजनबियों पर टूट पड़ा। अभिजीत अपने पूरे प्रशिक्षण कौशल का इस्तेमाल कर रहा था। उसने उन्हें रोक लिया था, पर ज्यादा देर तक वो उनका मुकाबला नहीं कर सकता था।

अचानक उनमें से एक प्रतिद्वंदी ने उस पर एक तेज़ वार किया और अभिजीत लड़खड़ा कर पीछे की ओर हटा और गिर गया। उसके दूसरे प्रतिद्वंदी ने अवसर का फायदा उठाया और उछल कर उस पर अपनी ऊर्जा से बनी तलवार से वार किया। अभिजीत तुरन्त जमीन पर तेजी से घूम गया और स्वयं को बचा लिया। वो तेजी से खड़ा हुआ और फिर से तैयार हो गया।

उन दोनों अजनाबियों ने अपनी पूरी शक्ति से अभिजीत पर वार करने शुरु कर दिये। अभिजीत ने हाथों से निकली ऊर्जा ढालों से उन्हें रोकने का पूरा प्रयास किया, परन्तु वो विफल रहा। उसकी ऊर्जा ढाल छिन्न-भिन्न हो गयी और वह तन्त्र वारों के झटकों से उछल कर दूर जा गिरा। उसे थोड़ी बहुत चोट आई, लेकिन वह फिर से खड़ा होकर लड़ने के लिये तैयार हो गया। उन दोनों अजनबियों ने फिर से अभिजीत पर और घातक वार कर दिये।

अभिजीत ने अपने दोनों हाथों में तंत्र ढालें उत्पन्न की और उन्हें रोकने के लिये तैयार हो गया। लेकिन वो वार उस तक पहुँच ही नहीं पाये। एक अनजान दिशा से आये वार

ने उन अजनबियों के वारों को काट दिया था। अभिजीत ने चौंक कर उस ओर देखा जिस ओर से सहायता आई थी। उसके साथ- साथ उन दोनों अजनबियों ने भी उस ओर देखा।

उनके सामने सरानी खड़ी हुई थी। सरानी उन दोनों से युद्ध के लिये तैयार थी। उसने वार करने के लिये अपने हाथ उठाये ही थे कि उनमें से एक अजनबी ने सरानी को रोक दिया।

“रुक जाओ विशाला!” अजनबी ने तेज स्वर में कहा। सरानी एक झटके से रुक गयी। उसने आवाज पहचान ली थी। उन दोनों अजनबियों ने अपने -अपने लबादे उतार फेंके। अभिजीत उन्हें देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

“विशल्या आप? और नैमिष तुम भी? यानि ये सब एक नाटक था।” अभिजीत ने पूछा।

“हाँ अभिजीत! मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। मैं देखना चाहती थी कि तुम अकेले होने पर विपरीत परिस्थिति परिस्थितियों का सामना कैसे करते हो। परन्तु सरानी ने मध्यस्थता कर दी और हमें रुकना पड़ा।” विशल्या ने बात को स्पष्ट करते हुये कहा।

“क्षमा कीजिये दीदी, मैं नहीं जानती थी। मुझे लगा की शक्ति केंद्र पर आक्रमण हुआ है। मैं तो यहाँ देखने आई थी कि अभिजीत का प्रशिक्षण कैसा चल रहा है।” सरानी ने अपनी भूल स्वीकारी।

“कोई बात नहीं विशाला। अभी अभिजीत की शक्ति लॉकेट प्राप्त करने के लिये मुख्य परीक्षा बाकी है। मैं बस देखना चाहती थी कि अभिजीत इसके लिये तैयार है या नहीं।” विशल्या ने स्पष्ट किया।

“याद है, तुमने एक बार कहा था कि तुम्हें भी एक लॉकेट चाहिए। अब समय आ गया है उसे पाने का।” नैमिष ने मुस्कराते हुये अभिजीत से कहा। अभिजीत भी मुस्करा दिया।

“लेकिन ये परीक्षा सरल नहीं होगी। तुम्हें अभी तक सीखे अपने सम्पूर्ण कौशल और प्रशिक्षण का प्रयोग करना पड़ेगा। क्योंकि तुम अभी तक पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं हुये हो।” विशल्या ने समझाया।

“मैं आपको निराश नहीं करूँगा।” अभिजीत ने कहा।

“मैं जानती हूँ।” विशल्या ने मुस्करा कर कहा। रात हो चुकी थी। सभी महल में वापस लौट आये।

अभिजीत की परीक्षा के लिये पाँच दिन बाद का समय निश्चित किया गया। इन पाँच

दिनों में भी अभिजीत का प्रशिक्षण यथावत चलता रहा। वो पूरी लगन से प्रशिक्षण लेता रहा।

एक दिन अभिजीत विशल्या के साथ युद्धाभ्यास कर रहा था। विशल्या उसे असुरों के विषय में बता रही थी और उनसे लड़ने का प्रशिक्षण दे रही थी।

"अभिजीत सदैव स्मरण रहे की असुर छल और कपट से युद्ध करते हैं। वे युद्ध के नियमों का पालन नहीं करते और प्रतिद्वंदी को परास्त करने का हरसंभव प्रयास करते हैं। उनके छलावे में मत आना। वो तुम्हारे सबसे प्रिय का रूप धरकर भी तुम्हारे सामने आ सकते हैं। वे तुम पर दया नहीं दिखाएंगे। इसीलिये कुछ बातें सदैव स्मरण रखना। पहली बात, अपने शत्रुओं को कभी जीवित मत छोड़ना अन्यथा वो तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे। दूसरी बात, कभी भी कैसा भी युद्ध हो, उसे जीतने के बाद असावधान मत रहना। असुर सदैव तब ही वार करते हैं, जब हम निश्चिन्तऔर असावधान होते हैं। तीसरी बात, अपने शत्रु को कभी भी स्वयं से कमतर मत आँकना और न ही खुद को सर्वशक्तिशाली समझने की भूल करना। ये सारी बातें तुम्हें शत्रु को परास्त करने और स्वयं को जीवित रखने में सहायता करेंगी।" विशल्या ने अभिजीत को समझाया। अभिजीत ने 'हाँ' में सिर हिलाकर प्रत्युत्तर दिया।

उसने इन पाँच दिनों में नैमिष और विशल्या के साथ युद्ध का अभयास पूरी लगन और मेहनत से किया और अंततः उसकी परीक्षा का दिन नजदीक आ गया। कल सुबह उसकी परीक्षा शक्ति- केंद्र द्वारा ली जानी थी।

उसी रात अभिजीत महल के छज्जे पर खड़ा हुआ, आसमान में चमकते सितारों को देख रहा था। आधा खिला हुआ चंद्रमा एक ओर चमक रहा था। अभिजीत ऊपर की ओर देखता हुआ विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसे अपने पीछे हुई आहट का अभास ही नहीं हुआ। तभी किसी ने धीमे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। अभिजीत चौंक कर पीछे घूमा। उसके सामने विशल्या खड़ी हुई थी।

"यहाँ एकांत में क्या कर रहे हो? मैं तुम्हें भोजन के लिये बुलाने आई थी, जब तुम नहीं मिले तो नैमिष ने बताया कि तुम यहाँ आये हो।" विशल्या ने कहा।

"हाँ, मैं थोड़ा एकांत चाहता था और मुझे इससे अच्छी जगह और कोई नहीं मिली। क्या आपने कभी रात में इस तरह खड़े होकर तारों को चमकते हुये देखा है? कितना सुकून मिलता है।" अभिजीत ने एक गहरी साँस भरकर आसमान की ओर देखते हुये कहा।

"हाँ देखा है, पर तुम यहाँ तारे देखने के लिये तो नहीं आये हो। अब मुझे बताओ कि

तुम क्या सोच रहे थे?” विशल्या ने मुस्कुराकर पूछा।

“नहीं तो। कुछ भी तो नहीं।” अभिजीत ने हिचकिचा कर कहा।

“अभिजीत! मैं तुम्हारी गुरु हूँ। इतने दिनों से तुम्हें प्रशिक्षित कर रही हूँ। क्या मैं इतना भी नहीं समझती?” विशल्या ने कहा। अभिजीत ने मुस्कराकर सिर झुका लिया।

“मुझे क्षमा करें, आप सही हैं। मैं बस अपने जीवन के विषय में सोच रहा था। आप तो जानती ही हैं कि मैं अपने माता- पिता के विषय में कुछ नहीं जानता। मैं अनाथालय में पला बढ़ा। मैं हमेशा से ही कुछ अलग करके अपनी पहचान बनाना चाहता था और देखिये जिंदगी मुझे कहाँ ले आई है।” अभिजीत ने अपने मन की बात बताते हुये कहा।

“तो क्या तुम इस नये जीवन से प्रसन्न नहीं हो?” विशल्या ने पूछा।

“नहीं ऐसी बात नहीं है। मैं यहाँ भी उतना ही खुश हूँ, जितना वहां होता। ये दुनिया उससे बेहतर है। मैं यहाँ भी वो सब कुछ कर सकता हूँ, जो वहां करना चाहता था। यहाँ मुझे एक परिवार मिल गया है, नए दोस्त मिले हैं। और क्या चाहिए?” अभिजीत ने मुस्करा कर कहा।

“तो तुम्हारा सोचना है कि तुम्हारा जीवन बस इतना ही है?” विशल्या ने पूछा।

“क्या नहीं है?” अभिजीत ने चौंकते हुये पूछा।

“नहीं! तुम्हारे जीवन का लक्ष्य इससे भी बड़ा है। तुम अभी नहीं जानते कि तुम्हारी नियति क्या है। मैं भी नहीं जानती, परन्तु तुम्हें अभी बहुत कुछ करना है। तुमनें कहा था कि तुम अपनी पहचान बनाना चाहते हो। इसका आरम्भ यहाँ से हो चुका है।” विशल्या ने कहा।

“पर कैसे? मेरा तो अभी प्रशिक्षण भी पूरा नहीं हुआ है और मैं एक अभियान पर जाने वाला हूँ।” अभिजीत ने पूछा।

“सदैव स्मरण रखना। सबसे बड़ा प्रशिक्षण जीवन देता है। जब तुम्हारे सामने विषम परिस्थितियाँ आयेंगीं, तब उस परिस्थिति मैं तुम्हारा मस्तिष्क जो सोचेगा और तुम जो कार्य करोगे, वही तुम्हारा असली प्रशिक्षण होगा। तुम्हारे कार्य ही निर्धारित करेंगे कि तुम कितने योग्य हो। तुम कोई साधारण मनुष्य नहीं हो, तभी यहाँ हो। अब जरा विचार करो तुम्हें क्या लगता है, हम हर किसी व्यक्ति को यहाँ लाकर ऐसे ही प्रशिक्षित कर देते हैं?” विशल्या ने पूछा। अभिजीत एकाएक चौंक गया। वो सब समझ गया।

“हाँ! आप सही कह रही हैं। सरानी ने मुझे बताया था कि आप लोग मेरा मतलब हम लोग दुनिया से छुपकर रहते हैं और इसीलिये मेरा यहाँ आना केवल एक संयोग नहीं है।” अभिजीत ने कहा और विशल्या मुस्करा दी।

“यानि अब तुम मानने लगे हो कि तुम भी हममें से एक हो?” विशल्या ने हँसते हुये पूछा।

“हाँ! क्यों नहीं हूँ?” अभिजीत ने खिलखिलाते हुये कहा। विशल्या और अभिजीत दोनों हंसने लगे।

“अभिजीत नियति किस्मत का द्वार सिर्फ एक बार खटखटाती है और यदि तुम द्वार खोल दो, तो सफलता तुम्हारे कदम चूम लेती है। मुझे ख़ुशी है कि तुमनें वो द्वार खोल दिया है और अब तुम्हें अवसर मिला है, अपनी इस महान संस्कृति और इसके लोगों की रक्षा करने का। इस उत्तरदायित्व को ग्रहण करो और अपना कर्तव्य पूरा करो।” विशल्या ने आगे कहा। अभिजीत ने धीमे से सिर हिलाया।

“क्या सभी की परीक्षा का प्रारूप एक जैसा ही होता है?” अभिजीत ने पूछा।

“नहीं। परंतु किसने परीक्षा में क्या किया, ये बताने की आज्ञा नहीं होती। शक्ति - केंद्र व्यक्ति के सभी पक्षों के अनुरूप परीक्षा लेता है।” विशल्या ने समझाया।

“क्या आपको लगता है कि मैं इस परीक्षा में सफल हो पाऊँगा?” अभिजीत ने थोड़ा रुककर पूछा।

“क्या तुम्हें डर लग रहा है?” विशल्या ने जवाब देने के स्थान पर पूछा।

“नहीं! मुझे किसी बात का डर नहीं है। मुझे आपने प्रशिक्षित किया है और मुझे खुद पर विश्वास भी है। मैं बस यूँ ही जानना चाहता था कि आपको क्या लगता है?” अभिजीत ने स्पष्ट किया।

“तुमनें मेरे प्रश्न का उत्तर स्वयं ही दे दिया है। इस परीक्षा में सफल होना तुम पर निर्भर करता है। तुम किसी वस्तु या परिस्थिति को किस प्रकार देखते हो और उस पर क्या प्रतिक्रिया करते हो, यही निर्धारित करेगा कि तुम सफलता के योग्य हो अथवा नहीं।” विशल्या ने समझाया।

“मुझे भी मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया है। मैं अवश्य सफल होऊँगा।” अभिजीत ने कहा।

“अवश्य, अब चलो। हमें भोजन के लिये विलम्ब हो रहा है। सब हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।” विशल्या ने कहा और दोनों नीचे आ गये।

अगली सुबह ब्रह्म मुहूर्त में सभी लोग तैयार होकर शक्ति -केंद्र में उपस्थित हो गये। अभिजीत अपनी परीक्षा के लिये पूरी तरह तैयार था। उसने प्रतिहारियों की तरह ही अपने वस्त्र पहने हुये थे।

काले रंग की एक चुस्त पैंट जिस पर घुटनों से कुछ नीचे की लंबाई तक वाले जूते थे, उसके ऊपर उसने काले ही रंग की एक टी शर्ट पहनी हुई थी और उसके ऊपर उसने एक गहरे नीले रंग का कोट पहना हुआ था। कोट उसके घुटनों की लंबाई तक का था, जिसमें कहीं- कहीं गहरे हरे रंग की पट्टियां थी और उसकी आस्तीनें कलाइयों तक लंबी और चुस्त थीं। कोट कमर पर एक पट्टी से बंधा हुआ था।

वो कुछ कदम आगे जाकर पलटा। उसने एकएक करके विशल्या, सरानी और नैमिष को देखा। वो विशल्या के पास आया और झुककर उसके पैर छुए। विशल्या ने उसके सिर पर हाथ रखकर विजयी होने का आशीर्वाद दिया। फिर उसने सरानी को पारम्परिक मुद्रा में प्रणाम किया। सरानी ने सिर हिलाकर अभिवादन स्वीकार किया। फिर अभिजीत नैमिष की और गया, नैमिष ने उसे गले लगाया।

“वहाँ जाकर मेरी नाक मत कटा देना, सफल होकर आना।” नैमिष ने अभिजीत के कान में फुसफुसा के कहा। अभिजीत ने ’हाँ’ में सिर हिलाया और मुस्करा दिया। वो दोनों अब अच्छे मित्र बन चुके थे। फिर अभिजीत ने पलट कर शक्ति- केंद्र की ओर एक नजर डाली, फ़िर एक बार पलट कर उन तीनों को देखा और तत्पश्चात एक गहरी साँस लेकर पलट कर तेजी से शक्ति- केंद्र की सीढियाँ चढ़ने लगा। उसके जाने के बाद सरानी विशल्या की ओर मुड़ी।

“आशा है कि अभिजीत की परीक्षा ज्यादा कठिन न हो। आपको क्या लगता है दीदी?” सरानी ने पूछा।

“कठिन का तो नहीं पता विशाला, किन्तु ये उसकी अग्निपरीक्षा सिद्ध होने वाली है।” विशल्या ने कहा। सरानी ने चौंककर विशल्या की ओर देखा।

“ये आप कैसे कह सकती हैं?” सरानी ने पूछा।

“क्योंकि इस परीक्षा की रुपरेखा मैंने तैयार की है।” विशल्या ने शांत स्वर में कहा। नैमिष और सरानी अचंभित रह गये।

“क्या?? परन्तु कैसे?” उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

“मैंने कल रात शक्ति- केंद्र से जाकर निवेदन किया था कि अभिजीत की परीक्षा मुझे लेने दी जाये।” विशल्या ने स्पष्ट किया।

“परन्तु क्यों दीदी?” सरानी ने पूछा।

“क्योंकि मैं उसे भविष्य में आने वाले हर संकट का सामना करने के योग्य बना सकूँ। ये परीक्षा मेरे और शक्ति- केंद्र दोनों की सम्मिलित शक्तियों का परिणाम है। उसकी परीक्षा तीन चरणों में पूर्ण होगी जहाँ उसे अपनी शक्ति , बुद्धि और गुणों की योग्यता सिद्ध करनी होगी।” विशल्या ने कहा।

“फिर तो उचित है दीदी। आपने ऐसा कुछ सोच के ही किया होगा।” सरानी ने सहमति में सिर हिलाया। और विशल्या की ओर ध्यान से देखा। विशल्या शक्ति- केंद्र में अभिजीत को जाता हुआ देख रही थी और उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक और

उत्साह था।

अभिजीत शक्त-केंद्र के अंदर था। वो सीढ़ियों से उतरकर शक्ति-केंद्र के समीप गया। उसने स्फटिक को प्रणाम किया और आँखें बंद करके प्रतीक्षा करने लगा। स्फटिक में हरकत हुई और एक नीली रोशनी के घेरे ने उसे अपनी आगोश में ले लिया। अभिजीत को लगा जैसे वह उड़ रहा है। फिर एक झटके से उसने स्वयं को किसी धरातल पर खड़ा हुआ पाया। उसने अपनी आँखें खोली। वो आश्चर्यचकित रह गया।

अभिजीत ने स्वयं को समुद्र में बने एक विशाल द्वीप पर पाया। उसके सामने स्लेटी रंग के पत्थरों के विशालकाय पर्वत थे, जो कि खम्बों की आकृति में एक दूसरे से चिपके हुये चारों ओर फैले हुये थे। उनके बीच में से होकर एक रास्ता जा रहा था। अभिजीत ने अपने चारों ओर देखा जब उसे कोई आसपास दिखाई नहीं दिया तो वो उस रास्ते से होकर आगे बढ़ने लगा। रास्ते के दोनों ओर पत्थरों की ऊँची -ऊँची दीवारें थी।

थोड़ी देर चलने के बाद वह एक खुले स्थान में जा पहुंचा, जहाँ चारों और पत्थरों की छोटी -बड़ी चट्टानें बिखरी हुई थी। वो स्थान चारों ओर से बंद था और उसके सामने लगभग एक मील की दूरी पर एक विशालकाय सक्रिय ज्वालामुखी था, जिसमें से लावा निकलकर धीरे- धीरे चट्टानों में अपना रास्ता बनाता हुआ उसकी ओर बढ़ रहा था। ज्वालामुखी से निकले राख और धुएँ के गुबार से आसमान भर गया और कालिमा छा गयी।

वो स्थान किसी नर्क से कम नहीं लग रहा था। अभिजीत ने पीछे मुड़कर वापस जाने के बारे में सोचा, लेकिन जिस रास्ते से वो आया था, वो गायब हो चुका था। वहां अब चट्टानों की दीवार खड़ी हो चुकी थी।

अचानक ज्वालामुखी की ओर से अभिजीत की ओर एक जलती हुई चट्टान उड़ती हुई आई। अभिजीत जोकि पहले ही सावधान था, उछलकर एक ओर हो गया। चट्टान उसके समीप से होती हुई पीछे जा गिरी। अभिजीत ने आने वाली और चट्टानों से बचने के लिये ज्वालामुखी की ओर देखा। लेकिन वहां से आने वाली अगली चीज चट्टान नहीं थी। उसने देखा कि ज्वालामुखी से आग से बनी हुई एक मानव आकृति उड़ती हुई, उसी की ओर आ रही है। अभिजीत हमले से बचाव के लिये सावधान हो गया। वह मानव आकृति आकर अभिजीत के सामने कुछ दूरी पर उतरी और धीरे-धीरे आग शांत हुई और जो मानव आकृति प्रकट हुई उसे देख कर अभिजीत की आँखें फटी की फ़टी रह गयीं।

“तक्षिका?? तुम यहाँ पर क्या कर रही हो?” अभिजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"प्रश्न ये है लड़के कि तुम यहाँ पर क्यों आये हो?" तक्षिका ने जवाब देने के स्थान पर एक भीषण तन्त्र वार अभिजीत पर कर दिया। वार जोरदार था। अभिजीत उछलकर दूर जा गिरा। अभिजीत संभलकर धीरे- धीरे उठा। वो समझ गया कि परीक्षा की घड़ी आ चुकी है और तक्षिका उसकी सहायता के लिये यहाँ पर नहीं आई है। उसने तक्षिका की ओर देखा जिसने फिर से भीषण रूप धारण कर लिया था।

"मुझसे युद्ध करो लड़के। दिखाओ मुझे तुममे कितनी शक्ति है।" तक्षिका ने चिल्लाकर कहा और फिर से वार करना शुरु कर दिया।

अभिजीत इस बार सावधान था। उसने भी वार करने प्रारम्भ कर दिये। दोनों के वार आपस में टकराने लगे। वातावरण में फैली कालिमा को मिटाते हुये रोशनी चारों ओर फ़ैल गयी। अभिजीत अपनी पूरी शक्ति लगाकर वार कर रहा था किन्तु तक्षिका का वार धीरे-धीरे उसके तंत्र वार को काटता हुआ आगे बढ़ता गया और अभिजीत को एक बार फिर से एक और जोरदार वार लगा। वो पीछे जा गिरा।

वह फिर से उठा और तक्षिका पर वार करने लगा। तक्षिका भी कहाँ पीछे रहने वाली थी। दोनों का युद्ध काफी देर तक चला। अपने सम्पूर्ण प्रशिक्षण कौशल का प्रयोग करने के पश्चात् भी अभिजीत अब तक तक्षिका को परास्त करने में असफल रहा था। वो और तक्षिका दोनों अपनी पूरी शक्ति लगाकर एक दूसरे को परास्त करने की कोशिश कर रहे थे। वह थोडा घायल भी हो गया था। परन्तु उसने हार नहीं मानी थी।

"बस इतनी ही शक्ति है तुममें लड़के? ये मुझे परास्त करने के लिये पर्याप्त नहीं है। क्या तुमने बस इतना ही सीखा है?" तक्षिका ने एक कुटिल मुस्कान के साथ अभिजीत पर घातक वार करते हुये कहा। अभिजीत ने अपनी पूरी शक्ति के साथ पुनः उस वार का उत्तर देने का प्रयास किया, पर असफल रहा और एक बार फिर वार खाकर पीछे जा गिरा। अभिजीत समझ गया कि वो अपने प्रशिक्षण के बल पर तक्षिका को परास्त नहीं कर पायेगा। उसे प्रशिक्षण से इतर कुछ सोचना होगा।

एकाएक अभिजीत को कुछ याद आ गया। उसकी आदत थी कि वो प्रशिक्षण के लिये दी गयी पुस्तकों के अतिरिक्त और दूसरी पुस्तकों का भी अध्ययन करता रहता था। इसी वजह से उसने कुछ गुप्त तंत्र विद्याओं को भी सीख लिया था। उसे ऐसे ही एक तंत्र वार की याद आ गयी जो उसने पढ़ा था और नैमिष के साथ जिसका खाली समय में अभ्यास किया था।

वह धीरे से खड़ा हुआ और स्वयं को संभाला। फिर उसने अपने दोनों हाथ अपने बगल में ऊपर तक उठाये और आँखें बंद करके कुछ मन्त्र बुदबुदाये।

उसके दोनों हाथों के बीच में एक ऊर्जा का गोला बनने लगा और उसके दोनों हाथों में समाने लगा। फिर उसने अपने दोनों हाथ झटके से नीचे गिरा दिये। उसके दोनों हाथों से

लाल ऊर्जा आग की शक्ल में निकल रही थी। ये देख कर तक्षिका भी अचम्भित रह गयी।

"असंभव! तूने ये त्रिकाट विद्या कहाँ सीखी?" तक्षिका ने आश्चर्य से पूछा।

"तुमनें ही पूछा था न कि मैंने क्या सीखा है। ये मैंने स्वयं सीखा है।" अभिजीत ने कहा और बिना समय खोये वार कर दिया। अग्नि ऊर्जा की एक लहर अभिजीत के हाथों से निकल कर तक्षिका की ओर तेजी ने बढ़ी।

तक्षिका ने उस वार को रोकने की पूरी चेष्टा की परन्तु असफल रही। एक भीषण धमाके के साथ तक्षिका पीछे की ओर जा गिरी और निश्चेष्ट हो गयी। अभिजीत दौड़ कर उसके पास गया और उसे उठाया। उसने अपने दोनों हाथों को मिलाकर कुछ मन्त्र बुदबुदाये और तक्षिका के ऊपर कर दिये।

हाथों से एक ऊर्जा लहर निकली, जिसने तक्षिका को घेर लिया। ये उस वार की काट थी, जो अभिजीत ने किया था और जिसे अभिजीत ने इस विद्या के साथ ही सीखा था। शीघ्र ही तक्षिका की चेतना लौट आई।

"क्या तुम ठीक हो? क्षमा करना मैं तुम्हारे प्राण नहीं लेना चाहता था।" अभिजीत ने चिंतित स्वर में पूछा।

"मैं ठीक हूँ अभिजीत। किन्तु तुम मेरे प्राण ले भी नहीं सकते थे। क्योंकि मैं कोई जीवित व्यक्ति नहीं, बल्कि एक तंत्र शक्ति हूँ। ये तुम्हारी शक्ति की परीक्षा थी। तुम इसमें सफल हुये। अब तुम्हें दूसरी परीक्षा के लिये जाना होगा। उसके लिये तुम्हें ज्वालामुखी के अंदर से रास्ता मिलेगा।" तक्षिका ने कहा।

"लेकिन जलते ज्वालामुखी में से रास्ता कैसे....." पूछते- पूछते अभिजीत ने ज्वालामुखी की ओर देखा और रुक गया। ज्वालामुखी शांत हो चुका था और उसमें जाने का रास्ता दिखाई देने लगा।

"पर मैं तुम्हें यहां छोड़ के कैसे जा सकता हूँ?" अभिजीत ने पूछा। तक्षिका ने भौंहें उठाकर अभिजीत को देखा।

"हाँ ठीक है, समझ गया कि ये मेरी परीक्षा है। मैं जा रहा हूँ।" अभिजीत ने कहा और ज्वालामुखी की ओर चल दिया।

ज्वालामुखी के पास पहुँच कर अभिजीत ने देखा कि उस पर्वत में एक गुफानुमा सुरंग बनी हुई है जिसमें से हल्की रोशनी फूट रही है। अभिजीत उस सुरंग में प्रवेश कर गया। कुछ देर चलने के पश्चात् वह पुनः एक विचित्र स्थान पर जा पहुँचा।

उसके सामने विशाल रेगिस्तान था, जिसमें थोड़ी- थोड़ी देर में धूल भरी हवाएँ चल रही थी। गहरे नारंगी आसमान में बादलों का एक भंवर बना हुआ था जिसके मध्य में से सुनहरी रोशनी छनकर रेगिस्तान में बने एकमात्र वृक्ष पर पड़ रही थी। अभिजीत ने देखा कि वृक्ष की शाखाओं से भी थोड़ी- थोड़ी रोशनी फूट रही है। वो उस आश्चर्यचकित कर

देने वाले वृक्ष की ओर आगे बढ़ा। वृक्ष के पास आते -आते उसने देखा की वृक्ष के नीचे कोई खड़ा हुआ है। थोड़ी और पास आते ही वृक्ष के नीचे खड़ी आकृति स्पष्ट हो गयी। परन्तु इस बार अभिजीत आश्चर्यचकित नहीं हुआ, क्योंकि उसे अंदाजा था कि वो आकृति किसकी थी।

"यक्षिका! अर्थात परीक्षा के इस द्वितीय चरण में तुम्हें परास्त करना होगा।" अभिजीत ने कहा।

"हाँ! परन्तु ये इतना आसान नहीं होगा। ये मेरा यक्षजाल है। यहाँ तुम्हारी शक्तियाँ काम नहीं आएँगी।" इतना कहते ही यक्षिका ने अभिजीत पर वार करने प्रारम्भ कर दिये। एक और युद्ध आरम्भ हो गया।

अभिजीत ने यक्षिका के प्रथम वार को सरलता से रोक लिया किन्तु उसे एक झटका सा लगा। उसने अनुभव किया कि यक्षिका के तंत्र वारों में कुछ भिन्नता थी, परन्तु उसने इस बात पर ध्यान दिये बिना युद्ध करना जारी रखा।

अचानक उसपर पीछे से एक वार हुआ। वार ज्यादा घातक नहीं था, लेकिन अभिजीत को एक झटका अवश्य लगा। उसने पीछे पलट कर देखा। उसके पीछे यक्षिका खड़ी हुई थी। उसने फिर पलट कर सामने देखा और उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

उसके सामने दर्जन भर यक्षिका के प्रतिरूप खड़े हुये थे। उन सबने अभिजीत पर चार ओर से घूम- घूम कर वार करने प्रारम्भ कर दिये।

अभिजीत के पास सम्भलने का कोई अवसर नहीं था। उसने तुरंत अपने एक हाथ में तंत्र ढाल उत्पन्न की, जिससे आने वाले वारों से रक्षा की जा सके। और दूसरे हाथ से उसने वार करना जारी रखा। परन्तु ये पर्याप्त नहीं था। प्रतिरूपों की संख्या बहुत ज्यादा थी। उसे अपने दोनों हाथों में तंत्र ढाल उत्पन्न करनी पड़ी और अब वह अपने दोनों हाथों से आने वाले वारों को रोकने का भरपूर प्रयास कर रहा था।

अभिजीत ने ऐसी स्थिति का सामना कभी नहीं किया था। हालाँकि प्रशिक्षण के समय विशल्या और नैमिष ने वेश बदल कर उस पर हमला किया था और उसकी परीक्षा ली थी। परन्तु यहाँ स्थिति सर्वथा भिन्न थी। यहाँ यक्षिका के प्रतिरूप दर्जन भर थे और अभिजीत सिर्फ तन्त्र ढाल के सहारे ज्यादा देर तक टिका नहीं रह सकता था।

तभी अभिजीत ने किसी खास चीज पर ध्यान दिया। उसने देखा कि सारे प्रतिरूप अपनी -अपनी जगह बदलकर वार कर रहे थे, परन्तु केवल एक प्रतिरूप उस पेड़ के आगे अपनी जगह पर स्थिर था। अभिजीत का मस्तिष्क तेजी से काम करने लगा।

"ये प्रतिरूप अपने स्थान से क्यों नहीं हट रहा? और ये यहाँ स्थित एकमात्र वृक्ष के आगे ही क्यों खड़ी है? क्या ये उसकी सुरक्षा कर रही है? लेकिन क्यों? ऐसा इस वृक्ष में क्या है? कहीं ये इसकी शक्ति का स्रोत तो नहीं है। हो सकता है, क्योंकि इसने मुझसे

कहा था कि ये इसका यक्षजाल है। मुझे इस वृक्ष को नष्ट करना होगा। पर कैसे?" अभिजीत ने तेजी से सोचा।

अचानक उसे विशल्या के प्रशिक्षण में कहे शब्द याद आ गये। विशल्या ने एक बार अभिजीत को समझाया था कि आक्रमण ही बचाव की सबसे अच्छी नीति होती है। अभिजीत ने आक्रमण का निश्चय कर लिया। उसने अपने एक हाथ की ढाल को लुप्त करके वार करना आरम्भ किया और अगले ही क्षण दूसरे हाथ से भी तंत्र वार करने शुरु कर दिये और वृक्ष की तरफ दौड़ लगा दी। कुछ वारों को रोकते हुये और कुछ से बचते -बचाते वह वृक्ष के समीप पहुंचा और वहाँ खड़े प्रतिरूप पर एक घातक तन्त्र वार किया।

अचानक हुये इस आक्रमण से यक्षिका का प्रतिरूप, जो वृक्ष की रक्षा कर रहा था, संभल नहीं पाया और वार लगते ही दूर जा गिरा। अभिजीत ने बिना समय व्यर्थ किये तुरंत वृक्ष पर विनाशक वार किया और वृक्ष एक तेज लपट में घिर कर जलने लगा और एक धमाके के साथ भस्म हो गया। इसके साथ ही आसमान में छाए बादलों का भंवर भी गायब हो गया और आसमान साफ रोशनी से जगमगा उठा।

वह वृक्ष के नष्ट होने का परिणाम जानने के लिये पीछे पलटा। उसने देखा कि यक्षिका के सारे प्रतिरूप अदृश्य हो चुके है केवल उसको छोड़कर जो वृक्ष की रक्षा के लिये खड़ा था। वही असली यक्षिका थी।

"अद्भुत! तुम सच में बहुत बुद्धिमान हो। तुम समझ गये कि वृक्ष ही इस यक्षजाल का उद्गम स्थल है। ये तुम्हारी बुद्धि की परीक्षा थी अभिजीत। मुझे परास्त करके तुम इस परीक्षा में भी पूर्णत: सफल हो गये हो।" यक्षिका ने धीरे- धीरे उठते हुये कहा।

"क्या तुम ठीक हो? उम्मीद करता हूँ, वार ज्यादा घातक नहीं रहा होगा। मुझे लगता है कि तुम भी तक्षिका की ही तरह एक तंत्र शक्ति हो। है न?" अभिजीत ने पूछा।

"हाँ! तुम सही समझे। अब तुम्हारी अंतिम परीक्षा का समय आ गया है। वहां जाने के लिये तुम्हें इस द्वार से होकर जाना होगा।" यक्षिका ने उस द्वार की ओर इशारा करते हुये कहा जो उस वृक्ष के नष्ट होते ही उसके स्थान पर प्रकट हो गया था।

अभिजीत ने उस द्वार की ओर मुड़कर देखा। वृक्ष के स्थान पर हवा में एक काले रंग का ऊर्जा द्वार प्रकट हो गया था। अभिजीत उस द्वार की ओर मुड़ा और धीरे- धीरे उसमें प्रवेश कर गया।

द्वार के दूसरी ओर कदम रखते ही अभिजीत ने स्वयं को एक दिव्य सी जगह पर पाया। उसने देखा कि उसके समने सीढ़ियों की एक लंबी कतार ऊपर की ओर जा रही है। सीढ़ियों को छोड़कर सारा वातावरण पूरी तरह से सफ़ेद गाढ़े धुएं से भरा हुआ था।

सीढ़ियाँ जहाँ खत्म हो रही थीं, वहाँ धुएं से बना हुआ एक वृत्ताकार द्वार था। सीढ़ियों पर दोनों तरफ कुछ- कुछ सीढियाँ छोड़कर नक्काशीदार खम्बे लगे हुये थे, जिनके ऊपरी

हिस्से पर काँच के गोले रखे हुये थे। उस गोलों में भरे अजीब से नीले-हरे पदार्थ से सीढ़ियों पर हल्की- हल्की रोशनी हो रही थी। वो एक अद्भुत दृश्य था।

अभिजीत धीरे-धीरे सीढियाँ चढ़ते और आसपास के वातावरण को देखता हुआ, सीढ़ियों पर ऊपर की ओर बढ़ने लगा। थोड़े समय बाद जब वो अंतिम सीढ़ी के पास पहुँचा तो उसने देखा कि जिसे वो अब तक द्वार समझ रहा था, वो धुएं का एक छल्ला था।

वहाँ पर सीढियाँ ख़त्म हो रही थी और आगे कोई रास्ता नहीं था। वो चलकर सबसे आखिरी सीढ़ी पर पहुँचा जो कि अन्य की तुलना में एक कमरे के फर्श जितनी बड़ी थी। वहाँ पहुँचते ही धुएँ के बादल छंट गये और उसके सामने शक्ति स्फटिक प्रकट हो गया। वो उसी प्रकार खम्बे पर हवा में अपनी धुरी पर घूमता हुआ स्थिर था। अभिजीत ने शक्ति स्फटिक को प्रणाम किया।

“आयुष्मान भव! ये तुम्हारी परीक्षा का अंतिम चरण है अभिजीत।” शक्ति स्फटिक से एक धीमी किन्तु दिव्य ध्वनि प्रस्फुटित हुई। अभिजीत ने सिर उठाकर स्फटिक को देखा और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

“तुम अपनी शक्ति और बुध्दि की परीक्षा में सफल हुये हो, परन्तु इनसे भी बढ़कर होते हैं, 'मानवीय मूल्य'। तुम्हें इस विश्व की रक्षा करनी है। आम लोगों की सहायता करनी है, जिसके लिये इन मूल्यों का होना आवश्यक है।

मैंने इन दोनों परीक्षाओं में तुम्हारे गुणों की झलक देखी है। परन्तु मैं और संतुष्ट होना चाहता हूँ। इसके लिये तुम्हें मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। क्या तुम तैयार हो?” शक्ति स्फटिक ने पूछा।

“जी! मैं तैयार हूँ।” अभिजीत ने विनम्रता से उत्तर दिया।

“तो बताओ कि ग्रहण करने योग्य क्या है?”

“गुरु के वचन ग्रहण करने योग्य हैं।”

“मूर्खता क्या है?”

“चतुर या बुद्धिमान होने पर भी अभ्यास नहीं करना मूर्खता है।”

“नर्क क्या है?”

“किसी के अधीन रहना ही नर्क है।”

“संसार में व्यक्ति सबसे अधिक किससे डरता है?”

“इस संसार में सबसे अधिक भय व्यक्ति को मरण से है। इस संसार में प्राणियों को प्राण ही सबसे प्रिय है।”

“अँधा कौन है?”

“आँखें होते हुये भी न करने योग्य कार्य करने वाला अँधा है।”

"बहरा कौन है?"

"जो व्यक्ति अपने हित की बात नहीं सुनता है, वो बहरा है।"

"गूँगा कौन है?"

"जो समय\ पर प्रियवचन बोलना नहीं जानता है, वो गूंगा है।"

"किसी को वश में कैसे किया जाता है?"

"सदैव सत्य बोलकर। सत्य व प्रिय वचन बोलने वाले व्यक्ति के वश में सभी प्राणी होते हैं।"

"तुम कौन हो?"

"मैं एक प्रतिहारी हूँ।"

"तुम्हारा धर्म क्या है?"

"मानवजाति की रक्षा करना चाहे, इसके लिये प्राण भी देना पड़े।"

"तुम अत्यंत बुद्धिमान हो अभिजीत। तुमने सारे प्रश्नों के सही उत्तर दिये हैं। तुम इस परीक्षा में भी सफल हुये। परन्तु स्मरण रहे युद्ध वो नहीं जीतते, जो युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान करते हैं। युद्ध वो जीतते हैं, जो जीवित रहकर शत्रु का विनाश करते हैं। जीतने वाले दूसरों से अलग काम नहीं करते, बल्कि वे दूसरों से अलग ढंग से काम करते हैं। तुम्हें जीवन में बहुत महत्वपूर्ण कार्य करने हैं। मुझे आशा है कि तुम एक प्रतिहारी होने के सभी दायित्वों का पूरी जिम्मेदारी से निर्वहन करोगे। सभी का कल्याण करो। मानवजाति की रक्षा करो। असहायों का सहारा बनो। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है।" शक्ति स्फटिक ने कहा।

"धन्यवाद! मैं आपको कभी निराश नहीं करूँगा।" अभिजीत ने एक बार फिर से स्फटिक को प्रणाम किया और तभी स्फटिक से निकली नीली रोशनी की एक तेज लहर में अभिजीत नहा गया।

रोमांचक यात्रा

अभिजीत जैसे नींद से जागा। उसने पाया कि वह शक्ति-केंद्र में स्फटिक वाले स्तम्भ के बगल में लेटा हुआ है। उसने स्फटिक की ओर देखा और फिर अपने आसपास, वहां कोई नहीं था। वह धीरे- धीरे उठा। उठते समय कोई वस्तु उसके कोट में से निकल कर उसके गले में झूल गयी। उसने अपने सीने की ओर देखा और उस वस्तु को अपने हाथ में लेकर ध्यान से देखा। वह प्रसन्नता से खिल उठा, उसने लॉकेट प्राप्त कर लिया था।

उसने देखा कि लॉकेट बिल्कुल वैसा ही था जैसा उसने सबके गले में देखा था। यह एक वृत्ताकार पट्टी के रूप में था। वह एक तरफ से आधी गोलाई तक वृत्ताकार था और बची हुई आधी गोलाई की तरफ से काँटेदार था। परन्तु काँटों में भी भिन्नता थी। उसके सात काँटों में से बीच वाला काँटा बड़ा था और उसके दोनों ओर छोटे-छोटे तीन काँटे थे। बीच वाले खाली भाग में दो त्रिभुज बने हुये थे, जो एक दूसरे के ऊपर उलटे रखे हुये थे और छः काँटों वाली एक आकृति बना रहे थे। देखने में वह किसी अस्त्र जैसा लग रहा था।

उसने लॉकेट अपनी मुट्ठी में बंद किया और आँखें बंद करके स्फटिक को एक बार पुनः धन्यवाद दिया। उसने महसूस किया कि उसके अंदर एक नयी ऊर्जा का संचार हो रहा है। उसने देखा कि उसके घाव जो उसे परीक्षा के समय लगे थे, वो भी भर चुके हैं। फिर उसने स्फटिक को प्रणाम किया और बाहर जाने के लिये मुड़ गया।

"उसे अब तक आ जाना चाहिए था? उसे इतनी देर क्यों लग रही है?" बेसब्री से प्रतीक्षा करती सरानी ने विशल्या से पूछा। सूर्य उदय हो चुका था। सरानी, विशल्या और नैमिष शक्ति- केंद्र के बाहरी प्रांगण में टहल रहे थे और अभिजीत के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

“लो वो आ गया।” विशल्या ने प्रसन्नता से कहा। सभी ने मुड़कर देखा कि अभिजीत प्रसन्नता से शक्ति- केंद्र की सीढियाँ उतरकर कर उन्हीं की ओर चला आ रहा है। वे भी अभिजीत की ओर बढे। अभिजीत ने आगे बढ़कर विशल्या के पैर छूकर आशीर्वाद लिया और सरानी को प्रणाम किया। नैमिष ने गले लगाकर उसे बधाई दी।

“तो अंततः तुम लॉकेट प्राप्त करके ही माने।” नैमिष ने हंसकर कहा।

“हाँ, तुम्हारी नाक का प्रश्न था न। मुझे कटी नाक वाला दोस्त नहीं चाहिए था।” अभिजीत ने कहा और सभी हंसने लगे।

“चलो, अब भोजन करके विश्राम कर लो। आज का दिन तुम्हारे लिये बहुत कठिन था।” सरानी ने कहा।

“नहीं! अभी समय नही हैं। मुझे पहले इलाक्षी को वापस लाना है।” अभिजीत ने कहा।

“अभिजीत! तुम्हें अभी विश्राम की आवश्यकता है। हम सन्ध्याकाल में इलाक्षी को वापस लाने जायेंगे।” विशल्या ने कहा।

“परंतु अभी क्यों नहीं?” अभिजीत ने पूछा।

“क्योंकि हम आयामों के नियमों से बंधे हुये हैं। इलाक्षी संध्याकाल में भूतकाल में गुम हुई थी। इसीलिये हम उस काल में उसी बेला में जा पाएंगे।” विशल्या ने स्पष्ट किया।

“ठीक है, फिर हम आज शाम को ही जायेंगे।” अभिजीत ने एक गहरी साँस भरकर कहा। विशल्या ने सिर हिलाकर सहमति दी और फिर सभी लोग वापस महल में लौट आये।

संध्याकाल में विशल्या, सरानी, नैमिष और अभिजीत शक्ति-केंद्र में जाने के लिये तैयार हुये। अभिजीत ने वही कपड़े पहने हुये थे, जो उसने परीक्षा के समय पहनीं थी। अब से यही पोशाक उसकी पहचान थी। वो पैदल ही शक्ति -केंद्र की ओर जा रहे थे, क्योंकि सरानी अभिजीत को कालयात्रा के नियमों से अवगत कराना चाहती थी।

“तो कालयात्रा करने का मार्ग शक्ति-केंद्र से होकर जाता है?” अभिजीत ने पूछा।

“हाँ!” सरानी ने उत्तर दिया।

“इसीलिये आपने मुझपर हमला किया था, जिससे कि आप मुझे शक्ति-केंद्र की सहायता से भूतकाल में भेजकर अपने पुत्र को वापस प्राप्त कर सकें?” अभिजीत ने विशल्या की ओर मुड़कर उन्हें संबोधित करते हुये कहा।

“हाँ! परन्तु ये मेरी भूल थी। मैं पुत्र मोह में अंधी हो गयी थी।” विशल्या ने गहरी साँस भरकर कहा।

“परन्तु अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, हम अब भी यह कार्य कर सकते हैं। मैं अब इसके लिये तैयार हूँ।” अभिजीत ने कहा।

“नहीं! ये नहीं हो सकता।” विशल्या ने कहा।

“परन्तु क्यों नहीं हो सकता?” अभिजीत ने जिद्द करते हुये कहा।

“क्योंकि भूतकाल को बदला नहीं जा सकता।” सरानी ने स्पष्ट स्वर में कहा।

“क्यों? क्या आपनें कभी प्रयास नहीं किया ?” अभिजीत ने धृष्टता से पूछा।

“अभिजीत तुम सीमा पार कर रहे हो। इतना जिद्दी होना ठीक नहीं है।” विशल्या ने अभिजीत को टोका।

“क्षमा कीजिये सरानी! मेरा आशय वह नहीं था। मैं बस कारण जानना चाहता था।” अभिजीत ने हाथ जोड़कर कहा।

“कोई बात नहीं अभिजीत, मैं जानती हूँ तुम्हें जिज्ञासा है। हमनें ऐसा करने का प्रयास इसलिए नहीं किया, क्योंकि नियम हमें इसकी आज्ञा नहीं देते। जिन्होंने ये नियम बनाये हैं, उन्होंने सारे तथ्यों को प्रमाणित करके ही नियमों का निर्माण किया है और यदि नियम बने हैं, तो इस आधार पर ही बने होंगे कि भूतकाल को नहीं बदला जा सकता।” सरानी ने मुस्कार कर स्पष्ट किया।

“जी! मैं आपका आशय समझ गया। यानि हमें भूतकाल में शक्ति स्फटिक भेजेगा?” अभिजीत ने पूछा।

“नहीं। स्फटिक सिर्फ हमें उस साधन तक पहुँचायेगा, जो हमें भूतकाल में भेजेगा।” सरानी ने उत्तर दिया।

“अच्छा! और वो साधन क्या है?” अभिजीत ने चौंककर पूछा।

“वह एक प्राचीन मंदिर में है, जो स्फटिक द्वारा रचित एक दूसरे आयाम में स्थित है।” सरानी ने कहा।

“ये किसका मंदिर है? क्या इसका भी कोई नाम है?” अभिजीत ने पूछा उसकी जिज्ञासा बढ़ती गयी।

“हाँ! यह सुतान्तु देव का मंदिर है। हम इसे कजराई का मंदिर कहते हैं।” सरानी ने बताया।

“और चूँकि तुम्हें पुराने मंदिर और महलों को देखने में अत्यंत रूची है, तुम्हें वो मंदिर बहुत पसन्द आयेगा।” विशल्या ने कहा।

“हाँ, मुझे इन मंदिरों और महलों की स्थापत्यकला में बहुत रुचि है। मेरे दोस्तों को तो ऐसा लगता है कि शायद मैं पिछले जन्म में महल और मंदिर बनाने वाला कारीगर

रहा होऊँगा, इसलिए मैं उसे देखने के लिये व्यग्र हो रहा हूँ।" अभिजीत ने कहा और सभी हँसने लगे।

जल्दी ही शक्ति-केंद्र दिखाई देने लगा। वो सभी शक्ति- केंद्र में प्रवेश कर गये। अंदर पहुँच कर सभी ने शक्ति स्फटिक को प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़े हो गये। सरानी ने सभी को स्फटिक के चारों ओर एक घेरे में खड़े होने के लिये कहा। सभी ने वैसा ही किया।

सरानी ने एक कदम आगे बढ़ाया और कुछ मंत्र बुदबुदाते हुये एक विशिष्ट ढंग से अपने दोनों हांथों को घुमाया। कुछ क्षणों बाद हवा में उनके चारों ओर हरे रंग का एक ऊर्जा का गोला प्रकट हो गया। अचानक सरानी मन्त्र बुदबुदाते हुये ही तेजी से अपने दोनों हाथों को समेट कर अपने सामने की ओर ले आई और उसी मुद्रा में ऊर्जा का वह गोला भी सिमट कर तेजी से उन सभी को अपने साथ लेकर शक्ति स्फटिक में समा गया।

अभिजीत ने अचानक स्वयं को सभी के साथ एक अजीब उजाड़ सी जगह पर पाया। उसे एक तेज झटका लगा था और वह अपने घुटनों पर बैठ कर झुक गया। नैमिष ने उसे संभाला और धीरे से उठाया।

“ये तुम्हारा प्रथम अवसर है न इसीलिये। चिंता की कोई बात नहीं है। तुम धीरे- धीरे इसके अभ्यस्त हो जाओगे।" विशल्या ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा।

“मुझे ऐसा लगा, जैसे किसी ने मुझे तेज घूमते हुए झूले पर बिठा दिया हो। मुझे झूला झूलना बिल्कुल भी पसन्द नहीं है।" अभिजीत ने कहा।

“मतलब तुम झूले पर बैठने से डरते हो?” नैमिष ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

“नहीं!” अभिजीत ने मुँह बनाकर कहा।

अचानक अभिजीत की आँखें फैल गयी। उसने देखा कि उसके सामने उसकी उम्मीद से भी प्राचीन एक मंदिर है। मंदिर लगभग खंडहर हो चुका था। मुख्य द्वार पर लकड़ी का बना एक बड़ा और मजबूत दरवाजा था, जिस पर कई प्राचीन कथाओं के चित्र उकेरे हुये थे, परन्तु समय की धूल नें उन्हें धूमिल कर दिया था। सरानी ने नैमिष को इशारा किया, उसनें आगे बढ़कर दरवाजे को धक्का दिया। थोड़ी मशक्कत के बाद दरवाजा चरमरा कर खुल गया। सभी ने अंदर प्रवेश किया। प्रारम्भ में एक छोटा कक्ष था, जहाँ दीवारों में कुछ अलमारियां बनी हुई थीं। कक्ष के आगे एक गलियारा था। गलियारा एक बड़े से आँगन में खुलता था, जिसके बीच में एक टूटी-फूटी यज्ञ वेदी बनी हुई थी। आँगन के ऊपरी हिस्से में छत नहीं थी और अगल- बगल की दीवारों में खिड़कियां थी। यज्ञ वेदी के चारों ओर चार स्तम्भ लगे हुये थे, जो एक टूटे हुये छोटी सी छत रुपी निर्माण के अवशेषों को संभाले हुये थे। स्तंभों के ऊपरी हिस्से में कुछ मानव आकृतियां उकेरी हुई थी, जो कि छत रुपी निर्माण को अपने कन्धों पर उठाये हुये प्रतीत रही थी।

“ये क्या चीज है?” अभिजीत ने उन मानव आकृतियों की ओर इशारा करके कहा।

“ये आकृतियां यह बताती हैं कि इस संसार रुपी छत को स्त्री और पुरुष दोनों मिल कर उठाएं, तो वह हँसी-खुशी आंनद से उठ जाती हैं, कुछ भी भार नहीं लगता और वही संसार रूपी छत एक पुरुष या एक स्त्री अथवा दो पुरुष या दो स्त्रियां मिल कर उठाए तो बोझ हो जाता है। यह तुम इन आकृतियों के चेहरे पर स्पष्ट रुप से देख सकते हो कि स्त्री और पुरुष युगल के चेहरे पर असीमित आनन्द है और अन्य के चेहरे क्षोभ, चिंता भार से विकृत दिखाई दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त एक और व्याख्या यह भी है कि ये शार्दुल नाम के किसी प्रकार के देव हैं।” सरानी ने स्पष्ट किया। अभिजीत ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

आँगन के अगले हिस्से में मुख्य गर्भ गृह था, जिसके द्वार की सीढ़ियाँ अर्धवृत्ताकार और मछली, शंख व अन्य आकृतियों से अलंकृत थी। द्वार के किनारों वाली दीवार पर द्वार की शक्ल में कई आकृतियाँ उकेरी गयी थी। अभिजीत उस वास्तु शिल्प को ध्यान से देखने लगा। उस पर कई देवी -देवताओं और पशुओं की मूर्तियां बनी हुई थी और द्वार के अगल- बगल दो स्त्रियों की थोड़े बड़े आकार की मूर्तियां थी। इसके साथ ही दीवार के ऊपरी हिस्से में एक स्त्री की मूर्ति थी, जिसके एक हाथ में बालक था और दूसरे हाथ से वो नीचे खड़े दूसरे बालक को फल खिला रही थी। अभिजीत के मन में फिर से प्रश्नों की बाढ़ आ गयी। उसने मुड़कर सरानी की ओर देखा और पूछने के लिये मुँह खोला ही था कि सरानी ने उसे चुप करा दिया।

“मैं समझ गयी, तुम क्या पूछना चाहते हो? मैं समझाती हूँ, देखो ये दो स्त्रियां जो द्वार के अगल- बगल बनी हैं, वो गंगा और यमुना नदियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि जब तक गंगा और यमुना में जल रहेगा, हमारी सांस्कृतिक विरासत का अस्तित्व भी ऎसे ही बना रहेगा। द्वार के ऊपर जो स्त्री बनी हुई है, उसकी व्याख्या इस प्रकार है, ऎसा कहा जाता है कि देव और असुर दोनों दो सगी के बहनों के पुत्र हैं। अदिति से देव और दिति से असुर हुए। ये मूर्तियां उन्हीं के सम्बन्धों का प्रतिनिधित्व करती हैं।” सरानी ने स्पष्ट किया।

“मैं समझ गया। आप सच कहती हैं, हमारी सांस्कृतिक विरासत सचमुच अतुलनीय है। चलिये अंदर चलते हैं। “ अभिजीत ने मुस्करा कर कहा।

सभी लोग गर्भ गृह का द्वार खोलकर अंदर प्रविष्ट हुये। अभिजीत सबसे पीछे था। अचानक खट्ट की आवाज हुई और सभी लोग ये देखने के पीछे मुड़े कि क्या हुआ। पीछे अभिजीत दर्दभरा मुँह बनाये अपने सिर को जोर से मल रहा था। चूँकि द्वार अपेक्षाकृत छोटा था, इसलिए अभिजीत का सिर अंदर जाते समय द्वार के छज्जे से टकरा गया था।

“ये मंदिर के दरवाजे इतने छोटे क्यों बनाते हैं?” अभिजीत ने थोड़े गुस्से में कहा।

“ये छोटे इसलिए बनाये जाते थे, जिससे कि कोई भी प्राणी चाहे वह राजा हो या रंक , स्त्री हो या पुरुष, ईश्वर के समक्ष विनम्र भाव से सिर झुकाकर उपस्थित हो।” सरानी ने समझाया।

अभिजीत जो आँखें बंद किये अपने सिर पर हाथ मल रहा था, उसने हामी भरी और फिर सामने देखने के लिये सिर उठाया और वह उस दृश्य की प्रशंसा किये बिना न रह सका जो वह देख रहा था।

गर्भ गृह एक विशाल षट्भुजाकार कक्ष था, जिसकी अलंकृत नक्काशीदार मीनार बहुत ऊंचाई तक फैली हुई थी। मीनार की छत एक जगह से टूटी हुई थी, जहाँ से थोड़ी से रोशनी छनकर आ रहीं थी। गर्भ गृह की ऊपरी दीवारों पर भगवान शिव और भगवान विष्णु से सम्बंधित कई पौराणिक कथाओं के चित्र उकेरे हुये थे, जिनके रंग धूमिल हो चुके थे। निचली दीवारों में अलमारियां बनी हुई थी, जिनमे कुछ ग्रन्थ बहुत सहेज कर सुरक्षित रखे गये थे।

परन्तु अभिजीत का ध्यान, जिसने सबसे अधिक आकर्षित किया, वह सुतान्तु देव की अष्टभुजाधारी प्रतिमा थी। प्रतिमा दस फुट से भी ऊँची और विशालकाय थी। अभिजीत ने इससे सुंदर प्रतिमा शायद ही कहीं देखी थी। यह एक- दो फुट ऊँचे तल पर स्थित थी, जिस पर चढ़ने के लिये बीच में दो सीढ़ियाँ थीं। प्रतिमा आधी नीली और आधी हरे काले रंग की थी। देवता का मुख अत्यंत शांत था और चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। उनका बायाँ हाथ घुटने पर रखा हुआ था। दूसरे हाथ में त्रिशूल, तीसरे हाथ में धनुष और चौथे हाथ में डमरु था। दायीं तरफ का पहला हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में था, दूसरे हाथ में गदा, तीसरे हाथ में शंख और चौथे हाथ में उन्होंने एक चक्र पकड़ा हुआ था, जो देखने में प्रतिहारियों के लॉकेट की आकृति जैसा था। वो एक बड़े से सिंहासन पर विराजमान थे। उनका बायाँ पैर बैठने की मुद्रा में सिहांसन पर मुड़ा हुआ था और दायाँ पैर नीचे पाद पीठिका पर रखा हुआ था।

प्रतिमा के दोनों ओर आगे बड़े- बड़े दीप स्तम्भ थे। जो उनके कक्ष में प्रवेश करते ही स्वतः ही जल उठे थे, जिससे पूरा कक्ष पीली रोशनी से नहा गया था। वह दृश्य अलौकिक था।

“ये तो... लगता है जैसे...” अभिजीत जो प्रतिमा को ध्यान से देख रहा था उसके मुँह से अनायास ही निकला।

“भगवान शिव और भगवान विष्णु का संयुक्त रूप है।” सरानी ने अभिजीत की बात पूरी करते हुये कहा।

अभिजीत चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिये पीछे मुड़ा। उसने जिज्ञासा से सरानी की ओर देखा, जिससे कि वो उसे सुतान्तु देव के विषय में और बताये। परन्तु सरानी ने विशल्या से

आग्रह किया कि वो अभिजीत को इसके विषय में जानकारी दे। विशल्या ने सहमति दी और बताना प्रारम्भ किया।

“सुतान्तु , भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों का ही एक नाम है। चूँकि हम भगवान शिव के परम शिष्य सप्तऋषियों द्वारा स्थापित किये गये थे, इसीलिये भगवान शिव हमारे आराध्य देव हैं, और भगवान विष्णु प्रजापालक हैं और माया व सर्वशक्ति के स्वामी है। हमारी शक्तियां उन्ही की देन है, अतः वे भी हमारे लिये पूज्य है। तभी हम संयुक्त रुप से उनकी पूजा करते हैं और उनके संयुक्त रूप को सुतान्तु देव कहकर पुकारते हैं।” विशल्या ने स्पष्ट किया।

“क्षमा कीजिये, किन्तु यदि ये हमारे आराध्य देव हैं तो फिर ये मंदिर इतना टूटा फूटा और उजड़ क्यों है? और इसे दूसरे आयाम में ले आने की क्या ऐसी आवश्यकता आन पड़ी?” अभिजीत ने अपने मन में घुमड़ते संदेह को दूर करने के लिये प्रश्न किया।

“हमें ऐसा करना पड़ा। ये तब की बात है जब विशल्या दीदी के जाने के बाद, मुझे शक्ति -केंद्र का संरक्षक बनाया गया था।

उस समय यह मंदिर शक्ति -केंद्र के प्रांगण में ही स्थित हुआ करता था और अपनी भव्यता के चरम पर था। कुछ असुरों को लगा कि मैं उतनी शक्तिशाली संरक्षक नहीं हूँ, इसीलिये उन्होंने इस मंदिर पर आक्रमण करने का निश्चय किया ताकि वो भूतकाल में जाकर अपनी जाति का प्रभुत्व स्थापित कर सकें। वो कुछ हद तक सफल भी हुये। हमनें उनसे भयंकर युद्ध किया। यदि उस समय विशल्या दीदी ने हमारी सहायता न की होती, तो हम विजयी नहीं हो पाते। हमनें उन सारे असुरों को जो भूतकाल में जाने का रहस्य जान गये थे, उन्हें नष्ट कर दिया। मंदिर अपवित्र हो चुका था और इसे भारी क्षति पहुंची थी। तब विशल्या दीदी के सुझाव पर मैंने शक्ति -केंद्र से आग्रह किया कि इसकी सुरक्षा वो अपने स्तर पर करें और इसे किसी दूसरे आयाम में स्थापित करें।

शक्ति-केंद्र ने हमारा निवेदन स्वीकार किया और मन्दिर को दूसरे आयाम में स्थापित कर दिया गया। हमने इसे पवित्र किया और प्रत्येक वर्ष में एक बार इसकी भव्य पूजा करने का निर्णय लिया और केवल संरक्षक ही इस आयाम में प्रवेश कर सकते थे। अब इस आयाम में केवल संरक्षक ही आ सकते हैं या फिर जिसे वो अपने साथ लाना चाहे वह आ सकता है। इसके अतिरिक्त हमनें संसार में ये बात प्रसारित करवा दी कि मंदिर और भूतकाल में जाने का साधन नष्ट हो चुका है और सुतान्तु देव का एक दूसरा मंदिर महल के पिछले हिस्से में स्थापित किया गया है, जिससे कि सभी को इस बात पर विश्वास हो जाये।” सरानी ने बताया।

“समझा! तो अब वो साधन कहाँ है, जिसके द्वारा हम भूतकाल में जायेंगे?” अभिजीत ने पूछा।

"बताती हूँ, परन्तु पहले हम सुतान्तु देव की पूजा करेंगे।" सरानी ने मुस्कराकर कहा। अभिजीत ने सहमति में सिर हिलाया और फिर सभी ने पूर्ण भक्ति भाव से सुतान्तु देव की पूजा अर्चना की। पूजा के पश्चात् सरानी ने अभिजीत को बायीं ओर से घूम कर प्रतिमा के पीछे आने के लिये कहा। सभी लोग उस तरफ चल दिये।

अभिजीत ने देखा कि प्रतिमा जिस ऊँचे तल पर स्थित थी, वह पीछे से काफी बड़ा था, और व्यवस्थित रूप से षट्भुजाकार कटे हुये पत्थरों से बना हुआ था। प्रतिमा के ठीक पीछे एक और छोटा वृत्ताकार आधे फुट ऊँचा तल था, जिस पर पत्थर से बना हुआ एक बड़ा सा दीर्घवृत्ताकार कंटीला चक्र स्थापित था। उस चक्र का एक सिरा वृत्ताकार तल की परिधि पर था और दूसरा सिरा तल के केंद्र पर स्थित था।

"तो ये चक्र ही वह द्वार है जो हमें भूतकाल में पहुँचायेगा। है न?" अभिजीत ने उत्साह से कहा।

"हाँ! परन्तु जाने से पहले मैं तुम्हें कुछ नियमों से अवगत कराना चाहती हूँ। ध्यान रहे, अभिजीत समय यात्रा के नियम बहुत ही कठोर होते हैं। सबसे पहला और महत्वपूर्ण नियम ये है कि तुम भूतकाल के किसी भी प्रतिहारी के सामने नहीं आ सकते। अगर किसी प्रतिहारी ने तुम्हें वहाँ देख लिया, तो तुम वापस नहीं आ पाओगे और भूतकाल में ही कैद होकर रह जाओगे। सामान्य मानव उस समय हमारे विषय में कुछ विशेष नहीं जानते थे, अतः उनके द्वारा देखे जाने पर कोई हमें कोई समस्या नहीं होती थी।" सरानी ने समझाया।

"परन्तु क्यों? हम प्रतिहारी तो एक ही जाति के हैं न?" अभिजीत ने अचरज से पूछा।

"क्योंकि हम भविष्यदर्शी नहीं हैं। हम न ही जान सकते हैं और न ही देख सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है। भूतकाल के प्रतिहारियों के लिये हम भविष्य हैं, इसलिए यदि उन्होंने हमें देखा तो समयधारा के नियम टूट जायेंगे और तुम्हें सदा के लिये वहीं का होकर रहना पड़ेगा।" सरानी ने समझाया। अभिजीत ने सर हिलाकर स्वीकृति दी।

"और यदि हमारा सामना किसी असुर से हो गया तब?" अभिजीत ने फिर पूछा।

"तब उस स्थिति में यदि वह तुम पर आक्रमण करता है , जो कि वह अवश्य करेगा , उसे जीवित मत छोड़ना।" सरानी ने कहा।

"और अगला नियम?" अभिजीत ने पूछा।

"अगला नियम ये है कि तुम्हें वापस आने के लिये ये मंदिर वहाँ उपलब्ध नहीं होगा। तुम्हें वापस आने के लिये शक्ति-केंद्र के एक मील के दायरे में आना होगा, तभी हम तुम्हें भूतकाल से वापस इस यंत्र की सहायता से खींच पाएंगे।" सरानी ने बताया।

"मैं पूछने ही वाला था कि हम वापस कैसे आएंगे? अच्छा हुआ आपनें बता दिया।" अभिजीत ने मुस्कराकर कहा।

"पर ये इतना आसान भी नहीं है।" विशल्या ने मध्यस्थता करते हुये कहा और

अभिजीत की मुस्कान गायब हो गयी। विशल्या आगे बढ़ी और उसने अभिजीत और नैमिष को एक एक लाल धागा दिया, जिसके बीचों-बीच चाँदी में एक चिकना सफेद रंग का पत्थर जड़ा हुआ था। अभिजीत ने उस पत्थर को ध्यान से देखा, जिसमें से अजीब सी सफेद रोशनी बेहद हल्के से प्रस्फुटित होती प्रतीत हो रही थी।

"ये कालसूत्र भूतकाल में हमारे लिये संपर्क सूत्र का कार्य करेगा और तुम्हें वापस लाने में भी। इसे अपने दायें हाथ की कलाई पर अच्छे से बांध लो। इलाक्षी के पास ये न होने के कारण ही हम उसे वापस नहीं ला पाए थे और ये इलाक्षी के लिये रख लो।" विशल्या ने अभिजीत को एक और कालसूत्र देते हुये कहा। अभिजीत ने कालसूत्र अपने हाथ में ले लिया और उसे अपने कोट की जेब में रख लिया। अभिजीत और नैमिष दोनों ने अपनी कलाई पर अच्छे से कालसूत्र को बांध लिया।

"सरानी! क्या कोई और नियम बताने शेष हैं?" अभिजीत ने विनम्रता से पूछा।

"इस समय तो नहीं, क्योंकि अभी तुम्हें उनको जानने की आवश्यकता नहीं है। हम बाद में इसके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। अभी के लिये नैमिष तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा। तुम्हें बस जाना है और कुछ ही क्षणों में वापस आना है।

तुम वहाँ जितना समय व्यतीत करोगे, यहाँ भी समय वैसा ही चलेगा और चूँकि हम तुम्हें ठीक उसी समय में भेज रहे हैं, जब इलाक्षी वहाँ पहुँची थी, तो उस पर समय का प्रभाव नहीं पड़ा होगा।" सरानी ने समझाकर कहा।

"यानि जब तक हम वापस नहीं आते, आप यहीं हमारी प्रतीक्षा करेंगी?" अभिजीत ने पूछा।

"हाँ! चिंता मत करो, तुम्हारे शक्ति-केंद्र के एक मील के दायरे में आते ही कालद्वार हमें संकेत दे देगा और हम तुम्हें वापस बुला लेंगे।" सरानी ने उत्तर दिया।

"और यदि हमें आने में बहुत देर हुई या हम शक्ति -केंद्र के एक मील के दायरे में नहीं पहुँच पाये तब?" अभिजीत ने जिज्ञासावश पूछा। सभी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"अभिजीत! अपनी सोच को सदैव सकारात्मक रखा करो।" विशल्या ने कहा।

"मैं आपकी बात समझता हूँ, परन्तु मेरे ऐसा कहने का कोई नकारात्मक मतलब नहीं था। मुझे बस परिस्थिति को दूसरे ढंग से देखने की आदत है। मेरे विचार में नकारात्मक सोच ही मुझे और अधिक सकारात्मक सोचने की क्षमता प्रदान करती है और मैं हर परिस्थिति के अनेक पहलुओं को सोच पाता हूँ और होने वाली सँभावनाओं पर विचार कर पाता हूँ।" अभिजीत ने अपना पक्ष रखा और विशल्या के साथ- साथ सरानी भी मुस्कुरा दी।

"अब हमें आज्ञा दीजिये ताकि हम इलाक्षी को लेने जा सकें।" अभिजीत ने हाथ

जोड़कर कहा।

सरानी ने सिर हिलाकर आज्ञा दी और उन्हें कालद्वार वाले तल पर जाने के लिये कहा। अभिजीत नैमिष के पीछे- पीछे कालद्वार के आगे खड़ा हो गया। सरानी ने अपनी आँखें बंद कीं। कुछ मन्त्र बुदबुदाये, साथ ही अपने दोनों हाथों को उठाया और बाएं से दायें तेजी से लहराया। सरानी के ऐसा करते ही कंटीला कालद्वार सफ़ेद रोशनी से चमकने लगा और उसमें हरकत हुई। कालद्वार का एक सिरा अपने दूसरे सिरे की धुरी पर ; जोकि तल के केंद्र पर जमा हुआ था ; अभिजीत और नैमिष के ऊपर से निकल कर तल की परिधि की गोलाई के साथ बाएं से दायें पहले धीमे फिर तेजी से घूमने लगा। इससे अभिजीत और नैमिष के चारों ओर सफ़ेद रोशनी की एक वृत्ताकार सुरंग बनने लगी।

“क्या हमें फिर से पहले जैसा झटका लगेगा?” अभिजीत ने नैमिष से पूछा।

“हाँ! क्या तुम्हें फिर से डर लग रहा है?” नैमिष ने हँसते हुये चुटकी ली। अभिजीत ने मुस्करा कर ’न’ में सिर हिला दिया।

कालद्वार ने तेजी से घूमते हुये एक चमकदार सफ़ेद रोशनी की वृत्ताकार सुरंग बना दी और दोनों उस रोशनी में ओझल हो गये। कुछ क्षण घूमने के बाद कालद्वार एक झटके से रुक गया और रोशनी छँट गयी। अभिजीत और नैमिष वहाँ से अदृश्य हो चुके थे।

भूतकाल में-

एक तेज धक्के के साथ अभिजीत और नैमिष ने खुद को एक अनजान स्थान पर पाया। अभिजीत जो पिछली बार के झटके से सावधान था, इस बार जल्दी संभल गया। दोनों ने स्वयं को एक मनोरम स्थान पर पाया। उनके सामने कुछ दूरी पर एक बहुत ऊँचा झरना था, जो कि एक विशाल पर्वत से गिर रहा था। उनके तीन ओर ऊँची- ऊँची खडी शिलाएं थी और बहुत सी वनस्पतियां उगी हुई थीं। झरने का पानी नदी के रुप में पत्थरों के बीच से बहता हुआ, उनके सामने से जा रहा था। वो कुछ क्षणों के लिये उस दृश्य में खो गये।

अभिजीत , जो कि झरने और आसपास फैली वनस्पतियों की सुंदरता निहार रहा था , उसकी आँखें एकाएक कुछ देखकर ठहर गयीं और वो एक अनजान शक्ति के वशीभूत होकर आगे बढ़ने लगा। नैमिष ने अभिजीत को आगे बढ़ते देख कर उसकी दिशा का पीछा किया और उसने देखा कि इलाक्षी झरने के पास से धीरे- धीरे पत्थरों को पार करके उनकी ही ओर आ रही है।

अभिजीत को ये सब सपने जैसा लग रहा था। इलाक्षी को आगे बढ़ते हुये देखकर उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। वो सोच रहा था कि आज वह इलाक्षी से अपने दिल की बात कहेगा। वो कहेगा कि आज इतनी दूर समय की सीमाओं के पार वो सिर्फ उसे लेने आया है। वो कहेगा कि उसने उसे पाने के लिये खुद को बदल दिया है और उसके जैसा बन गया है। वो कहेगा कि शायद ये सारी परिस्थितियां इसलिए बनी, ताकि वो एक- दूसरे के हो सकें। वो अपनी ऊँगली में इलाक्षी की ऊँगली से हुये स्पर्श का एहसास करके प्रसन्न हो रहा था, जब वो आयाम द्वार में गिर कर अदृश्य हो गयी थी और आज वो इतने समय बाद उसके सामने थी। अभिजीत की साँस में साँस आ गयी थी।

इलाक्षी ने भी किसी को प्रतिहारियों की वेशभूषा में अपनी ओर आता देखा और ये देख कर उसकी आँखें आश्चर्य से फ़ैल गयी कि वो अभिजीत था। वो अब तक अभिजीत को समझ नहीं पायी थी, या वो समझना ही नहीं चाहती थी, परन्तु आज वो उसे एक नए दृष्टिकोण से देख रही थी।

नैमिष अभिजीत के पीछे-पीछे ध्यान से उन दोनों के व्यवहारों को देख रहा था। अभिजीत और इलाक्षी दोनों एक दूसरे से कुछ दूरी पर रुके। अभिजीत ने फिर से बड़े ध्यान और प्यार से उसकी भूरी आँखों, उसकी नाक के पास बने हुये तिल और फिर उसके चेहरे को देखा। इलाक्षी ने भी अभिजीत के माथे के निशान, उसकी नीली आँखों, उसकी नयी वेशभूषा और उसके लॉकेट को; जोकि प्रतिहारियों का प्रतीक था; बड़े ध्यान से देखा। उसने अभिजीत के उससे कुछ कहने की प्रतीक्षा की।

कुछ क्षणों बाद अभिजीत ने इलाक्षी से कुछ कहने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि अचानक एक बच्चे के रोने के तेज स्वर और तलवारों की टंकार की आवाज ने उन तीनों का ध्यान खींच लिया।

जन्म कथा

वर्तमान में -

“अब हमें चलना चाहिए विशाला।” नैमिष और अभिजीत के कालद्वार में अदृश्य हो जाने के पश्चात् विशल्या ने कहा।

“परन्तु क्यों? वो दोनों तो अभी थोड़ी ही देर में वापस आ जायेंगे न?” सरानी ने कहा।

“अभिजीत अभी नहीं आयेगा। वो मेरे समय में गया है और मैं जहाँ तक उसे जानती हूँ वो समय की गतिविधि में हस्तक्षेप अवश्य करेगा और इसी कारण उन्हें आने में समय लगेगा। हमें उनके संकेत मिलने की प्रतीक्षा करनी होगी।” विशल्या ने स्पष्ट किया।

“यदि आपको लगता है तो उचित ही होगा। चलिये चलते हैं।” सरानी ने सहमति दी और दोनों वापस महल में आ गये।

भूतकाल में-

तीनों ने एक साथ वो तीव्र ध्वनि सुनी। उन्होंने अचरज से एक दूसरे को देखा। और ध्यान देने का प्रयास किया कि आवाज कहाँ से आ रही है।

“ये बच्चे के रोने की आवाज कहाँ से आ रही है? लगता है कोई मुसीबत में है? हमें चलकर देखना चाहिए?” अभिजीत ने उत्तेजना में नैमिष से कहा।

“अभिजीत! तुम शायद भूल गये हो कि हम भूतकाल में हैं और नियमों से बंधे हुये हैं। हम न ही किसी के सामने आ सकते हैं और न ही किसी घटना में हस्तक्षेप कर सकते हैं।” नैमिष ने समझाया।

“परन्तु कोई संकट में है। क्या हम अपनी आँखों के सामने सब कुछ देखेंगे और कुछ नहीं करेंगे?” अभिजीत ने दुखी स्वर में कहा।

“मैं जानता हूँ, ये कठिन है, परन्तु हमें यही करना होगा। अब हमें इलाक्षी को लेकर

यहाँ से चलना चाहिए।" नैमिष ने अभिजीत के कंधे पर हाथ रखकर उसे समझाया।

अभिजीत ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और वो सब जाने के लिये मुड़े। तभी अचानक एक ह्रदय विदारक चीख और बच्चे के रोने के पहले से भी तीव्र स्वर ने उनके क़दमों में बेड़ियां जकड़ दीं और उन्हें रुकना पड़ा। उन्होंने मुड़कर झरने के ऊपर की ओर देखा और बच्चे के रोने की पास आती हुई आवाज के साथ एक शिशु नीचे की ओर गिरता हुआ दिखाई दिया।

उनके पास अब कोई चारा नहीं बचा था और उन्हें बच्चे को बचाना ही था। परन्तु तभी झरने से नीचे गिरते पानी के पीछे से एक तंत्र किरण की लहर निकली, जिसने हवा में एक तन्त्र जाल बनाना आरम्भ कर दिया। शिशु बिना किसी हानि के सीधा जाकर उस तंत्र जाल में सुरक्षित जा गिरा। तंत्र जाल ने सिमट कर शिशु को अपने आगोश में ले लिया और उसे लेकर वापस झरने के पीछे चला गया।

अभिजीत बिना सोचे-समझे तेजी से उस ओर भागा। नैमिष और इलाक्षी जब तक कुछ समझ पाते अभिजीत ऊँचे- नीचे पत्थरों की परवाह न करते हुये तेजी से झरने में प्रवेश कर गया। पानी बहुत तेजी से नीचे आ रहा था, जिसकी वजह उसे झरने में प्रवेश करने में दिक्कत हुई, परन्तु अंदर पहुँच कर उसने देखा कि वहां पर एक छोटी सी किन्तु लंबी कन्दरा थी जो कि पानी की मोटी लहर के पीछे छिपी हुई थी। अभिजीत ने कन्दरा के अंदर प्रवेश किया और अँधेरे में अनुमान के सहारे अंदर की ओर बढ़ा। कुछ दूरी पर पहुँचते ही वह अपनी जगह पर जम गया।

उसने देखा कि उसके सामने एक वृद्ध व्यक्ति एक हाथ में शिशु और दूसरे हाथ में एक मशाल लिये हुये खड़ा हुआ है। मशाल की रोशनी में उसने देखा कि उस वृद्ध व्यक्ति के बाल और दाढ़ी लंबे और सफ़ेद थे। उसकी आँखें थोड़ी अंदर की ओर घँसी हुई थी, जिनसे उसके जीवन का लंबा अनुभव परिलक्षित हो रहा था।

उसने साधुओं की तरह गेरुए रंग की धोती और अंगवस्त्र धारण किये हुये थे, गले में एक रुद्राक्ष की माला थी। उसके माथे पर सात छोटे- छोटे सितारे चंद्र की आकृति में दोनों भौंहों के बीच बने हुये थे।

वो अभिजीत की ओर तनकर इस प्रकार खड़ा था, मानो अभिजीत की ही प्रतीक्षा कर रहा हो। अभिजीत तुरन्त शिशु की रक्षा हेतु हमले के लिये तैयार हो गया। परन्तु उसने

अपना मशाल वाला हाथ आगे की ओर लाकर अभिजीत को रुकने का इशारा किया।

“रुक जाओ!” उस वृद्ध ने कहा। उसके स्वर में धमकी से ज्यादा आज्ञा का भाव प्रकट हो रहा था। अभिजीत रुक गया और सीधा खड़ा हो गया।

“आप कौन है? और इस बच्चे को कहाँ ले जा रहे हैं?” अभिजीत ने पूछा।

“मेरे विषय में तुम्हें जल्दी ही ज्ञात हो जायेगा। अभी के लिये बस इतना जान लो कि मैं इस शिशु की रक्षा कर रहा हूँ। अभी तुम्हारा बाहर जाना उचित होगा। तुम्हारे मित्र संकट में हैं। उनकी सहायता करो। वापस आने पर मैं तुम्हें यहीं मिलूंगा। अब शीघ्रता करो।” उस वृद्ध व्यक्ति ने कहा। अभिजीत को न जाने क्यों उस व्यक्ति की बातों में सच्चाई का अनुभव हुआ और वो ’हाँ’ में सिर हिलाकर तेजी से बाहर की ओर निकल गया।

नैमिष और इलाक्षी अभी समझ ही रहे थे कि अभिजीत नियमों के प्रति कितना बेपरवाह है। उन्होंने पहले अभिजीत को झरने की ओर भागते और फिर एक-दूसरे की ओर देखा। नैमिष तो थोड़ा बहुत अभिजीत को जानता ही था, किन्तु इलाक्षी, जो अभिजीत से अनजान थी, उसकी इस हरकत से हैरान रह गयी थी।

“ये आखिर कर क्या रहा है? इसे नियम पता है न? और सबसे पहले ये समझाओ कि इसे प्रतिहारी कैसे बना दिया गया?” इलाक्षी ने क्रोधित स्वर में पूछा। नैमिष जानता था कि इलाक्षी नियमों की पक्की है और उनका पूर्णतयः पालन करने पर जोर देती थी। कभी- कभार तो वो नैमिष को भी नियमों के पालन के विषय में टोक देती थी।

“अभी बातों का समय नहीं है। हमें उसे रोकना होगा। चलो।” नैमिष ने कहा। इलाक्षी ने सिर हिलाकर सहमति दी।

दोनों तेजी से अभिजीत के पीछे भागे, परन्तु अचानक तभी उनका रास्ता एक मुसीबत ने रोक लिया। उनके सामने एक असुर वहीं से आकर पानी में गिरा जहाँ से वह शिशु आया था। असुर ने पानी में एक गोता खाया और बाहर निकला। नैमिष और इलाक्षी उस असुर को देख कर भौचक्के रह गये।

उन दोनों ने पहले कभी ऐसे असुर को नहीं देखा था। वह आकार में उनसे दुगुना बड़ा और बलिष्ठ था। वो बहुत घायल था। उसके बड़े सिर में दो सींग थे, जो कि उसके सिर से

निकलकर नीचे की ओर मुड़ गये थे और बाहर की ओर निकले हुये थे। उसके बाल बिखरे हुये थे। उसका चेहरा बहुत ही भयानक था और दो दांत उसके होंठो के किनारों से बाहर झांक रहे थे। उसके बाएं गाल पर कनपटी से लेकर होंठो तक एक लंबा घाव का निशान था जो उसके चेहरे की वीभत्सता को और बढ़ा रहा था। उसने गले में गंडे-ताबीज़ पहन रखे थे और उसके हाथों के नाखून लम्बे और भयानक थे। उसने एक काले रंग की धोती पहन रखी थी और कमर में एक मोटे फल और कटे हुये सिरे वाली तलवार लटक रही थी।

उसने पानी में तुरंत एक और गोता खाया और फिर बाहर निकल कर व्यग्रता से यहाँ वहाँ कुछ ढूंढने लगा। वो निराशा से बार- बार पानी में अपने हाथ मार रहा था। नैमिष और इलाक्षी, जो कुछ ही दूरी पर खड़े सावधानी से यह सब देख रहे थे, किसी भी हमले के लिये तैयार थे। असुर की दृष्टि अभी तक उन दोनों पर नहीं पड़ी थी किन्तु थोड़ी देर बाद अचानक असुर ने उन दोनों को देख लिया।

“लगता है कि तुम कुछ ढूँढ रहे हो। क्या कुछ खो गया है?” नैमिष ने व्यंग्य करते हुये कहा। इलाक्षी ने भौंहे उठाकर गुस्से में उसकी ओर देखा।

“प्रतिहारी।” असुर ने दाँत पीसते हुये कहा। “तुम लोगों ने बहुत तंग कर के रखा है। वो बच्चा कहाँ है?” असुर ने गुस्से में चिल्लाकर पूछा।

“कौन हो तुम? और उस बच्चे से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?” इलाक्षी ने स्पष्ट स्वर में कहा।

“मैं जानता हूँ, बच्चा तुम्हारे पास है, परन्तु लगता है, तुम लोग इतनी सरलता से नहीं बताओगे। कोई बात नहीं दुराक्ष को पता लगाने के और भी तरीके आते हैं।” कहने के साथ ही असुर ने उन दोनों पर दोनों हाथों से तन्त्र वार करने आरम्भ कर दिये।

नैमिष और इलाक्षी ने, जो पहले से ही सावधान थे, उसके वार का प्रत्युत्तर दिया। परन्तु वो नहीं जानते थे कि वो असुर दुराक्ष है जिसे परास्त करने में विशल्या को भी अत्यंत कठिनाई हुई थी। घायल होने के पश्चात् भी दुराक्ष इतना शक्तिशाली था कि उन दोनों को परास्त कर सके। वह अकेले उन दोनों पर भारी पड़ रहा था।

“ये बहुत शक्तिशाली है। हम इससे ज्यादा देर तक नहीं लड़ पाएंगे। हमें सहायता की आवश्यकता है।” इलाक्षी ने कहा। किन्तु तभी नैमिष जो अपनी पूरी शक्ति लगा कर दुराक्ष का सामना कर रहा था, दुराक्ष के एक वार से चट्टानी दीवार से जा टकराया।

अब इलाक्षी के पास कोई रास्ता नही बचा था। नैमिष के संभलने तक उसे दुराक्ष को अकेले रोकना था और नैमिष की रक्षा भी करनी थी। वो दुराक्ष पर अपनी पूरी क्षमता से वार करने लगी, परन्तु उसका वार पर्याप्त नहीं था। दुराक्ष के शक्तिशाली तंत्र वारों के आगे इलाक्षी टिक न सकी और एक शक्तिशाली वार खाकर बेसुध होकर पीछे की ओर जा गिरी। उसका शरीर चट्टानों से टकराता और घिसटता हुआ किसी के पैरों के पास जा गिरा। दुराक्ष ने उस व्यक्ति को देखा जो कि प्रतिहारियों की वेशभूषा में था और इलाक्षी को अपने पैरों के पास एकटक स्तब्ध होकर देख रहा था।

अभिजीत तेजी से कन्दरा से बाहर निकला। वो बाहर से आती युद्ध की आवाजें सुन पा रहा था। वो तेजी से चट्टानों को पार करते हुये आगे बढ़ा और अचानक तभी एक बेसुध शरीर उसके पैरों के पास आ गिरा। अभिजीत के दिल ने धड़कना एक पल के लिये बंद कर दिया। उसके सामने इलाक्षी घायल होकर पड़ी हुई थी। वो इलाक्षी जिससे वो अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करने लगा था। अभिजीत एक पल के लिये शांत खड़ा होकर इलाक्षी को एकटक देखता रहा और फिर अचानक उसकी साँसे तीव्र हो गयी और क्रोध से उसकी भुजाएं फड़कने लगी।

अभिजीत एक तेज चीख के साथ दौड़कर आगे बढ़ा और दुराक्ष पर अपनी पूरी शक्ति के साथ वार करने प्रारम्भ कर दिये। तब तक खुद को संभाल चुका, नैमिष तेजी से इलाक्षी को देखने के लिये उसके पास दौड़कर गया। उसने उसका सिर अपनी गोद में रखा और उसकी चोट का निरीक्षण करने लगा।

दुराक्ष अब तक समझ नहीं पा रहा था कि ये प्रतिहारी लगातार एक- एक करके कहाँ से प्रकट होते जा रहे हैं? वो जानता था कि ये सब उसकी शक्तियों के आगे तुच्छ हैं, परन्तु वो उनसे उलझना नहीं चाहता था। उसे उस शिशु को ढूँढना था किन्तु अभिजीत के लगातार आते भीषण तन्त्र वारों ने उसे फिर से प्रत्युत्तर देने पर विवश कर दिया।

अभिजीत लगातार दुराक्ष पर वार करता जा रहा था, परन्तु उसने देखा कि उस पर कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है और वह आराम से उसके वारों को रोकता जा रहा है। अभिजीत का क्रोध इलाक्षी को घायल देखकर अपनी सीमा पार कर चुका था। उसने तुरंत त्रिकाट विद्या का प्रयोग करके दुराक्ष पर भीषण तंत्र वार प्रारम्भ कर दिये।

दुराक्ष वह भीषण प्रहार नहीं झेल पाया और पानी में दूर जा गिरा। वह पहले से ही घायल और थका हुआ था। इस वार के बाद वह जैसे- तैसे स्वयं को संभाल कर फिर से उठ खड़ा हुआ परन्तु अब तक वह समझ गया था कि यहाँ रुककर उस शिशु को ढूंढने का प्रयास करना व्यर्थ है, इसलिए उसने वहाँ से जाना ही उचित समझा। वह एक काली ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गया और अभिजीत का अगला वार बिना दुराक्ष को हानि पहुँचाये पीछे की चट्टान से जा टकराया। अभिजीत ने क्रोध और निराशा में अपने हाथ झटक दिये।

“अभिजीत! यहाँ आओ जल्दी।” नैमिष ने अभिजीत को बुलाया।

अभिजीत को यकायक इलाक्षी का ध्यान आया और वो तेजी से उसकी तरफ गया। इलाक्षी को काफी चोट आई थी और वो मूर्च्छित हो गयी थी। उसे चिकित्सा की तुरंत आवश्यकता थी। वो दोनों अभी इस बारे में सोच ही रहे थे कि अभिजीत को उस वृद्ध व्यक्ति की बातें याद आई।

“इलाक्षी को लेकर जल्दी मेरे साथ चलो।” अभिजीत ने व्यग्रता से कहा।

“परन्तु कहाँ? इसे चिकित्सा की आवश्यकता है और हमें यहाँ किसी से सहायता भी नहीं मिल सकती।” नैमिष ने चिंतित स्वर में कहा।

“अभी बातों का समय नहीं है। तुम्हें मुझ पर विश्वास करना होगा। अब चलो।” अभिजीत ने कहा और नैमिष इलाक्षी को लेकर उसके साथ चल पड़ा।

अभिजीत फिर से उसी कन्दरा में प्रवेश कर गया और उसके पीछे -पीछे नैमिष भी। कन्दरा के अंदर उन्हें वही वृद्ध व्यक्ति उसी स्थान पर प्रतीक्षा करता हुआ मिला। शिशु उसके एक हाथ में कंधे पर सिर रखे शांति से सो रहा था। नैमिष उस व्यक्ति को और उसके पास उस शिशु को देखकर स्तब्ध रह गया, परन्तु कुछ बोला नहीं क्योंकि इलाक्षी का उपचार अभी पहली प्राथमिकता थी। अभिजीत उस व्यक्ति से कुछ बोलने ही वाला था किन्तु उस वृद्ध ने उसे हाथ के इशारे से रोक दिया और पास आने के लिये कहा। उनके सभी के पास आते ही वो सभी एक ऊर्जा घेरे में सिमट कर अदृश्य हो गये।

दुराक्ष किसी अनजान स्थान पर एक बड़े से दरबारनुमा कक्ष में प्रकट हुआ और भूमि

पर निढाल होकर गिर पड़ा। एक सामान्य -सा दिखने वाला असुर दौड़कर उसकी ओर आया और उसको संभाला।

“असुरश्रेष्ठ! यह क्या हुआ? आप की यह दशा कैसे हुई?” उस असुर ने पूछा।

“मैं असफल रहा अशमक। वह औरत बहुत शक्तिशाली है। कुछ और प्रतिहारियों ने भी मुझे रोकने का प्रयास किया, परंतु मैंने उस शिशु को मार दिया है।” दुराक्ष ने कराहते हुये कहा।

“चलिये पहले अपना उपचार करवा लीजिये।” अशमक ने दुराक्ष को सहारा देकर उठाया और उपचार के लिये ले जाने लगा। अशमक दुराक्ष का मित्र और इस अभियान में उसका सहायक था। उसने भी काले रंग की एक धोती पहन रखी थी। उसका काला शरीर गठीला और शक्तिशाली था। उसके बाल पीछे की ओर अच्छी तरह कंघी किये हुये थे। सिर पर बाहर की ओर निकले हुये दो छोटे- छोटे सींग थे। उसके चेहरे पर बड़ी भौंह युक्त बड़ी आँखें थी। उसका चेहरा भयानक और क्रूर लग रहा था।

“क्या आपने स्वयं अपने हाथों से उस शिशु को मारा?” अशमक ने पूछा।

“नहीं! मैंने उस पर वार करने का प्रयास किया था, परन्तु वह उसके मानवपिता को जा लगा था और शिशु एक भयानक झरने में जा गिरा था। मैं उसे खोजने के लिये उसके पीछे झरने में गया, परन्तु उसे खोज नहीं सका। मुझे विश्वास है वो इतनी ऊंचाई से गिरकर मृत्यु से बच नहीं पाया होगा।” दुराक्ष ने उसे संक्षेप में बताया। उपचार के समय दुराक्ष ने अशमक को घटना का पूरा विवरण दिया।

अभिजीत, नैमिष और वह वृद्ध व्यक्ति कुटिया से बाहर निकले। वे सभी घने जंगल में बनी एक कुटिया में थे, जहाँ दूर-दूर तक कोई भी मानवबस्ती या गांव नहीं था। इलाक्षी का उपचार कर दिया गया था और वह कुटिया के अंदर मूर्च्छित अवस्था में थी। शिशु एक तंत्र कवच में सुरक्षित था और सो रहा था। अभिजीत और नैमिष ये जानने की लिये उत्सुक थे कि वह वृद्ध व्यक्ति कौन है।

“वह अब ठीक है, परन्तु उसकी चेतना लौटने में थोड़ा समय लगेगा। उस असुर का वार बहुत शक्तिशाली था।” वृद्ध ने कहा।

“आप कौन हैं? और आपने इस शिशु की रक्षा क्यों की? और ये शिशु है किसका?” अभिजीत ने लगातार प्रश्नों की झड़ी लगा दी। वृद्ध ने उसे हाथ के इशारे से रोका और मुस्कराया। नैमिष और अभिजीत दोनों उसे बड़े अचरज और उत्सुकता से देख रहे थे।

“मैं एकचक्र हूँ। तुम मुझे प्रतिहारियों का नियंत्रक कह सकते हो। सामान्य रूप से मेरा कार्य प्रतिहारियों की गतिविधियों पर नजर रखना और संकट की स्थिति में बिना उनके सम्मुख आये, परोक्ष रूप से उनको सहायता प्रदान करना है। परंतु मेरा मुख्य उद्देश्य इस शिशु की रक्षा करना था और समय आने पर इसे संसार के सामने लाना था। ये विशिष्ट कार्य मुझे शक्ति स्फ़टिकों द्वारा सम्मिलित रूप से सौंपा गया था। प्रतिहारियों को मेरे विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। “ वृद्ध ने अपना परिचय देकर स्पष्ट करते हुये कहा।

“परन्तु यदि ऐसा है, तो आपके सामने आकर हमने काल यात्रा के नियम का उल्लंघन कर दिया है। है न?” नैमिष ने पूछा।

“नहीं! तुमनें किसी नियम का उल्लंघन नहीं किया है। मैं इन नियमों से परे हूँ और तुम्हारा मुझसे मिलना नियति है। तुम्हारा यहाँ आना और इस घटना में हस्तक्षेप करना आवश्यक था। ये महत्वपूर्ण घटनाक्रम इसी प्रकार घटित होना था।” वृद्ध ने समझाया।

“परन्तु यह शिशु आखिर है कौन? और वो असुर इसे मारना क्यों चाहता था?” अभिजीत ने पूछा।

“क्योंकि इस शिशु के हाथों ही उस असुर की मृत्यु लिखी है। इसे ठीक से समझने के लिये मैं पहले तुम्हें उस असुर के विषय में संक्षेप में बताता हूँ।” एकचक्र ने कहा। अभिजीत और नैमिष ध्यान से सुनने के लिये थोडा आगे आ गये।

“जैसा कि तुम्हें ज्ञात है की असुर पाताल में रहते हैं और समय- समय पर पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने की इच्छा से यहाँ आते रहते हैं। परन्तु उनकी इस इच्छा पूर्ति में प्रतिहारी सबसे बड़ी बाधा हैं। इसलिए असुरों ने प्रतिहारियों के शक्ति -केंद्र को अपना लक्ष्य बनाने हेतु कुछ चुने हुये असुर अधिपतियों को भेजना आरम्भ कर दिया। ये असुर दुराक्ष उन्हीं असुरों में से एक है।” एकचक्र ने स्पष्ट किया।

“ये असुर दुराक्ष था?” अभिजीत ने चकित होकर पूछा।

“हाँ! तुम्हें ये घटनाएं ज्ञात होंगी।” एकचक्र ने कहा।

“हाँ! मुझे सरानी से इस विषय में ज्ञात हुआ था। अर्थात ये शिशु विशल्या का पुत्र है

और जीवित है। तो आप उन्हें ये शिशु पुनः क्यों नही सौंप देते? और इस शिशु से दुराक्ष की मृत्यु का क्या सम्बन्ध है?” अभिजीत ने पूछा।

“ये शिशु अभी सुरक्षित नहीं है। दुराक्ष को लगता है कि शिशु की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु अभी वो निश्चिन्त नहीं हुआ है। वो इसे पुनः खोजने का प्रयास करेगा। अतः इसका यहाँ रहना नितांत आवश्यक है। और रहा सम्बन्ध दुराक्ष की इस शिशु के हाथों मृत्यु का तो सुनो।” एकचक्र ने एक पल रुककर कहा। “दुराक्ष ने भगवान शिव से वरदान प्राप्त किया था कि उसकी मृत्यु प्रतिहारी और मानव के संयोग से उत्पन्न पुत्र के द्वारा ही होगी। और चूंकि सामान्य परिस्थिति में ऐसा संभव नहीं था। इसीलिये सारी परिस्थितियाँ इस प्रकार घटित हुई, जिससे कि ऐसा पुत्र जन्म ले और दुराक्ष का अंत हो। “ एकचक्र ने अपनी बात समाप्त की।

“परन्तु इस दिन के बाद तो दुराक्ष और शिशु दोनों लापता हो गये थे। शिशु के विषय में तो अब हमें ज्ञात है, परंतु दुराक्ष कहाँ गया?” अभिजीत ने जिज्ञासावश पूछा।

“दुराक्ष कुछ समय पश्चात अपने मिले हुये वरदान के अनुसार मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा।” एकचक्र ने मुस्कराते हुये कहा। नैमिष भी एकचक्र का आशय समझ गया और मुस्कराने लगा।

“पर कैसे? ये तो अभी शिशु है। चलो मान लिया, ये युवावस्था में दुराक्ष का अंत करेगा, परन्तु उसके बाद भी इसे विशल्या को क्यों नहीं सौंपा गया। क्या ये भी दुराक्ष के साथ ही मृत्यु को प्राप्त होगा?” अभिजीत अभी भी असमंजस में था।

“नहीं! दुराक्ष तुम्हार हाथों मृत्यु को प्राप्त होगा। कुछ समय पश्चात् इसी काल में।” एकचक्र ने कहा। अभिजीत भौचक्का रह गया।

“मेरे हाथों? अर्थात...” अभिजीत ने आगे कहना चाहा।

“हाँ अर्थात तुम ही वो शिशु हो। विशल्या और विरोचन के पुत्र। प्रतिहारी और मानव के संयोग से उत्पन्न शिशु।” नैमिष ने प्रसन्नता से मुस्कराते हुये कहा। अभिजीत ने नैमिष को हैरानी से देखा।

“तुम्हें ज्ञात था? तुमनें मुझे बताया क्यों नहीं?” अभिजीत ने हैरान होकर पूछा।

“मुझे ही नहीं अपितु विशल्या और सरानी को भी ज्ञात है। विशल्या ने ही हम सब से आग्रह किया था कि तुम्हें भूतकाल से लौटने के पश्चात् सत्य से अवगत कराया

जाये। अब मुझे समझ आ रहा है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया था। कदाचित वो जानती थीं कि क्या होने वाला है।" नैमिष ने स्पष्ट किया और शक्ति- केंद्र में उसके मूर्छित होने के पश्चात् का सारा घटनाक्रम बता दिया।

"अवश्य। विशल्या प्रतिहारियों में सर्वश्रेष्ठ है।" एकचक्र ने नैमिष का समर्थन किया।

अभिजीत को इन सब बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वो अभी तक स्वयं को इस स्थिति के लिये तैयार नहीं कर पाया था और अब उसके सामने नियति का एक नया खेल सामने था। उसने दुराक्ष का सामना किया था, इसलिए उसे पता था कि उसका अंत करना इतना सरल नहीं है। वो बहुत शक्तिशाली है। पिछली बार वह उसका सामना इसलिए कर पाया था क्योंकि वह इलाक्षी पर हमले के कारण क्रोध में था और दुराक्ष पहले से ही घायल और थका हुआ था।

"क्या हुआ अभिजीत? क्या सोच रहे हो? क्या तुम्हें ये सब जानकर प्रसन्नता नहीं हो रही है?" नैमिष ने अभिजीत को चिंतित मुद्रा में विचार करते हुये देखकर पूछा।

"नहीं तो! ऐसी बात नहीं है। मैं यह जानकर बहुत प्रसन्न हूँ कि मेरा भी परिवार है और मैं इतनी महत्वपूर्ण जाति का सदस्य हूँ। परन्तु मेरी समझ में ये नहीं आ रहा है कि यदि मेरा जन्म इस समयकाल में हुआ है तो मेरी आयु इतनी कम क्यों है? मैं इतने वर्षों तक कहाँ रहा? और यदि मेरे हाथों दुराक्ष का अंत होना निश्चित है, तो फिर उसके अंत के पश्चात आपने मुझे मेरी माता को क्यों नहीं सौंपा?" अभिजीत ने एकचक्र से पूछा। नैमिष ने भी उत्तर की प्रतीक्षा में एकचक्र की ओर देखा। यही प्रश्न उसके मन में भी था।

"तुम्हारी सुरक्षा की दृष्टि से मुझे ऐसे निर्देश प्राप्त हुये थे। उन्हीं का पालन करते हुये मैंने तुम्हें एक विशिष्ट तंत्र कवच में सुरक्षित कर दिया था। तुम्हारा शरीर उस कवच में मृतावस्था में था, ताकि दुराक्ष या कोई भी अन्य व्यक्ति किसी भी प्रकार से तुम्हारा संकेत प्राप्त न कर सके और एक निश्चित समय आने पर मैंने तुम्हें एक अनाथालय में सुषुप्तावस्था में छोड़ दिया।

तुम्हें मृतावस्था में रखने का एक अन्य कारण तुम्हारी माता विशल्या भी थीं। तुम्हारे मृत्यु के समाचार के पश्चात् विशल्या ने गहन साधना से जो शक्तियां प्राप्त की हैं, वो भी इसी घटनाक्रम का एक भाग था। यदि तुम्हें उन्हें सौंप दिया जाता, तो घटनाएं उस प्रकार

से घटित नहीं हो पातीं, जिस प्रकार से होनी थी। समय का चक्र इसी प्रकार घूमना था और तुम्हें यहाँ आकर दुराक्ष का अंत करना था और अपने समय में वापस लौटना था। यही कालचक्र का खेल है। " एकचक्र ने स्पष्ट करते हुये कहा।

"अर्थात आपको सब कुछ पहले से ही ज्ञात था कि क्या होने वाला है और आगे क्या होगा?" अभिजीत ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! तुम्हारे भूतकाल से लौटने के पश्चात् मैं वही करूँगा, जो मैं नें अभी तुम्हें बताया है। उचित समय आने पर शिशु को अनाथालय में पहुंचा दिया जायेगा और वह युवावस्था में फिर से भूतकाल में आयेगा। समय का चक्र उसी प्रकार घूमेगा, जैसा अभी घूम रहा है। यह इसी प्रकार कार्य करता है। समय कभी परिवर्तित नहीं होता।" एकचक्र ने स्पष्ट किया।

"सरानी ने सच ही कहा था कि हम भूतकाल को परिवर्तित नहीं कर सकते। नियति सच में विचित्र है। हम सभी उसके हाथों की कठपुतलियां मात्र है। " अभिजीत ने हँसते हुये कहा। एकचक्र ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

"अर्थात आप अब भी हमारे समय में विद्यमान हैं?" नैमिष ने पूछा।

"हाँ! परन्तु तुम मुझे खोज नहीं सकते। मेरी जब भी आवश्यकता होगी मैं सहायता हेतु उपस्थित हो जाऊँगा और ये रहस्य केवल तुम तीनों को ज्ञात रहेगा।" एकचक्र ने कहा। अचानक अभिजीत के मन में एक और प्रश्न गूंज उठा।

"वो सब तो ठीक है, परन्तु अभी मैं दुराक्ष का अंत कैसे करूँगा? वो बहुत शक्तिशाली है। घायल अवस्था में भी वह हम सभी पर भारी पड़ रहा था।" अभिजीत ने चिंतित होकर पूछा।

"ह्म्म्म...। वो शक्तिशाली तो अवश्य है परन्तु उसका अंत तो तुम्हारे ही हाथों होगा और इसके लिये तुम्हें भी और अधिक शक्तिशाली बनना होगा।" एकचक्र ने कुछ सोचते हुये कहा।

"और अधिक शक्तिशाली? परन्तु कैसे?" अभिजीत ने पूछा।

"इसका उपाय मैं तुम्हें कुछ समय पश्चात् बताऊँगा क्योंकि अभी कुछ और घटनाओं का घटना शेष है।" एकचक्र ने अजीब ढंग से मुस्कुराते हुये कहा।

अभिजीत और नैमिष ने पहले एकचक्र की ओर और फिर एक- दूसरे की ओर

देखा। अभिजीत आगे कुछ पूछने ही वाला था कि कराहने के एक स्वर ने उन सभी का ध्यान खींच लिया।

सम्बन्ध

अभिजीत ने कराहने का स्वर शीघ्र पहचान लिया। वो स्वर इलाक्षी का था। अभिजीत शीघ्रता से कुटिया की ओर भागा। नैमिष भी उसके पीछे जाने लगा, परन्तु एकचक्र ने उसे रोक दिया। नैमिष ने पलट कर एकचक्र की ओर देखा।

"उन्हें अकेला छोड़ दो। उन्हें वार्तालाप करने की आवश्यकता है। तब तक मेरे साथ आओ। हमें एक कार्य करना है।" एकचक्र ने मुस्कराते हुये कहा। नैमिष अब एकचक्र के अजीब ढंग से मुस्कराने का तात्पर्य समझ गया और ये भी कि वो किस घटनाक्रम के घटने की बात कर रहा था। वो एकचक्र के साथ एक दिशा में चल पड़ा।

चेतना लौटते ही इलाक्षी ने स्वयं को एक कुटिया में जमीन पर एक चटाई पर लेटे हुये पाया। उसने अपने आस- पास देखा, वहां कोई नहीं था। एक कोने में कुछ वस्त्र एक रस्सी पर टंगे हुये थे। एक कोने में एक तंत्र कवच में वही शिशु आराम से सो रहा था। इलाक्षी उसे देखकर थोड़ी चकित हुई। उससे कुछ दूरी पर एक फलों की टोकरी और एक घड़ा रखा हुआ था।

प्यास से इलाक्षी का गला सूख रहा था। उसने पानी पीने के लिये उठने का प्रयास किया और दर्द की एक तेज़ लहर उसके सारे शरीर में दौड़ गयी। उसके गले से एक तेज कराह फूट पड़ी। दुराक्ष के वार का उस पर इतना प्रभाव नहीं हुआ था, जितना पत्थरों पर घिसटने से हुआ था। वह अभी भी स्वयं उठने में असमर्थ थी। उसके सारे शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई थी। उसने देखा कि अभिजीत तेजी से अंदर आया और उसकी ओर बढ़ा। इलाक्षी को थोड़ा अजीब लगा, क्योंकि वह नैमिष के आने की आशा कर रही थी।

"कैसी हो अब? क्या तुम्हें कुछ चाहिए?" अभिजीत ने इलाक्षी के पास आकर पूछा।

"मुझे प्यास लग रही है।" इलाक्षी ने थोड़ा हिचकिचाकर कहा।

अभिजीत तुरन्त घड़े के पास गया और एक पात्र में पानी भर कर ले आया। उसने

इलाक्षी को हिचकते हुये सहारा देकर उठाया और कुटिया की दीवार से टिका दिया। फिर उसने अपने हाथ से पात्र लेकर इलाक्षी के मुँह से लगा दिया। इलाक्षी ने एक क्षण के लिये अभिजीत की आँखों में देखा। अभिजीत, जो इलाक्षी को ही देख रहा था, अपनी नजरें झुका ली और पात्र पर अपनी आँखें स्थिर कर दीं। यह एक अनोखा क्षण था। इलाक्षी को पानी पिलाकर अभिजीत ने पात्र एक ओर रख दिया और इलाक्षी की ओर पलटा।

"क्या आपको किसी और वस्तु की आवश्यकता है?" अभिजीत ने फलों की टोकरी इलाक्षी के पास रखते हुये पूछा।

"नैमिष कहाँ है? हम कहाँ हैं और यहाँ कैसे आ गये?" इलाक्षी ने टोकरी में से एक फल उठाकर खाते हुये पूछा।

"नैमिष अभी मेरे साथ बाहर ही था। पता नहीं कहाँ चला गया?" अभिजीत ने बाहर झाँक कर देखा, जहाँ कोई उपस्थित नहीं था। फिर अभिजीत ने उसके भूतकाल में आने से लेकर अब तक घटित हुआ, सारा वृतांत इलाक्षी को सुना दिया। इलाक्षी ने ध्यान से सब कुछ सुना और उसकी आँखें फैलती चली गयी।

"तो तुम विशल्या के पुत्र हो? तभी मैं कहूँ कि तुम प्रतिहारी कैसे बन गये। नैमिष और मेरे प्राण बचाने के लिये तुम्हारा धन्यवाद।" इलाक्षी ने हाथ जोड़ते हुये कहा।

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।" अभिजीत ने उसे हाथ जोड़ने से रोकने के लिये उसकी दोनों हथेलियाँ पकड़ लीं। दोनों ने एक दूसरे को एक क्षण के लिये अप्रत्याशित रूप से देखा और वह क्षण ब्रह्माण्ड की समयधारा में प्रेम के एक अपूर्ण क्षण के रूप में सदैव के लिये कैद हो गया। और फिर अचानक अभिजीत ने हिचकिचाकर अपने हाथ वापस खींच लिये।

"अब आप विश्राम कीजिये। मैं नैमिष को ढूंढकर लाता हूँ।" अभिजीत ने कहा और उठकर कुटिया से बाहर की ओर जाने लगा। कुटिया के दरवाजे पर जाकर अभिजीत एक क्षण के लिये रुका और इलाक्षी की ओर मुड़कर देखा।

क्या ये उचित समय है? नहीं! मुझे शायद कुछ समय और इंतज़ार करना चाहिए।"

अभिजीत ने कुछ कहने के बारे में सोचा। उसने देखा इलाक्षी सीधे उसकी आँखों में देख रही है। फिर उसने कुछ सोच कर सिर झटक दिया और बाहर निकल गया।

इलाक्षी ध्यान से अभिजीत को जाते हुये देख रही थी और शायद अभिजीत की भावनाओं को थोड़ा बहुत समझ भी रही थी। अभिजीत के प्रतिहारी बनने के पश्चात् से इलाक्षी का दृष्टिकोण उसके प्रति थोड़ा बदल गया था। उसने देखा कि अभिजीत दरवाजे पर रुक कर उसे देखते हुये फिर से कुछ सोच रहा है।

"क्या ये मुझे पसंद करने लगा है?"

उसने सीधे अभिजीत की आँखों में देखा और सोचा। लेकिन अभिजीत मुड़कर चला गया और इलाक्षी ने एक गहरी साँस ली और फिर से आँखें बंद करके लेट गयी।

अभिजीत ने कुटिया से बाहर निकलते ही यहाँ- वहाँ देखा। थोड़ी ही दूर से नैमिष और एकचक्र टोकरी में कुछ फल लेकर चले आ रहे थे।

“आप लोग कहाँ चले गये थे?” अभिजीत ने उनके पास आते ही पूछा। इससे पहले की वो कुछ उत्तर दे पाते अभिजीत ने नैमिष से कहा ,” नैमिष इलाक्षी तुम्हें बुला रही थी। जाओ पहले जाकर उससे मिल लो। ” नैमिष ने ’हाँ’ में सिर हिलाया और अंदर चला गया।

“हम लोग भोजन के लिये कुछ फल इकठ्ठा करने गये थे और साथ ही हमनें कुटिया के बाहर के सुरक्षा घेरे की भी जाँच की। ” एकचक्र ने कहा।

“तो क्या आपनें यहाँ सुरक्षा की व्यवस्था भी कर रखी है? मुझे लगा था, हम यहाँ सुरक्षित हैं। ” अभिजीत ने पूछा।

“इस समय हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। यह सुरक्षा घेरा इसी कारणवश है। इस तंत्र कवच के घेरे के अंदर पशुओं के अतिरिक्त और कोई नहीं आ सकता और न ही इस कवच के रहते कोई हमें देख सकता है। ” एकचक्र ने समझाया। अभिजीत ने सहमति में सिर हिलाया। और कुटिया के अंदर प्रवेश कर गये।

नैमिष ने कुटिया में प्रवेश करते ही देखा कि इलाक्षी आँखें बंद करके विश्राम कर रही है। किसी के आने की आहट पाकर इलाक्षी ने अपनी आँखें खोल दी।

“कैसी हो?” नैमिष ने इलाक्षी के माथे पर हाथ रखकर पूछा।

“कहाँ चले गये थे तुम? तुम जानते हो न कि मुझे अभिजीत से नफरत है, फिर तुमनें उसे मेरे पास क्यों भेजा?” इलाक्षी ने भौहें टेड़ी करके थोड़े गुस्से में पूछा।

“मैं कुटिया के आसपास की सुरक्षा व्यवस्था देखने और भोजन इकठ्ठा करने गया था। और वैसे भी क्या अभिजीत सच में इतना बुरा है? उसे मित्रता का अवसर दो। तुम समझ जाओगी कि वो इतना भी बुरा नहीं है। ” नैमिष ने मुस्कराकर कहा। इलाक्षी ने नैमिष को घूरा और कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि अभिजीत और एकचक्र ने अंदर प्रवेश किया। दोनों चुप हो गये और उनकी तरफ मुड़ गये।

“प्रणाम महात्मन्!” इलाक्षी ने हाथ जोड़कर कहा।

“आयुष्मति भव! तुम्हारी चोटें ज्यादा गहरी नहीं थीं। जल्दी ही तुम स्वस्थ हो जाओगी।” एकचक्र ने इलाक्षी के पास बैठते हुये कहा और इलाक्षी का परीक्षण करने लगा।

“धन्यवाद एकचक्र जी।” इलाक्षी ने विनम्रता से कहा। सभी लोग एक घेरा बनाकर बैठ गये।

“एकचक्र जी आप मुझे कुछ बता रहे थे।” अभिजीत ने अपनी पिछली बात को आगे बढ़ाते हुये कहा।

“हाँ! मैं तुम्हें और अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिये कह रहा था, ताकि तुम दुराक्ष का अंत कर सको।” एकचक्र ने कहा।

“परन्तु इसके लिये मुझे करना क्या होगा?” अभिजीत ने आगे पूछा।

“तुम्हें एक शस्त्र प्राप्त करना होगा। परन्तु उसके विषय में मैं तुम्हें कुछ समय पश्चात् बताऊँगा, क्योंकि मुझे उसकी वास्तविक स्थिति के बारे में ज्ञात नहीं है। उसकी वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए मुझे नैमिष की आवश्यकता है। सामान्य परिस्थिति में मैं इलाक्षी को साथ ले जाना पसन्द करता, किन्तु इस समय वो इस योग्य नही है।” एकचक्र ने स्पष्ट किया।

“परन्तु वो शस्त्र है क्या? और मैं आपके साथ क्यों नहीं चल सकता?” अभिजीत ने पूछा।

“व्यग्र मत हो अभिजीत, हर घटना अपने उचित समय पर घटित होती है। समय आने पर मैं तुम्हें सब कुछ समझाऊंगा।” एकचक्र ने मुस्कराते हुये समझाया। अभिजीत ने सहमति में सिर हिलाया। नैमिष ने उसके कंधे पर थपकी दी।

नैमिष और एकचक्र अगले दिन प्रातःकाल अपने लिये नियत कार्य के लिये निकल गये। वे प्रतिदिन सुबह निकल जाते थे और शाम को लौट आते थे। अगले कुछ दिनों तक अभिजीत इलाक्षी की भरपूर देखभाल करता रहा। वे आपस में बात तो कर रहे थे, परन्तु दोनों के बीच एक अनकही ख़ामोशी थी। अभिजीत जानता था कि इलाक्षी एक स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर लड़की है। उसे प्रभावित करना सरल नहीं है। उसकी सहायता

करके या उसकी देखभाल करके उसे प्रभावित नहीं किया जा सकता। इसके लिये उसे अपने कार्यों और उपलब्धियों द्वारा स्वयं को सिद्ध करना होगा।

इलाक्षी की दशा में पर्याप्त सुधार हो चुका था। एक दिन शाम को वह अभिजीत के साथ कुटिया के पास टहल रही थी। अभिजीत उससे प्रतिहारियों की कार्यप्रणाली के विषय में बातचीत कर रहा था।

“पुराने समय में तो लोग हमें जानते थे, तब उनके सामने असुरों का सामना करना और अभियान पर जाना सरल होता था। परन्तु आज के समय में जब हम छुपकर कार्य करते हैं, तब हम ऐसे अभियानों में अपनी पहचान कैसे गुप्त रखते हैं?” अभिजीत ने पूछा।

“हाँ, तुम सही हो। ऐसा करना कठिन कार्य है, परन्तु हमारी तंत्र शक्तियाँ हमें यह कार्य करना सरल बनाती हैं। पुराने समय की तरह ही असुर आज भी दस्युओं अथवा उग्रवादियों या आतंकवादियों की सहायता से मानवजाति को हानि पहुंचाते हैं। जहाँ पर आक्रमण होता है, हम उस स्थान विशेष का समय थोड़े समय के लिये रोक देते हैं और मुख्य आक्रमणकारी असुरों का अंत कर देते हैं, जो पीछे रहकर आक्रमण का संचालन कर रहे होते हैं। फिर हम समय को यथावत कर देते हैं। बाकी आतंकियों को हमारे देश की सेना संभाल लेती है। कभी-कभार हम बिना किसी की नजर में आये, सीधे आक्रमण में भी उन सभी का अंत कर देते हैं। तुम धीरे -धीरे सारी कार्यप्रणाली समझ जाओगे।” इलाक्षी ने समझाया।

“क्या इन अभियानों में हमें कभी कोई हानि भी पहुँचती है?” अभिजीत ने पूछा।

“हाँ! अपनी समस्त शक्तियों के बावजूद अंततः हम हैं तो मनुष्य ही। हमनें अपने कई महत्वपूर्ण अभियानों में अनेक साथियों को खोया है।” इलाक्षी ने थोड़े दुःखी स्वर में कहा। उन घटनाओं को याद करते हुए, वह कुछ क्षणों के लिए रुकी।

“इलाक्षी क्या हम दोनों मित्र नहीं बन सकते?” अभिजीत ने इलाक्षी की सोच में व्यवधान डालकर हिम्मत करके पूछा। इलाक्षी उसकी ओर मुड़ी और सीधे अभिजीत की आंखों में देखा। अभिजीत भी पीछे हटने वालों में से नहीं था।

“मैं जानता हूँ, तुम मुझे पसंद नहीं करती, परन्तु मैंने अभी तक ऐसा कोई कार्य नहीं किया है, जो तुम मुझसे नफरत करो। हम उसी व्यक्ति से मित्रता करना चाहते हैं, जिससे या तो हमारी सोच, व्यवहार और आदतें मिलती हों या जो हमसे किसी क्षेत्र में श्रेष्ठ हो। यदि तुम्हें मेरी मित्रता स्वीकार नहीं है, तो मुझे उसका कारण बता दो।” अभिजीत ने कहा।

"मैं तुमसे घृणा नहीं करती अभिजीत और न ही मेरे पास इसका कोई कारण है। मैं सामान्यत: किसी से मित्रता नहीं करती। तुम्हारा यहाँ आना सचमुच विचित्र था। तुम्हारे मित्रता के प्रस्ताव में मित्रता से भी ज्यादा कुछ और है, वह और जो भी है, मुझे स्वीकार्य नहीं है। हम एक दूसरे को जितना जानते हैं, उतना ही पर्याप्त है। हम आपस में सिर्फ़ कार्य के सम्बन्ध में ही व्यवहार रखें, उतना ही उचित है।" इलाक्षी ने स्पष्ट स्वर में कहा।

"ठीक है। मुझे मेरा उत्तर मिल गया है। आप जैसा चाहती हैं, वैसा ही होगा। आपको अब मुझसे कोई परेशानी/शिकायत नहीं होगी।" अभिजीत ने एक गहरी साँस भरकर कहा। उसके सीने में दर्द की एक तेज लहर दौड़ गयी और चेहरे पर एक अजीब सी ख़ामोशी छा गयी। उसकी आँखों से पानी की बूँदे छलक ही जाती, यदि उस आवाज ने उसका ध्यान न खींचा होता।

"इलाक्षी! लगता है तुम अब पूर्णतयः स्वस्थ हो।" पीछे से नैमिष का स्वर गूँजा। दोनों ने पीछे मुड़कर देखा। थोड़ी ही दूर से नैमिष और एकचक्र आ रहे थे। अभिजीत ने स्वयं को बड़ी कठिनाई से संयमित करने का प्रयास किया, परन्तु एकचक्र की तीक्ष्ण दृष्टि से अभिजीत बच नहीं पाया।

"हाँ, मैं ठीक हूँ। इतने दिनों से लेटे- लेटे शरीर अकड़ रहा था, तो सोचा थोडा टहल लूँ।" इलाक्षी ने नैमिष को उत्तर दिया। अभिजीत उनके इस मित्रवत व्यवहार को सूक्ष्मता से देख रहा था।

"क्या आप लोग आज भोजन के लिये फल लेकर नहीं आये?" अभिजीत ने एकचक्र से पूछा।

"ओह! ये तो हम भूल ही गये। मैं अभी लेकर आता हूँ।" नैमिष ने भूल स्वीकारते हुये कहा।

"रुको! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" अभिजीत ने कहा और एकचक्र की ओर एक दृष्टि डाली। एकचक्र ने सिर हिलाकर जाने की सहमति दी।

"पूछने के लिये क्षमा करें एकचक्र जी, परन्तु मुझे क्यों ऐसा लगता है कि आप हमसे कुछ छिपा रहे हैं? यदि आपको सब कुछ ज्ञात है, तो फिर शस्त्र की स्थिति कैसे नहीं पता? या फिर आप किसी चीज की प्रतीक्षा कर रहे हैं।" उन दोनों के जाने के पश्चात् इलाक्षी ने पूछा। एकचक्र इलाक्षी के प्रश्न पर मुसकरा दिए।

"तुम सत्य कह रही हो। मैं उचित समय की प्रतीक्षा कर रहा था और उचित समय आ चुका है। मैंने अभिजीत को तुम्हारे पास जानबूझकर छोड़ा था क्योंकि मैं जानता था कि वह तुमसे अत्यंत प्रेम करता है। मैं उसे तुमसे वार्तालाप करने का अवसर दे रहा था..." एकचक्र ने उत्तर दिया।

"परन्तु मैं उससे प्रेम नहीं करती और ..." इलाक्षी ने बीच में ही बात काटकर कहा।

एकचक्र ने उसे हाथ के इशारे से रोका।

“मैं जानता हूँ, तुम उससे प्रेम नहीं करती और इसलिए मैं चाहता था कि वह तुमसे वार्तालाप करे। मैं जानता था कि तुम उसकी मित्रता भी अस्वीकार कर दोगी और उसके उस शस्त्र को प्राप्त करने और दुराक्ष का अंत करने के लिये ये अत्यंत आवश्यक था। अब वह मानसिक रुप से क्षुब्ध और क्रोधित है और यही स्थिति उसे वो अतिरिक्त बल प्रदान करेगी जो इस कार्य के लिये आवश्यक है। “ एकचक्र ने समझाया।

“अर्थात यह भी पहले से ही नियोजित था?” इलाक्षी ने चकित होकर पूछा।

“हाँ! इसीलिये मैं नैमिष को अपने साथ ले जाता था, ताकि उसे तुम्हारे साथ एकांत में समय व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हो सके। अपितु अभी भी मैंने अभिजीत को नैमिष के साथ जाने से इसीलिय नहीं रोका। नैमिष अभिजीत के मन की बात जानता है और वो दोनों अच्छे मित्र भी हैं। अभिजीत को इस मानसिक स्थिति से बाहर निकालकर, उसे केंद्रित करने का कार्य नैमिष अच्छी तरह जानता है।” एकचक्र ने आगे कहा। इलाक्षी ने धीरे -धीरे सब कुछ समझते हुये सहमति प्रदान की।

“नैमिष! क्या तुम और इलाक्षी एक दूसरे से प्रेम करते हो?” अभिजीत ने नैमिष से पूछा, हालाँकि अभिजीत उसके सम्भावित उत्तर से डरा हुआ था। वे दोनों वन में एक फलदार वृक्ष के पास थे। नैमिष ने उसकी आँखों में देखा और मुस्करा दिया। उसकी आँखों में आज एक अजीब सी उदासी थी, जिसे नैमिष समझ गया था।

“तुम इलाक्षी के विषय में क्या जानते हो अभिजीत?” नैमिष ने पूछा।

“बस यही कि तुम और वह सरानी के मुख्य अंगरक्षक और सहायक हो। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ भी नहीं पता।” अभिजीत ने उत्तर दिया।

“ठीक है! मैं बताता हूँ।” नैमिष ने अपने हाथों से वृक्ष की एक लता पर एक निम्न स्तर का तन्त्र वार किया और कुछ फल उनके सामने आ गिरे।

“इलाक्षी के पिता विशल्या के मुख्य सहायक दल के प्रधान थे। वे नियमों के प्रति अत्यंत कठोर थे और नियमों के पालन पर विशेष महत्व देते थे। विशल्या के विरोचन से विवाह पर उन्हें काफी दुःख पहुँचा था, क्योंकि वो विशल्या का बहुत सम्मान करते थे और उन्हें आशा नहीं थी कि विशल्या कभी नियमों को तोड़ेंगी। विशल्या के जाने बाद वो सरानी के मुख्य अंगरक्षक नियुक्त किये गये, क्योंकि सरानी की उम्र उस समय अधिक

नहीं थी।

अपने पिता की तरह ही इलाक्षी भी नियमों को लेकर अत्यंत गंभीर है। वो मुझसे आयु में बड़ी है। मेरे माता -पिता के देहांत के पश्चात् इलाक्षी के पिता ने भी मेरा बहुत ध्यान रखा। जब मैं उनसे प्रशिक्षण प्राप्त करता था, तब इलाक्षी मेरी उसी प्रकार सहायता करती थी, जैसी मैं तुम्हारी किया करता था। हमारे योग्य होने पर इलाक्षी के पिता के आग्रह पर हमें सरानी का मुख्य अंगरक्षक और सहायक नियुक्त किया गया।" नैमिष ने कुछ फल झोले में रखते हुये कहा। अभिजीत ने भी कुछ फल अपने झोले में डाल लिये और फिर वो पास ही उगे केले के एक वृक्ष की ओर मुड़ गये।

"और अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर।" नैमिष ने कहा और अभिजीत एक पल के लिये अधीर हो गया।

"हाँ! मैं और इलाक्षी एक दूसरे से प्रेम करते है, परन्तु भाई-बहन की तरह। उसने हमेशा बड़ी बहन की तरह मेरा ख्याल रखा है।" नैमिष ने मुस्कराते हुये कहा और अभिजीत की रुकी हुई साँस फिर से चल पड़ी।

"अभिजीत मैं जानता हूँ कि तुम उससे अत्यंत प्रेम करते हो, परन्तु उसे समझना कठिन है। वो धीरे -धीरे तुम्हें भी अपना मित्र बना लेगी।" नैमिष ने समझाया।

"उसने तो मेरा मित्रता का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया है। वो मुझसे प्रेम नहीं करती और मित्रता भी नहीं करना चाहती। वो चाहती है कि मेरे और उसके मध्य केवल कार्य से सम्बंधित व्यवहार रहे।" अभिजीत ने बड़ी मुश्किल से स्वयं को संयमित करते हुये कहा।

"कोई बात नहीं अभिजीत! उसे समय दो। मैं जानता हूँ, तुम्हें दुःख पहुँचा है, परन्तु दुःखी होने से कुछ नहीं होगा। स्वयं को सिद्ध करो और अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से करो। वो एक न एक दिन तुम्हें अवश्य स्वीकार करेगी।" नैमिष ने समझाकर कहा।

"मैं समझता हूँ नैमिष! मैं उस दिन की प्रतीक्षा करूँगा। अभी मुझे अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना है और अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेना है। मैं इस समय कमजोर नहीं पड़ सकता।" अभिजीत ने दृढ़ निश्चय से कहा।

अभिजीत की आँखों में आँसू उमड़ आये, परन्तु उसनें उन्हें आँखों से गिरने नहीं दिया। नैमिष उसकी तरफ बढ़ा और उसे गले लगा लिया। फिर वो अलग हुआ और उसकी तरफ देखकर मुस्कराया। प्रत्युत्तर में अभिजीत ने भी मुस्कराकर सिर हिलाया। उन्होंने पर्याप्त मात्रा में फल इकट्ठे किये और वापस कुटिया की ओर लौट गये।

शस्त्र

अभिजीत और नैमिष आपस में बातें करते हुये लौट रहे थे। कुटिया सामने दिखाई दे रही थी और एकचक्र कुटिया के द्वार पर खड़े उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके पास आते ही एकचक्र आगे बढ़े, इससे पूर्व कि वो कुछ कहते अभिजीत आगे बढ़ा और अपने हाथ जोड़ दिये।

"महात्मन्! मैं अब और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मुझे उस शस्त्र को प्राप्त करने का मार्ग दिखाइए। मैं अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये व्याकुल हूँ।" अभिजीत ने अधीर होकर कहा। एकचक्र मुस्करा दिये।

"अभिजीत! मैंने कहा था कि प्रत्येक घटना अपने नियत समय पर ही घटित होती है। समय से पूर्व कुछ नहीं होता। समय आने पर तुम वह सब कुछ प्राप्त करोगे, जिसकी तुम्हें प्रतीक्षा है। परन्तु अभी तुम्हें जिसकी सबसे अधिक प्रतीक्षा है, वह समय आ चुका है। हमनें उस शस्त्र का पता लगा लिया है। कल प्रातःकाल मैं तुम्हें उसके विषय में बताऊंगा और उसे प्राप्त करने का मार्गदर्शन भी दूँगा। नैमिष तुम्हारे पथप्रदर्शक के रुप में तुम्हारे साथ जायेगा।" एकचक्र ने समझाकर कहा।

अभिजीत की अधीरता सीमा पार कर रही थी, परन्तु उसने आगे कुछ नहीं कहा और सहमति प्रदान करके चुपचाप अंदर चला गया।

उसके जाने के पश्चात एकचक्र ने नैमिष की ओर देखा।

"क्या वो समझ गया?" एकचक्र ने पूछा।

"हाँ! वो पहले से निश्चय कर चुका था कि उसे क्या करना है। मुझे उसे अधिक नहीं कहना पड़ा।" नैमिष ने उत्तर दिया।

"महात्मन्! क्या सच में अभिजीत का प्रेम अधूरा रह जायेगा।" नैमिष ने चिंतित स्वर में पूछा।

“समय की प्रतीक्षा करो नैमिष। अभिजीत के भाग्य में जो कुछ है, उसे वह सब कुछ प्राप्त होगा, किन्तु उचित समय आने पर।” एकचक्र ने स्पष्ट किया। नैमिष ने मुस्कराकर सिर हिलाया। एकचक्र भी प्रत्युत्तर में मुस्कराए। उनका प्रयोजन पूर्ण हो चुका था।

अगले दिन प्रातःकाल में एकचक्र ने सभी को कुटिया में उपस्थित होने के लिये कहा। सभी लोग पुनः एक घेरा बनाकर बैठ गये। एकचक्र ने सभी को बारी -बारी से देखा और फिर अभिजीत पर उनकी दृष्टि आकर रुक गयी।

“अभिजीत! मैं जानता हूँ कि उस शस्त्र के बारे में जानने को उत्सुक हो, परन्तु उससे पूर्व मैं तुम्हें उस शस्त्र की उत्पत्ति का इतिहास बताना चाहूँगा। क्या तुम सुनने के इक्छुक हो?” एकचक्र ने पूछा। उसके साथ- साथ सभी ने सहमति में हामी भरी। वे सभी एकचक्र की बात ध्यान से सुनने के लिये आगे आ गये।

“उचित है। सुनो! ये घटना प्राचीन समय की है। क्या तुमने महर्षि दधीचि के बारे में सुना है?” एकचक्र ने पूछा।

“हाँ!” तीनों ने एक साथ कहा।

“महर्षि दधीचि प्राचीन समय के एक महा दानी ऋषि थे। एक बार जब वृत्रासुर नामक असुर ने देवलोक पर अधिकार कर देवताओं को बाहर निकाल दिया, तब देवतागण ब्रह्मा जी के पास गये और सहायता मांगी। तब ब्रह्मा जी ने उन्हें महर्षि दधीचि के विषय में बताया और कहा कि केवल उनकी अस्थियों में ही वह ब्रह्मशक् है जो वृत्रासुर का अंत कर सके। तब देवतागण सहायता के लिये महर्षि दधीचि के पास गये। देवताओं के मुख से यह जानकर की मात्र दधीचि की अस्थियों से निर्मित वज्र द्वारा ही असुरों का संहार किया जा सकता है, महर्षि दधीचि ने अपना शरीर त्याग कर अस्थियों का दान कर दिया और उनकी अस्थियों से बने वज्र से वृत्रासुर का वध करके देवराज इंद्र ने असुरों का आतंक समाप्त किया। परन्तु इस कथा का उस शस्त्र से क्या सम्बन्ध है?” अभिजीत ने सारी कथा सुनने के पश्चात् पूछा।

“अति उत्तम! तुमने सही प्रश्न किया। परन्तु क्या तुम्हें पता है कि महर्षि की शेष अस्थियों का क्या हुआ?” एकचक्र ने उत्तर देने के स्थान पर दोबारा प्रश्न किया।

“तो क्या आप जिस शस्त्र की बात कर रहे हैं, वो महर्षि दधीचि की शेष बची अस्थियों से निर्मित है?” इलाक्षी ने अनुमान लगते हुये प्रश्न किया।

"आधा सही आधा गलत।" एकचक्र ने मुस्कराते हुये कहा। सभी ने एक दूसरे को आश्चर्यचकित होकर देखा और एकचक्र की बात सुनने के लिये फिर से उनकी ओर देखा।

"उनकी शेष बची अस्थियों को सप्तऋषियों ने ले लिया और उन्हें सुरक्षित रखने के उद्देश्य से छुपा दिया, ताकि कोई उनका दुरूपयोग न कर सके। उन्होंने उसे अपने आश्रम में बने बरगद के एक नवीन वृक्ष के तने के खोखल में छिपा दिया। बरगद का वृक्ष इसलिए चुना गया, क्योंकि यह वृक्ष 'त्रिमूर्ति' का प्रतीक है। इसकी छाल में विष्णु, जड़ों में ब्रह्मा और शाखाओं में शिव विराजते हैं। धीरे -धीरे वृक्ष बड़ा होता चला गया और विशाल होकर सारे आश्रम में फैल गया। वो खोखल जहाँ पर अवशेष अस्थियाँ थीं, वहाँ से एक लता उन अस्थि अवशेषों को अपने अंदर समाहित करके वृक्ष के अंदर ही अंदर बढ़ती चली गयी और चूँकि अस्थियाँ ब्रह्म शक्ति से युक्त थी, उस लता ने अंदर ही अंदर एक शक्तिशाली दैवीय शस्त्र के रूप में आकार ले लिया।

वर्षों बाद, एक दिन एक भयंकर तूफान आया और एक तीव्र वज्रपात ने उस वृक्ष को दो हिस्सों में बाँट दिया। जिसके कारण वह शस्त्र विचित्र आकृति वाली लता के रूप में दृष्टिगोचर हो गया। एक ऐसा शस्त्र जिसमें महर्षि दधीचि के ब्रह्म शक्ति युक्त अस्थि अवशेष समाहित थे। सप्तऋषि अभी उस विचित्र आकृति वाली लता विषय के बारे में वार्तालाप ही कर रहे थे कि उनके इष्ट देव भगवान शिव वहां प्रकट हुये और उन्होंने सप्तऋषियों को बताया कि इस शस्त्र की उत्पत्ति एक महत्वपूर्ण प्रयोजन के लिये हुई है। उन्होंने सप्तऋषियों को उस शस्त्र के योग्य धारक के आने तक एक विशेष सुरक्षा में रखने का आदेश दिया। सप्तऋषियों ने उनकी आज्ञा का पालन किया और उसे तन्त्र-मन्त्र से सुरक्षित एक स्थान पर छुपा दिया, जिसके बारे में केवल सप्तऋषियों को ही ज्ञात था।" एकचक्र ने विस्तार से वर्णन करते हुये कहा।

"परन्तु आपको कैसे पता कि उस शस्त्र का योग्य धारक मैं ही हूँ?" अभिजीत ने भौंहें सिकोड़कर संदेह व्यक्त करते हुये कहा।

"क्योंकि भगवान शिव ने सप्तऋषियों को दुराक्ष को मिले वरदान के विषय में बता दिया था और संकेत दे दिया था कि ऐसा पुत्र जन्म लेगा और एक दिन इसी शस्त्र की सहायता से दुराक्ष का वध करेगा। रही तुम्हारी योग्यता की बात तो एक प्रतिहारी और मानव की संयुक्त सन्तान होने के कारण तुममें सामान्य प्रतिहारियों से कुछ अधिक और भिन्न शक्तियां विद्यमान हैं। तुम्हें समय के साथ उनका पता चल जायेगा।" एकचक्र ने स्पष्ट किया। अभिजीत ने सिर हिलाकर सहमति दी।

"क्या इस दिव्य शस्त्र का कोई नाम नहीं है?" इलाक्षी ने अचानक ही पूछा। सभी ने मुड़कर उसकी ओर देखा। प्रश्न स्वाभाविक था, जिसपर एकचक्र मुस्करा दिये।

"तुमने अच्छा प्रश्न किया है इलाक्षी। यह एक सप्तशक्ति दंड है और इसका नाम

'ध्रुवज्र' है।" एकचक्र ने बताया।

"सप्तशक्ति दंड से आपका क्या तात्पर्य है?" इलाक्षी ने आगे पूछा।

"इसे ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि इसके धारक को असाधारण बल, तीक्ष्ण बुद्धि, दीर्घ आयु, दिव्य दृष्टि, वायु में परिवहन, समस्त तंत्र और मन्त्र का ज्ञान, और छद्मता की सप्त शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं।" एकचक्र ने समझाते हुये स्पष्ट किया।

"अप्रतिम!" नैमिष ने आश्चर्यचकित होकर अभिजीत की ओर देखते हुये कहा। अभिजीत ने उसकी ओर देखा, परन्तु कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

"तो फिर अब वो शस्त्र कहाँ है?" अभिजीत ने आगे पूछा।

"वो शस्त्र हिमालय की पहाड़ियों में स्थित एक छिपी हुई कन्दरा में है। हमें उस कन्दरा की सही स्थिति पता करने में ही इतने दिन लग गये।" नैमिष ने मध्यस्थता करते हुये उत्तर दिया।

"हाँ! और अब समय आ गया है कि तुम नैमिष के साथ जाकर स्वयं को उसका योग्य धारक सिद्ध करके उस शस्त्र को प्राप्त करो।" एकचक्र ने बात पूरी करते हुये कहा।

"तो फिर हमें चलना चाहिए। आज्ञा दीजिये।" अभिजीत ने उठकर खड़े होते हुये कहा और अपने हाथ जोड़ दिये। उसके साथ -साथ सभी खड़े हो गये।

"शस्त्र की सुरक्षा को भेदना आसान नहीं होगा अभिजीत। अपने विवेक और शक्ति का सही प्रयोग करना।" एकचक्र ने समझाया। अभिजीत ने हामी भरी और झुककर एकचक्र के चरण स्पर्श किये। नैमिष ने भी एकचक्र से आशीर्वाद लिया और फिर दोनों जाने के लिये बाहर निकले। एकचक्र उनके साथ बाहर तक आये।

कुछ दूरी पर जाकर अभिजीत रुका और पलटा। फिर उसने एकचक्र से समीप आने का निवेदन किया और स्वयं भी आगे बढ़ा। कुटिया से थोड़ी दूर आने के बाद अभिजीत ने अपने कोट की जेब में से सरानी का दिया हुआ कालसूत्र निकाला, जो उन्होंने इलाक्षी के लिये दिया था।

"ये कालसूत्र सरानी ने इलाक्षी के लिये दिया था। मैं चाहता हूँ कि ये उसे आप प्रदान करें।" अभिजीत ने कालसूत्र एकचक्र के हाथ में देते हुये कहा।

"मैं उसे यह दे दूँगा।" एकचक्र ने इतना कहकर कुछ क्षणों के लिये अभिजीत को देखा और फिर कालसूत्र अपने हाथ में ले लिया। अभिजीत और नैमिष मुड़े और कुछ दूर जाकर ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गये।

नैमिष और अभिजीत हिमालय की घाटी में एक पर्वत के पास प्रकट हुये। बर्फीली ठण्डी हवाएँ चल रहीं थी, परंतु दोनों अपनी तंत्र शक्तियों के बल पर उस खून जमा देने

वाली ठण्ड में अपने शरीर का तापमान स्थिर रखे हुये थे।

"हमें इस पर्वत पर थोड़ी ऊंचाई तक चढ़ना होगा। फिर हम उस कन्दरा के मुहाने पर पहुँच जायेंगे।" नैमिष ने बताया। अभिजीत ने उस पर्वत का आंकलन किया और सहमति प्रदान की। फिर दोनों पत्थरों पर पैर जमाते हुये, सावधानी से ऊपर की ओर चढ़ने लगे। कुछ ही समय पश्चात् दोनों एक आदमकद कन्दरा के मुहाने पर खड़े हुये थे।

"अभिजीत! इसके आगे का मार्ग तुम्हें ही तय करना होगा, क्योंकि इस कन्दरा के द्वार पर एक मन्त्र कवच का पहरा है और नियमों के अनुसार जिससे होकर सिर्फ तुम ही जा सकते हो।" नैमिष ने स्पष्ट करते हुये कहा।

"ठीक है। मेरी प्रतीक्षा करो। मैं अभी वापस आता हूँ।" अभिजीत ने कहा और अंदर जाने के लिये आगे बढ़ा।

"रुको अभिजीत! जाने से पहले मेरी शुभकामनायें स्वीकार करो। मैं जानता हूँ, तुम सफल होकर ही लौटोगे।" नैमिष ने मुस्कराकर कहा।

"धन्यवाद नैमिष।" अभिजीत ने भी मुस्कराकर प्रत्युत्तर दिया और कन्दरा में प्रवेश कर गया। अभिजीत के प्रवेश करते ही द्वार के अदृश्य मन्त्र कवच में हरकत हुई और चिंगारियों से बना हुआ द्वार प्रकट हो गया। अभिजीत ने अंदर जाते ही मंत्र कवच फिर से अदृश्य हो गया।

अंदर पहुँचते ही अभिजीत एक लंबी और अँधेरी सुरंग में पहुँच गया। जैसे- जैसे अभिजीत आगे बढ़ता गया, सुरंग थोड़ी चौड़ी होती चली गयी। कुछ देर तक अनुमान के सहारे आगे बढ़ने के बाद उसने पाया कि उसके आस -पास पत्थरों की बड़ी- बड़ी चट्टानें बिखरी पड़ी हुई हैं। अभिजीत आगे बढ़ता रहा।

अचानक उसने देखा कि उन चट्टानों पर चेहरे की तरह सफ़ेद रोशनी से बनी आँखें और मुँह दिखाई देने लगे हैं। साथ ही उन चट्टानों के पथरीले हाथ और पैर भी निकल आये। उनकी आँखों से निकल रही थोड़ी बहुत रोशनी में अभिजीत ने देखा कि वो चट्टानी आकृतियाँ उसके चारों तरफ थीं। वह घिर चुका था।

पथरीली आकृतियों ने चारों ओर से अभिजीत पर हमला बोल दिया और उसे पकड़ने का प्रयास करने लगी। अभिजीत तेजी से बचाव के लिये तैयार हो गया और अपने तंत्र वारों से उन्हें पीछे धकेलने का प्रयास करने लगा। कुछ ही देर बाद, वह उन्हें पीछे की ओर धकेलने में सफल हो गया।

परन्तु वो आकृतियाँ रुकी नहीं। उन्होंने अभिजीत पर छोटे- छोटे पत्थरों से हमला कर दिया। अभिजीत ने तुरन्त तंत्र ढाल बनाकर उन पत्थरों को हानि पहुँचाने से रोका। अभिजीत को उन आकृतियों को रोकने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। उसके किसी वार का उन पर कोई प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं दे रहा था और उन्हें हटाये बिना

अभिजीत का आगे बढ़ना कठिन था। अभिजीत सोचने पर मजबूर हो गया।

उसने अचानक एक उपाय सूझा। उसने पढ़ा था कि अँधेरे को सिर्फ रोशनी से ही काटा जा सकता है। उसने यह उपाय आजमाने की सोची और तुरंत ही अपने हाथों से तेज रोशनी के गोले उत्पन्न किये। उसका उपाय काम कर गया। तेज रोशनी की किरणों के संपर्क में आते ही आकृतियां विचलित होने लगीं और अपना रूप त्यागकर वापस पत्थरों के रूप में आने लगी। कुछ ही समय में सारी आकृतियां वापस पत्थरों की चट्टानों के रूप में स्थिर हो गयीं। अभिजीत रोशनी करते हुये ही धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

कुछ दूर और आगे चलने के बाद वो एक खुले स्थान में पहुँचा। वहां घना अँधेरा था, सिवाय उन सात मशालों के जो सामने की दीवार पर बनी सात छोटी- छोटी दरवाजेनुमा गुफाओं के ऊपर जल रही थीं। अभिजीत वहीं ठिठक कर रुक गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस गुफा को चुने, ताकि वह आगे बढ़ सके।

अभिजीत अभी इसी उधेड़बुन में था कि अचानक उसने देखा कि पहली गुफा से कोई व्यक्ति निकलकर गुफा के द्वार पर खड़ा हो गया है। अभिजीत ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा और वह आश्चर्यचकित रह गया। व एकचक्र थे।

इससे पूर्व कि अभिजीत कुछ समझ पाता प्रत्येक गुफा में से एकचक्र के अनेक प्रतिरूप निकल कर अपनी- अपनी गुफा के द्वार पर खड़े हो गये। अभिजीत असमंजस में पड़ गया। इससे पहले कि वो कोई प्रतिक्रिया देता, एकचक्र के सभी प्रतिरूप एक साथ एक स्वर में बोल पड़े।

“शस्त्र की प्राप्ति के लिये ये तुम्हारा अंतिम चरण है। तुम्हें इन सात द्वारों में से कोई एक द्वार चुनना होगा। सही द्वार तुम्हें सप्त शक्ति दंड के समीप ले जायेगा और गलत द्वार तुम्हें इन गुफाओं में भटकते हुये मृत्यु की ओर ले जायेगा। चुनाव तुम्हारा है।” सभी प्रतिरूपों ने एक साथ कहा और मौन होकर अपने हाथों को आगे की ओर बांधकर सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये।

अभिजीत का मस्तिष्क तेजी से चलने लगा। वो सातों द्वारों को ध्यान से देखने लगा ताकि सही द्वार चुन सके, परन्तु सभी द्वार बिलकुल एक सामान थे। उसे कोई ऐसा चिन्ह नहीं मिला, जिससे सही द्वार का कोई सूत्र मिलता।

तभी उसे एकचक्र की कही बात याद आई। उन्होंने जाते समय कहा था कि अपनी शक्ति और विवेक का सही प्रयोग करना। उसने एकचक्र के प्रतिरूपों पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि सभी प्रतिरूपों की एक- एक वस्तु का आंकलन करने लगी और उसने वह देख ही लिया जो वह ढूँढ रहा था।

उसे याद आया कि एकचक्र के माथे पर सात छोटे -छोटे सितारे चंद्र की आकृति में दोनों भौंहों के बीच बने हुये थे। उसने सभी प्रतिरूपों की यही बात नोटिस की और उसने

अभिजीत का आगे बढ़ना कठिन था। अभिजीत सोचने पर मजबूर हो गया।

उसने अचानक एक उपाय सूझा। उसने पढ़ा था कि अँधेरे को सिर्फ रोशनी से ही काटा जा सकता है। उसने यह उपाय आजमाने की सोची और तुरंत ही अपने हाथों से तेज रोशनी के गोले उत्पन्न किये। उसका उपाय काम कर गया। तेज रोशनी की किरणों के संपर्क में आते ही आकृतियां विचलित होने लगीं और अपना रुप त्यागकर वापस पत्थरों के रुप में आने लगी। कुछ ही समय में सारी आकृतियां वापस पत्थरों की चट्टानों के रुप में स्थिर हो गयीं। अभिजीत रोशनी करते हुये ही धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

कुछ दूर और आगे चलने के बाद वो एक खुले स्थान में पहुँचा। वहां घना अँधेरा था, सिवाय उन सात मशालों के जो सामने की दीवार पर बनी सात छोटी- छोटी दरवाजेनुमा गुफाओं के ऊपर जल रही थीं। अभिजीत वहीं ठिठक कर रुक गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस गुफा को चुने, ताकि वह आगे बढ़ सके।

अभिजीत अभी इसी उधेड़बुन में था कि अचानक उसने देखा कि पहली गुफा से कोई व्यक्ति निकलकर गुफा के द्वार पर खड़ा हो गया है। अभिजीत ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा और वह आश्चर्यचकित रह गया। व एकचक्र थे।

इससे पूर्व कि अभिजीत कुछ समझ पाता प्रत्येक गुफा में से एकचक्र के अनेक प्रतिरुप निकल कर अपनी- अपनी गुफा के द्वार पर खड़े हो गये। अभिजीत असमंजस में पड़ गया। इससे पहले कि वो कोई प्रतिक्रिया देता, एकचक्र के सभी प्रतिरुप एक साथ एक स्वर में बोल पड़े।

“शस्त्र की प्राप्ति के लिये ये तुम्हारा अंतिम चरण है। तुम्हें इन सात द्वारों में से कोई एक द्वार चुनना होगा। सही द्वार तुम्हें सप्त शक्ति दंड के समीप ले जायेगा और गलत द्वार तुम्हें इन गुफाओं में भटकते हुये मृत्यु की ओर ले जायेगा। चुनाव तुम्हारा है।” सभी प्रतिरुपों ने एक साथ कहा और मौन होकर अपने हाथों को आगे की ओर बांधकर सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये।

अभिजीत का मस्तिष्क तेजी से चलने लगा। वो सातों द्वारों को ध्यान से देखने लगा ताकि सही द्वार चुन सके, परन्तु सभी द्वार बिलकुल एक सामान थे। उसे कोई ऐसा चिन्ह नहीं मिला, जिससे सही द्वार का कोई सूत्र मिलता।

तभी उसे एकचक्र की कही बात याद आई। उन्होंने जाते समय कहा था कि अपनी शक्ति और विवेक का सही प्रयोग करना। उसने एकचक्र के प्रतिरुपों पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि सभी प्रतिरुपों की एक- एक वस्तु का आंकलन करने लगी और उसने वह देख ही लिया जो वह ढूँढ रहा था।

उसे याद आया कि एकचक्र के माथे पर सात छोटे -छोटे सितारे चंद्र की आकृति में दोनों भौंहों के बीच बने हुये थे। उसने सभी प्रतिरुपों की यही बात नोटिस की और उसने

एक- एक करके सभी के माथे पर तारों की संख्या अलग- अलग थी। चार, एक, तीन, सात, दो, पाँच, छः।

उसने सही द्वार चुन लिया और वो उस प्रतिरूप की ओर बढ़ गया जिसके माथे पर सात छोटे-छोटे सितारे चंद्र की आकृति में दोनों भौंहों के बीच बने हुये थे।

उसके द्वार के पास पहुँचते ही अन्य सभी द्वार और वहाँ खड़े सभी प्रतिरूप अदृश्य हो गये।

“तुम सही द्वार चुनने में सफल हुये अभिजीत। जाओ सप्त शक्ति दंड अपने योग्य धारक की प्रतीक्षा कर रहा है, परंतु उससे पूर्व एक अंतिम परीक्षा तुम्हें देनी होगी।” एकचक्र के उस प्रतिरूप ने कहा।

“कैसी परीक्षा?” अभिजीत ने भौंहें ऊँची करते हुये पूछा।

“तुम्हें स्वयं को उस दंड के योग्य सिद्ध करना होगा और इसके लिये तुम्हें उसे उसके आधार पर से खींचकर निकलना होगा क्योंकि वह आधार में धँसा हुआ है। विजयी भव!” इतना कहते ही इससे पूर्व कि अभिजीत कुछ पूछ पाता वह प्रतिरूप अदृश्य हो गया। अभिजीत ने खीजकर अपने हाथ झटके और सामने बने गुफानुमा द्वार में प्रवेश कर गया।

अभिजीत तब तक उस गुफा में चलता रहा, जब तक की वह एक अन्य विशाल कक्ष में नहीं पहुँच गया। वह एक उबड़- खाबड़ पत्थरों से बना हुआ विशाल कक्ष था। कक्ष की छत के हिस्से में एक बड़ा सा छेद था, जिससे थोड़ी रोशनी और बर्फ थोड़ी -थोड़ी देर में हवा चलने से गिर रही थी। छेद से आती रोशनी का पीछा करती हुई, उसकी आँखें नीचे आई और उसने वह देखा, जिसको देखकर वह रोमांचित हो गया। उसके सामने सप्त शक्ति दंड, जिसे 'धृवज' भी कहा जाता है, एक बड़ी और ऊँची शिला के ऊपर गड़ा हुआ स्थिर खड़ा था। वह छत में बने छेद से आती रोशनी में जगमगा रहा था और उसके ऊपरी हिस्से में थोड़ी बर्फ जमी हुई थी जो ऊपर से गिर रही थी। अभिजीत उस दंड को समीप से देखने के लिये उत्सुकता से आगे बढ़ा।

दंड लगभग चार फुट का था और लकड़ी से बना हुआ था जो कि गहरी कत्थई रंगत लिये हुये था। उसका ऊपरी हिस्सा वृत्ताकार था, जिसके दाहिने और बांए हिस्से में तीन -तीन काँटे अर्थात कुल छः काँटे तीन इंच की लम्बाई तक निकले हुये थे तथा उस वृत्त के अग्र भाग से एक छ: इंच लंबा बड़ा काँटा निकला हुआ था। सात काँटों वाले उस वृत्ताकार शस्त्र का मध्य भाग दंडनुमा था, जिसका आखिरी सिर किसी तीर के नुकीले फल की तरह था।

अभिजीत मंत्रमुग्ध होकर उस दंड को निहारता रहा। फिर कुछ समय पश्चात् वह उस शिला पर चढ़ गया और दंड के समीप जाकर रुक गया।

उसे एकचक्र के प्रतिरुप के शब्द याद आ गये। उसे दंड को जमीन से निकाल कर अपनी योग्यता सिद्ध करनी थी। अभिजीत ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए और धीरे से उस दंड को पकड़ा। उसने थोड़ी शक्ति लगाकर दंड को खींचकर बाहर निकालने का प्रयास किया, परन्तु वह टस से मस नहीं हुआ। अभिजीत ने फिर पूरी शक्ति लगा दी और उसे खींचकर बाहर निकालने का प्रयास किया। उसके जबड़े भिंच गये और हाथों की मांसपेशियाँ फड़कने लगी। उसने तीन चार बार पूरी शक्ति से प्रयास किया, किन्तु कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अभिजीत ने दंड को छोड़ा और सीधा खड़ा हो गया। उसकी सांसे तेज चल रही थीं। वह पुनः उस दंड को निकालने के उपाय के बारे में सोचने लगा। अचानक उसे दंड की उत्पत्ति की कथा याद आई और उसे अनुभव हुआ कि वह एक दिव्यास्त्र के सामने खड़ा है। दंड उसकी परीक्षा ले रहा था।

अभिजीत कुछ पल दंड को एकटक देखता रहा। फिर उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और दंड के आगे घुटनों पर बैठकर सर झुकाकर दंड को प्रणाम किया।

"हे सप्त शक्ति दंड! आपमें महर्षि दधीचि की अस्थियों का अंश और ब्रह्म शक्ति है। मेरा प्रणाम स्वीकार करें और आपको खींचकर निकालने की उद्दंडता के लिये क्षमा करें। यदि मैं इस योग्य हूँ कि आपको धारण कर सकूँ, तो मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करें।" अभिजीत ने सीधे होकर घुटनों पर बैठे हुये ही हाथ जोड़कर कहा।

अचानक दंड तीव्र रोशनी से चमकने लगा और स्वतः ही जमीन से उखड़ कर वायु में स्थिर हो गया। अभिजीत खड़ा हो गया और मुस्कराने लगा। उसकी आँखों में प्रसन्नता थी। उसने आगे बढ़कर धीरे से अपने दायें हाथ से दंड को पकड़ा। दंड पकड़ते ही उससे निकलने वाली चमक धीरे -धीरे समाप्त हो गयी और दंड अपने सामान्य रुप में आ गया। अभिजीत ने अपने दोनों हाथों से दंड को दोनों सिरों से पकड़ा और अपने माथे पर लगाकर प्रणाम किया।

नैमिष अधीरता से अभिजीत की प्रतीक्षा करता हुआ कन्दरा के द्वार पर यहाँ से वहां घूम रहा था। अचानक कन्दरा में से पत्थरों के टकराने की आवाज आई। नैमिष रुक गया और वापस पलटकर द्वार पर आ गया और अंदर फैले अँधेरे में देखने का प्रयास करने

लगा।

कुछ ही क्षणों पश्चात उसे अभिजीत कन्दरा के अँधेरे में से आता हुआ दिखाई दिया। उसके हाथ में सप्तशक्ति दंड था। बाहर आते ही नैमिष ने एक बड़ी सी मुस्कराहट के साथ उसका स्वागत किया।

“मेरी शुभकामनायें स्वीकार करो अभिजीत! अंततः तुमने स्वयं को योग्य सिद्ध कर ही दिया। मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।” नैमिष ने प्रसन्नता से कहा।

“तुम्हारे बिना मैं यह नहीं कर पाता मित्र।” अभिजीत ने मुस्कराते हुये कहा और नैमिष को गले लगा लिया।

“अब हमें चलना चाहिए। वे लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।” नैमिष ने कहा और वे दोनों पुनः ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गये।

अंत

शाम हो चुकी थी। एकचक्र भोजन के लिये फल इत्यादि लेकर वन से लौट रहे थे। कुटिया सामने दिखाई दे रही थी। इलाक्षी अंदर विश्राम कर रही थी। कुटिया के समीप पहुँच कर एकचक्र रुक गये। उन्होंने मुड़कर देखा, उनके पीछे एक ऊर्जा का घेरा उत्पन्न हुआ, जिसमें से नैमिष और अभिजीत प्रकट हुये और एकचक्र की ओर आए।

"प्रणाम महात्मन्!" दोनों ने एक साथ हाथ जोड़कर कहा। एकचक्र ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

"मुझे पता था कि तुम सफल होकर अवश्य लौटोगे।" एकचक्र ने सप्तशक्ति दंड की ओर देखते हुये कहा, जो अभिजीत ने अपनी पीठ के पीछे तिरछा करके टाँग रखा था।

अभिजीत दंड को बाँधने वाली रस्सी खोलने लगा ताकि एकचक्र को दंड दिखा सके। इलाक्षी भी आवाजों को सुनकर बाहर आ गयी। जब उसने देखा कि अभिजीत दोनों हाथों से सप्तशक्ति दंड एकचक्र को दिखा रहा है। उसने एक क्षण के लिये दंड को और फिर अभिजीत की ओर देखा। अभिजीत ने भी इलाक्षी को आते हुये देख लिया, परन्तु कुछ नहीं कहा। उसने अनुभव किया कि इलाक्षी के नेत्रों और हाव -भाव में कुछ अंतर है। इलाक्षी अब उसे सम्मानपूर्वक देख रही थी।

अभिजीत ने एकचक्र को पूरी घटना सुनाई। एकचक्र सुनकर मुस्करा दिये और फिर वे सभी भोजन के लिये कुटिया के अंदर आ गये। सभी ने अपना -अपना स्थान ग्रहण किया और भोजन आरम्भ कर दिया।

"महात्मन्! मैंने सप्तशक्ति दंड तो प्राप्त कर लिया है, अब कृपया मुझे आगे का मार्गदर्शन दें, ताकि मैं उस असुर का अंत का कर सकूँ।" अभिजीत ने दंड को कुटिया की दीवार से टिकाने के बाद एक फल उठाकर खाते हुये कहा। वह बहुत भूखा और थका हुआ था।

"अवश्य क्यों नहीं, परन्तु उससे पहले तुम्हें कुछ जानने की आवश्यकता है। क्योंकि यदि तुम्हें लगता है कि सप्तशक्ति दंड के प्राप्त कर लेने मात्र से तुम दुराक्ष का अंत कर

सकोगे, तो यह तुम्हारी भूल है।” एकचक्र ने स्पष्ट शब्दों में कहा। अभिजीत के साथ -साथ बाकी सभी सकते में आ गये। उन्होंने स्तब्ध होकर एक दूसरे की ओर देखा।

“परन्तु आपने तो कहा था कि सप्तशक्ति दंड प्राप्त करने से मैं दुराक्ष का अंत कर सकूँगा।” अभिजीत ने पूछा।

“मैंने कहा था कि तुम्हें शक्तिशाली बनने के लिये सप्तशक्ति दंड प्राप्त करना होगा। सप्तशक्ति दंड ने तुम्हें अतिरिक्त शक्तियां अवश्य प्रदान की हैं, किन्तु दुराक्ष का अंत करना अब भी सरल नहीं है।” एकचक्र ने कहा।

“तो फिर मैं यह कैसे करूँगा?” अभिजीत ने पूछा।

“सही प्रश्न है कि तुम लोग यह कैसे करोगे?” एकचक्र ने हाथ हिलाकर अभिजीत की बात को सुधारते हुये कहा। सभी लोग अभी भी संदेह में थे। एकचक्र मुस्कराए और उन्होंने आगे कहना प्रारम्भ किया।

“ये कार्य तुम सभी को मिल कर करना होगा, परन्तु उससे पूर्व तुम्हें सप्तशक्ति दंड की कुछ अन्य विशेषताओं के बारे में जानना होगा। इसके अतिरिक्त तुम्हें दुराक्ष की शक्तियों के विषय में भी जानना होगा, तभी तुम उसे परास्त कर पाओगे।” एकचक्र ने कहा। सभी ने सर हिलाकर हामी भरी।

“अभिजीत! सप्तशक्ति दंड दिव्य एवम् शक्तिशाली है और जैसा कि मैंने तुम्हें बताया था कि ये धारण करने वाले को सप्त शक्तियों से युक्त कर देता है। अभी तुमनें अपनी योग्यता सिद्ध करके इसे प्राप्त किया है। अभी इसे धारण करना शेष है, तभी तुम्हें शक्तियां प्राप्त होगी।” एकचक्र ने आगे कहा।

“मैं इसे धारण कैसे करूँगा?” अभिजीत ने पूछा।

“बताता हूँ। अपने स्थान पर उठो और दंड को हाथ में लेकर इसके नाम का ध्यान करो। यह दंड सदैव तुम्हारे पास अदृश्य रूप में तुम्हारे शरीर में वास करेगा। तुम जब चाहे इसका ध्यान करके इसे प्रकट करके इसे प्रयोग में ला पाओगे और कार्य समाप्त होने पर यह फिर से अदृश्य हो जायेगा।” एकचक्र ने समझाया।

अभिजीत ने खड़े होकर दंड को उठाया और हाथों में लेकर उसका ध्यान किया। दंड अदृश्य हो गया, अभिजीत को अचानक ही एक दिव्य एहसास हुआ। उसके अंदर शक्ति का तूफ़ान उमड़ पड़ा और उसे दंड की समस्त शक्तियों का ज्ञान स्वतः हो गया।

“ये अद्भुत है। मुझे दंड के प्रयोग और समस्त शक्तियों का स्वतः ही अनुभव हो रहा है।” अभिजीत ने प्रसन्नता से कहा।

“हाँ! बिलकुल ठीक कहा। तुम इस दंड की सहायता से तंत्र वार भी कर सकते हो और इसकी सहायता से किसी भी तंत्र वार को विफल भी कर सकते हो।” एकचक्र ने कहा और अभिजीत को बैठने का संकेत किया। अभिजीत फिर से बैठ गया।

“अब तुम्हें दुराक्ष के विषय में भी जान लेना चाहिए।” एकचक्र ने कहा और सभी लोग ध्यान से सुनने के लिये आगे की ओर आ गये।

“जैसा कि मैंने तुम्हें पूर्व में बताया था कि दुराक्ष पाताल लोक में असुर सेना के कुछ प्रमुख अधिपतियों में से एक है। उसकी शक्ति से तुम सभी भली-भांति परिचित हो। उसकी इस अपराजित शक्ति के दो मुख्य कारण हैं। पहला उसे मिला हुआ वरदान जिसके अनुसार उसकी मृत्यु मानव और प्रतिहारी के संयोग से उत्पन्न संतान द्वारा होना है और दूसरा उसका शक्ति खड्ग।” एकचक्र ने समझाते हुए कहा।

“शक्ति खड्ग? हाँ कदाचित मैंने उससे युद्ध करते समय देखा था। वह उसकी कमर में लटकी हुई थी।” इलाक्षी ने कुछ याद करते हुये कहा।

“हाँ! बिलकुल सही। वह खड्ग दुराक्ष ने वर्षों की तपस्या और यज्ञ के द्वारा वरदान में प्राप्त की थी। वह सप्तशक्ति दंड से अधिक नहीं तो, कम शक्तिशाली भी नहीं है। तुम्हें सप्तशक्ति दंड के अतिरिक्त अपने पूरे युद्धकौशल और अनुभव का उपयोग करना पड़ेगा।” एकचक्र ने बताया। सबने सिर हिलाकर अपनी -अपनी सहमति प्रदान की।

“महात्मन्! क्या आपको ज्ञात है कि दुराक्ष कहाँ है?” अभिजीत ने पूछा।

“अभी रात्रि बहुत हो गयी है। हम कल प्रातःकाल में इसके विषय में बात करेंगे और कल ही तुम सभी उस अभियान पर निकलोगे।” एकचक्र ने एक बार फिर बड़ी चतुराई से मुस्कराकर बात को समाप्त करते हुये कहा।

अगले दिन प्रातःकाल से पूर्व ही अभिजीत और नैमिष उठ गये थे और वन में अपनी तंत्र शक्तियों का युद्धाभ्यास करने लगे थे। प्रशिक्षण के समय से ही उन दोनों ने यह नियम बना लिया था और अपने खाली समय में दोनों अभ्यास करने के लिये इकट्ठे हो जाते थे। आज अभिजीत सप्तशक्ति दंड के प्रयोग के अनुभव के उद्देश्य से नैमिष के साथ अभ्यास कर रहा था।

सूर्योदय हो चूका था और हल्की सी नरम धूप खिलने लगी थी। वे दोनों दो घंटे से अभ्यास कर रहे थे। तभी एकचक्र और इलाक्षी उन्हें खोजते हुये वहां आ गये। उन्हें आता देख कर अभिजीत और नैमिष दोनों रुक गये और उनकी ओर बढ़े।

“प्रणाम महात्मन्!” दोनों ने हाथ जोड़कर कहा। एकचक्र ने मुस्कुराकर हाथ के इशारे

से आशीर्वाद दिया।

“प्रतीत होता है, तुम दोनों अभियान पर जाने के लिये पूर्ण रुप से तैयार हो।” एकचक्र ने कहा।

“हाँ! हम दोनों बस अभ्यास कर रहे थे।” नैमिष ने कहा।

“उचित है। तुम तीनों को साथ मिलकर यह कार्य करना है और एक दूसरे की हर संभव सहायता और रक्षा करनी है और उसके पश्चात् तुम्हें वापस अपने समय में सकुशल लौटना है।” एकचक्र ने समझाया।

“क्या आप हमारे साथ नहीं चल रहे हैं?” इलाक्षी ने पूछा।

“नहीं! यह मेरा कार्य नहीं है। मेरा कार्य शिशु की रक्षा करना है। मुझे तुम्हें जो सूचनाएं देनी थी, मैं दे चूका हूँ ,अब शेष कार्य तुम्हें ही पूर्ण करना है।” एकचक्र ने स्पष्ट किया।

“तो क्या हम लौट कर यहाँ नहीं आएंगे?” नैमिष ने पूछा।

“नहीं! तुम लोग कार्य पूर्ण करके शक्ति-केंद्र तक जाओगे और वहां से तुम्हें अपने समय में पुनः प्रेषित कर लिया जायेगा। वैसे भी जब तुम लौट कर यहाँ आओगे, मैं तुम्हें यहाँ नहीं मिलूंगा। मेरा कार्य समाप्त हो चुका है। अब मैं पुनः सभी के लिये अदृश्य हो जाऊँगा।” एकचक्र ने आगे कहा।

“उचित है महात्मन्!” सभी ने सहमति में सर हिलाकर कहा।

“अब सुनो! दुराक्ष का महल यहाँ से दक्षिण दिशा में दंडकारण्य के वनों में स्थित एक पहाड़ी के नीचे है। तुम्हें सावधान रहना होगा। वहां और भी असुर होंगे।” एकचक्र ने बताया और सभी ने महल की स्थिति को ध्यानपूर्वक समझा।

“हमें आशीर्वाद दीजिये महात्मन्!” तीनों ने झुककर एकचक्र के चरण छुए।

“विजयी भव!” एकचक्र ने उन्हें आशीर्वाद दिया। तीनों जाने के लिये पलट गये।

“इलाक्षी! एक पल रुको।” एकचक्र ने इलाक्षी को संबोधित करते हुये कहा। तीनों रुककर पलट गये। इलाक्षी एकचक्र की ओर आगे बढ़ी।

“ये कालसूत्र अभिजीत तुम्हारे लिये लाया था। उसने मुझसे इसे तुम्हें देने का निवेदन किया था।” एकचक्र ने अपने पास से कालसूत्र निकाला और इलाक्षी का हाथ आगे लाकर उसकी हथेली में रखते हुये कहा। इलाक्षी ने मुड़कर अभिजीत की ओर देखा। अभिजीत ने अपनी दृष्टि नीचे की ओर कर ली।

“धन्यवाद महात्मन्!” इलाक्षी ने कहा और अपने दोनों हाथ जोड़ दिये। इलाक्षी ने कालसूत्र अपनी कलाई में अच्छी तरह बाँधा और तीनों पुनः मुड़कर अपने गंतव्य की ओर निकल पड़े। एकचक्र ने मुस्कराकर उन तीनों को देखा, जो कि एक ऊर्जा के घेरे में अदृश्य

हो रहे थे।

दंडकारण्य अत्यधिक सघन वन था। सूर्य की रोशनी बड़ी कठिनाई से ही नीचे आ रही थी। चारों और भांति -भांति के वृक्ष और पेड़- पौधे लगे हुये थे। अचानक ही वायु में एक प्रकाशमय वृत्त उभरने लगा और धीरे -धीरे उसका आकर बढ़ने लगा। अगले ही पल उस वृत्त में से अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी दंडकारण्य वन में प्रकट हुये।

अभिजीत ने अपने जीवन में इतना हरा-भरा वनक्षेत्र पहली बार देखा था। उसने इससे पहले भी कई वनों में भ्रमण किया था, परंतु दंडकारण्य वन में आकर तो वह प्रकृति के इस सौंदर्य को देखकर वास्तव में चकित था।

वन में कुछ समय तक आगे बढ़ने के बाद जब वे सभी एक विचित्र से स्थान पर आकर रुके तो उनके सामने एक ऊबड़-खाबड़ चढ़ाई थी। जिसके मध्य में पानी की एक छोटी से लहर झरने की तरह पत्थरों के मध्य से बहती हुई चली आ रही थी। वर्षों से पानी में रहने के कारण ही वे सारे पत्थर पूरी तरह अत्यधिक चिकने हो गये थे और उनपर काफ़ी काई लगी हुई थी।

आगे बढ़ने का और कोई मार्ग शेष नहीं था। अत: उन तीनों ने ऊपर जाने का निश्चय किया और वो तीनों पत्थरों पर किसी तरह अपने पैर जमाते हुये ऊपर की ओर आगे बढ़ने लगे। काफी देर तक वो मुश्किल चढाई किसी तरह चढ़ने के बाद वो ऊपर एक सीधे रास्ते पर आ गये। परन्तु जैसे ही अभिजीत ने उस सपाट सीधे रास्ते पर आगे बढ़ने के लिये कदम बढ़ाया तो इलाक्षी ने उसे अपने हाथ के इशारे से रुकने का संकेत दिया। अभिजीत ने पहले तो चौंककर इलाक्षी से इसके बारे में पूछना चाहा पर उसकी मंशा समझकर इलाक्षी के बताये रास्ते पर ही बढ़ने का निश्चय किया। इलाक्षी के संकेतानुसार वे रास्ते पर न चलकर वन में पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुये उस रास्ते के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे।

मार्ग पर आगे बढ़ते हुये कुछ समय तक चलने के पश्चात् वे एक बड़े से पहाड़ के समीप पहुँचे। उन्होंने देखा कि जिस रास्ते के साथ -साथ चलते हुये वो यहाँ आये हैं, वो आगे तक जाकर एक पुल पर समाप्त हो रहा था। वह पुल एक पहाड़ के चारों ओर बनी एक गहरी खाई के ऊपर ही बीच में बना हुआ था, जो कि महल के द्वार और रास्ते को आपस में जोड़ रहा था। वह पुल बहुत अधिक लंबा नहीं था और उसके किनारे भी खुले हुये थे। पुल के आरम्भ पर किसी प्रकार का द्वार बना हुआ प्रतीत होता था।

उन्होंने वृक्षों के पीछे छुपकर ही पहले वस्तु स्थिति का अच्छी तरह से आंकलन किया। महल के आसपास न तो कोई पहरा था और न ही कोई अन्य असुर सैनिक। महल

तक जाने के रास्ते पर किसी भी असामान्य रुकावट को ना पाकर उन्होनें आगे बढ़ने का निश्चय किया।वे सावधानी से मुख्य रास्ते से होकर आगे बढ़ने लगे। किसी ने भी उनका रास्ता नहीं रोका और न ही महल से कोई बाहर निकला। प्रथम दृष्टि में तो यही लग रहा था, जैसे दुराक्ष को किसी भी प्रकार की सुरक्षा की कोई आवश्यकता ही नहीं है, इससे तीनों का आगे बढ़ते रहने का निश्चय और भी अधिक प्रबल हो गया था। कुछ और आगे बढ़ने पर वे पुल प्रारंभिक सिरे तक पहुँच गये।

पुल पर पहुँचते ही उन्होंने देखा कि जिसे वे अब तक पुल का द्वार समझ रहे थे, वह वास्तव में द्वार न होकर दो विशालकाय पाषाण मूर्तियाँ थीं। वे पुल के आरम्भ के दोनों सिरों पर स्तंभों पर बनाई गयी दो विशालकाय असुरों की मूर्तियाँ थीं, जो हाथ में भाला इस प्रकार पकड़े हुये थे, मानो किसी द्वार की रचना कर रहे हों। उन तीनों ने उन मूर्तियों को आश्चर्य से देखा जो कि जीवित प्रतीत हो रही थीं, परन्तु जैसे ही उनकी दृष्टि उन मूर्तियों से परे पीछे स्थित महल पर पड़ी, उनकी आँखें आश्चर्य से फ़ैल गयी।

उनके सामने एक बड़ा सा महल था जो कि पहाड़ के पत्थरों को तराश कर बनाया गया था। उसका निचला हिस्सा किले की शक्ल में था, जहाँ बड़े -बड़े स्तम्भ बने हुये थे, जहाँ से सैनिक महल की पहरेदारी करते थे, परन्तु वहां कोई नहीं था। महल का ऊपरी हिस्सा बड़ा था और पेड़ों से आधा ढका हुआ था, जहाँ से छज्जे पर आने के लिये तीन बड़े -बड़े खुले द्वार बने हुये थे। महल का मुख्य द्वार काफ़ी बड़ा था और दो पहरेदारी वाले स्तंभों के बीचों-बीच बना हुआ था। इसमें भी तीन द्वार थे, जिसमें बीच वाला द्वार बड़ा और उसके अगल-बगल के द्वार छोटे थे। मुख्य द्वार की आकृति किसी असुर के खुले मुख जैसी थी। पुल सीधे उसी मुख्य द्वार तक बना हुआ था।

उन तीनों ने सावधानी से मूर्तियों वाले द्वार को पार किया और पुल पर आगे बढ़ने लगे परन्तु अचानक तभी पीछे हुई पत्थरों के कड़कड़ाने जैसी आवाज से वे लोग तेजी से पीछे की ओर मुड़े।

दुराक्ष अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था और आगे की योजना के विषय में विचार -विमर्श कर रहा था। उसकी स्थिति अब पहले से अच्छी थी। क्षुब्ध व क्रोधित विशल्या से हुए उसके युद्ध ने उसको काफ़ी क्षति पहुंचाई थी और अभिजीत के त्रिकाट विद्या के वार ने उसे गंभीर रूप से घायल करने के साथ -साथ उसकी रही सही शक्ति भी छीन ली थी। उसके घाव तेजी से भरने की कगार पर थे, परन्तु वह अभी भी बहुत कमजोर था। वह

अपनी सम्पूर्ण शक्ति वापस आने तक उस शिशु को ढूँढने और उन प्रतिहारियों को समाप्त करने का उद्देश्य स्थगित कर चुका था। तभी अचानक एक विचित्र ध्वनि ने उनका ध्यान खींच लिया।

"ये ध्वनि कैसी है?" अशमक ने दुराक्ष की ओर देखा और पूछा।

"कोई अपरिचित हमारे महल के प्रवेश द्वार पर हैं। मैंने पाषाण दैत्यों को द्वार पर इसलिए स्थापित किया था, ताकि वो हमें किसी भी आने वाले शत्रु के प्रति हमें सावधान कर सकें।" दुराक्ष ने कहा।

"मैं जाकर देखता हूँ कि वहाँ कौन है? हो सकता है, किसी प्रतिहारी ने यहाँ का पता जान लिया हो?" अशमक ने सशंकित होकर कहा।

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। पाषाण दैत्य प्रतिहारियों से भी निपटने में सक्षम हैं। वो जो भी है, उसकी मृत्यु उसे यहाँ खींच लायी है।" दुराक्ष ने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी ने एक साथ तेजी से पीछे मुड़कर देखा और स्तब्ध रह गये। वो दोनों मूर्तियां जीवित हो चुकी थीं और हाथ में थामे भाले लेकर उनकी ही ओर बढ़ रही थीं। उनके पास अब कोई रास्ता नहीं बचा था। तीनों एक साथ उनसे निपटने के लिये तैयार हो गये।

पाषाण दैत्यों ने भाले से उन पर वार करने आरम्भ कर दिये। तीनों बचते हुये दोनों पाषाण दैत्यों पर तन्त्र वार करने लगे, परन्तु उनके वारों का उन दैत्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। उनसे बचते बचाते अचानक पुल के किनारे पर नैमिष का पैर फिसला और वो गहरी खाई में गिरने को हुआ। अभिजीत ने तेजी से आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ा और वापस खींचकर उसे गिरने से बचा लिया।

"तुम ठीक हो?" अभिजीत ने नैमिष के कंधे पर हाथ रखकर पूछा।

"हाँ! मैं ठीक हूँ। बचो!" नैमिष ने एकाएक अभिजीत को भाले के वार से बचाते हुये धक्का दिया।

"इन पर तो किसी वार का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा है। अब हम क्या करें?"

इलाक्षी ने एक पाषाण दैत्य पर भीषण वार करते हुये कहा।

अभिजीत और नैमिष जो कि दूसरे पाषाण दैत्य से उलझे हुये थे। उन्होंने एक दूसरे को देखा और दोनों को अचानक ही एक उपाय सूझा। उन्होंने एक योजना बनायी। नैमिष ने उस पाषाण दैत्य को उलझाया और उसे पुल के किनारे तक खींचकर ले आया। जैसे ही वह किनारे पर आया नैमिष ने उसके पाँव तंत्र बंधन से जकड़ दिये और तभी अभिजीत ने उस पर एक भीषण तंत्र वार किया। वार के धक्के से वह पाषाण दैत्य लड़खड़ाया और सीधा गहरी खाई में जा गिरा।

इलाक्षी जो अकेले ही दूसरे दैत्य का सामना कर रही थी, मुसीबत में थी। अभिजीत और नैमिष तुरंत उसकी सहायता के लिये आये। नैमिष ने फिर से एक तंत्र बंधन से उस दैत्य के पाँव बाँधने का प्रयास किया। परन्तु इस बार दैत्य सावधान था, उसने तुरन्त ही अपने भाले से तंत्र बंधन को काट दिया।

“ये हमारी चाल को समझ गया है। हमें कोई और उपाय सोचना होगा।” अभिजीत ने कहा।

तभी इलाक्षी ने उन्हें संकेत किया और नैमिष के साथ पूरी शक्ति से उस दैत्य पर टूट पड़ी। अभिजीत सप्तशक्ति दंड की शक्ति से अदृश्य होकर उस दैत्य के पीछे जा पहुँचा और दैत्य के पाँव तंत्र बंधनों में जकड दिये और तभी नैमिष और इलाक्षी ने उसे तंत्रवारों से धक्का दे दे कर पुल से नीचे धकेल दिया।

“चलो! समस्या समाप्त हुई।” नैमिष ने नीचे गिरते हुए पाषाण दैत्य को देखकर कहा। वो आगे जाने के लिए मुड़ गए, पर द्वार तक पहुँचने से पहले ही उनके कदम थम गए। क्योंकि पहले गिरने वाला पाषाण दैत्य चट्टानों पर चढ़ता हुआ महल के द्वार के आगे खड़ा हो गया।

“नैमिष! लगता तुम कुछ ज्यादा ही जल्दी बोल गए।” अभिजीत ने कहा। पाषाण दैत्य ने पहले से अधिक तीव्रता से आक्रमण कर दिया।

“ये बहुत क्रोध में भी है।” नैमिष ने बचते हुए कहा। पर समस्या का अंत यहीं नहीं होने वाला था क्योंकि दूसरा दैत्य भी चट्टानों पर चढ़ते हुए पीछे की तरफ से उन पर आक्रमण कर दिया। पाषाण दैत्यों से बचते हुए, वो तीनों उन दैत्यों पर भीषण प्रहार करते जा रहे थे। पर इस बार उनके वारों से दैत्यों के पथरीले शरीर पर दरारें पड़ने लगी थीं और वो कुछ -कुछ टूट भी रहे थे।

“लगता है खाई में गिरने से इनको क्षति पहुँची है। ये टूट रहे हैं।” अभिजीत ने और तीव्रता से वार करते हुए कहा। वो दोनों तरफ से घिर चुके थे और दैत्य आगे -आते जा रहे थे। उनके पास अब बचने की कोई जगह नहीं बची थी। दोनों दैत्यों ने एक साथ आक्रमण कर दिया। अभिजीत एक बार फिर उड़कर बचा और उनके पीछे जा पहुँचा। वार से बचने

के लिए नैमिष और इलाक्षी तेजी से एक तरफ हट गए और खाई में गिरते- गिरते बचे। दैत्यों के वार एक दूसरे को लग गए। कड़ाक की आवाज के साथ एक दैत्य का हाथ टूट कर गिर गया। इस अवसर का लाभ उठाकर नैमिष और इलाक्षी उनके पैरों के नीचे से होते हुए अभीजित के पास पहुँच गए।

“इनके वार एक दूसरे के लिए घातक हैं। हमें इसका लाभ उठाना चाहिए। तुम दोनों इन पर भीषण प्रहार करो, ताकि ये और उग्र हो जाएँ।” अभिजीत ने कहा और सप्तशक्ति दंड की सहायता से उड़कर दोनों दैत्यों पर भीषण वार करता हुआ, उनके बीच जा पहुँचा। दोनों दैत्यों ने बौखलाकर उसपर एक साथ वार किया। अभिजीत तुरंत दंड की सहायता से अदृश्य हो गया और पहले से ही कमजोर दोनों दैत्यों के शरीर एक दूसरे के वारों से टूटकर बिखर गए।

“चलो अंततः अब....” अभिजीत ने बोलते हुए नैमिष के मुंह पर हाथ रख दिया।

“बस करो भाई। अब कुछ मत कहो।” अभिजीत ने कहा और फिर दोनों ठहाका मार कर हंसने लगे।

“तुम दोनों अपनी मसखरी बंद करोगे।” इलाक्षी ने डांटा, दोनों चुप हो गए।

“पाषाण दैत्यों के आक्रमण से हमें उनकी शक्ति का अनुमान हो गया है। अंदर कोई जाल भी बिछा हो सकता है, इसलिए हमें अब और अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। हमें एक साथ ही रहना होगा।” इलाक्षी ने आगे कहा और वो तीनों फिर से महल की ओर सावधानी से आगे बढ़ने लगे।

“हमें अंदर जाने से पहले कुछ तैयारी कर लेनी चाहिए। क्यों हम एक योजना बनायें?” अभिजीत ने अचानक रुककर कहा। दोनों ने उसकी ओर जिज्ञासावश देखा और अभिजीत फिर से मुस्करा दिया।

“असंभव।” एक असुर सैनिक के द्वारा पाषाण दैत्यों की पराजय की सूचना से पाकर दुराक्ष क्रोधित हो गया। “इन्होंने पाषाण दैत्यों को पराजित कैसे कर दिया? उनकी संख्या कितनी है सैनिक?”

“वो संख्या में सिर्फ तीन नवयुवक हैं अधिपति। दो पुरुष और एक स्त्री।” सेंकी ने हाथ जोड़कर सर झुकाये हुए कहा। दुराक्ष ने अशमक की तरफ देखा। दोनों की आँखें

चमक उठी।

“हो न हो ये वही तीनों है, जिन्होंने मुझे उस शिशु को खोजते समय रोकने की कोशिश की थी।” दुराक्ष ने अपनी ठोड़ी पर हाथ रखकर सोचते हुए कहा।

“आप ठीक सोच रहे हैं अधिपति। हमनें इन प्रतिहारियों को कम समझा था।” अशमक ने कहा।

“नहीं अशमक! इन्होंने हमें कम समझा है। ये अभी हमारी शक्ति को नहीं जानते। हमें इन्हें फंसाना होगा। अपनी असुर टुकड़ी को लेकर जाओ। तुम जानते हो तुम्हें क्या करना है। उन्हें बंदी बना कर मेरे पास लाओ। मैं स्वयं अपने हाथों से उन्हें मृत्यु का वरण कराऊँगा।” दुराक्ष ने आदेश दिया और अशमक के होंठों पर कुटिल मुस्कान खेल गयी।

इधर वो तीनों महल के अंदर प्रवेश कर चुके थे। महल के द्वार में प्रवेश करके एक गलियारे को पार करके वो तीनों एक बड़े से कक्ष में पहुँच गये। उनके सामने एक और द्वार था। वे आगे बढे और द्वार पार करके एक अहाते में पहुंचे। वहां चारों ओर खंबे लगे हुये थे और कुछ कक्षों के द्वार दिखाई दे रहे थे। वहां प्रत्येक खम्बे पर मशालें लगी हुई थीं, जिससे वहां रोशनी हो रही थी। वहां सामान्य से कुछ ज्यादा ही शांति थी।

अचानक दरवाजों के भड़ाक से खुलने और पदचापों की आवाज से वहाँ की शांति भंग हो गयी थी। एक असुर टुकड़ी ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था। सभी असुरों के हाथों में तलवारें थीं। उनकी संख्या लगभग चार गुणी थी।

“हा हा हा! तुम्हें क्या लगा, तुम यहाँ इतनी सरलता से आकर बच जाओगे। तुम्हारी मृत्यु तुम्हें यहाँ खींच लायी है।” अशमक ने ठहाका लगाते हुए कहा। उसने अपना एक हाथ उठाया जो आक्रमण का संकेत था।

अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी ने एक दूसरे की पीठ की ओर मुंह करके गोलाई में अपनी युद्धक स्थिति बना ली, ताकि चौतरफ़ा हमले पर नजर रख सकें, और युद्ध शुरू हो गया। साधारण से असुर सैनिक उन तीनो के तंत्र वारों से मृत होकर कटे फलों की तरह गिरने लगे। पर अशमक की कुटिल मुस्कान बढ़ती जा रही थी।

उसने अपनी आँखें बंद करके अपने दोनों हाथों को आगे फैलाया और अचानक से अपनी आँखें खोल दी। उसकी आँखें तेज रौशनी से चमक उठी और इसी के साथ सारा कक्ष धुंएँ से भर गया। कुछ समय तक युद्ध की आवाज आती रही और अचानक वो आवाज भी बंद हो गयी। धुआँ छंटते ही वहां का दृश्य भी बदल चुका था। अभिजीत,

नैमिष और इलाक्षी असहाय थे। असुरों की तलवारें उनकी गर्दनों पर थीं और उन्हें घेर लिया गया था। अशमक ने एक बार फिर जोरदार ठहाका लगाया और उन्हें तंत्र बंधनों में जकड़ लिया।

थोड़ी ही देर बाद वो एक खुले दरबारनुमा बड़े से अँधेरे कक्ष में जा पहुंचे। सारे कक्ष में भयानक आकृतियाँ बनी हुई थीं, जो चारों ओर लगी मशालों की रौशनी में और भी भयानक लग रही थी। दरबार के दूसरे छोर पर एक अच्छी ऊंचाई पर एक पाषाण सिंहासन बना हुआ था, जिस तक जाने के लिए बहुत सी बड़ी और चौड़ी सीढियाँ बनी हुई थीं। सिंहासन के पीछे की दीवार पर मारवाड़ी शैली में एक असुर का विशालकाय चित्र बना हुआ था।

विशाल पाषाण सिंहासन का ऊपरी हिस्से के दोनों सिरों पर असुरों के मुकुट की तरह बड़े सींग बने हुए थे और उसके हत्थों की आकृति दहाड़ते हुए सिंहों जैसी थी। उस ऊँचे पाषाण सिंहासन पर एक विशालकाय और शक्तिशाली आकृति बैठी हुई थी।

सभी लोग सीढ़ियों के पास आ गए और सैनिकों सहित अशमक ने उस आकृति के समक्ष सर झुकाकर अभिवादन किया। सिंहासन पर बैठी आकृति धीरे से हिली और खड़ी हो गयी। मशालों की रोशनी में उसका चेहरा ठीक से दिखाई देने लगा। वह दुराक्ष था।

“अच्छा किया अशमक! जो इन्हें सीधे यहाँ ले आए। मुझे इन्हीं की प्रतीक्षा थी। अब मैं तुम तीनों की गर्दनें अपने हाथों से मरोड़ूंगा।” दुराक्ष ने एक भयानक अट्टहास लगाने के साथ कहा। दुराक्ष धीरे -धीरे सीढ़ियां उतरते हुए नीचे आया और सीधे अभिजीत के सामने आ गया। उसने अभिजीत की तरफ हाथ ही बढ़ाया था कि अचानक तीनों गायब हो गए।

“तुम्हें क्या लगा कि हमें बंदी बनाना इतना सरल होगा।” इससे पहले की दुराक्ष और बाकी सब कुछ समझ पाते मुख्य द्वार से अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी अंदर आ गए।

“तुमनें हमें मूर्ख बनाया?” अशमक ने क्रोध में कहा।

“बनाने की आवश्यकता थी?” अभिजीत ने नैमिष की ओर देखकर कहा और दोनों हंस दिए।

“ये सब हमारी योजना थी। हम जानते थे कि तुम लोग छल से युद्ध करोगे। पर हमारा मुख्य लक्ष्य तुम तक पहुँचना था। इसलिए हमनें महल में प्रवेश से पूर्व ही योजना बनायी और सप्तशक्ति दंड की सहायता से अपने प्रतिरूप बनाकर उन्हें आगे भेज दिया।” अभिजीत ने आगे कहा।

“तुमनें यहाँ आकर बहुत बड़ी मूर्खता की है।” दुराक्ष नें दहाड़ा।

“हम यहाँ तुम्हारे आतंक का अंत करने आये हैं दुराक्ष।” अभिजीत ने कहा।

“तुम मरने आये हो। अच्छा हुआ मुझे तुम्हें खोजना नहीं पड़ा और तुम स्वयं ही मृत्यु को खोजते हुए यहाँ आ गए। अपनी मृत्यु का सामना करने के लिये तैयार हो जाओ।”

कहते हुये दुराक्ष ने एक भयंकर अट्टहास किया और कमर में लटका अपना दिव्य खड्ग निकाल लिया।

पास ही खड़े अशमक ने असुर टुकड़ी को इकट्ठा किया और युद्ध के लिये तैयार हो गया। अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी भी युद्ध के लिये सजग और तैयार हो गये।

"आज कोई भी युक्ति तुम्हें मेरे खड्ग की शक्ति से नहीं बचा पायेगा।" दुराक्ष ने अपना खड्ग उठाया और आक्रमण का आदेश दे दिया।

अशमक तेजी से अपनी असुर टुकड़ी के साथ आक्रमण के लिये आगे बढ़ा और उसने तीनों पर तंत्र वार करना प्रारम्भ कर दिया। नैमिष और इलाक्षी ने अचानक से अशमक का वार रोका और पलटवार करते हुये दोनों ही आगे बढ़े। नैमिष तो अकेले ही पूरी असुर टुकड़ी से भिड़ गया और यह अवसर पाकर इलाक्षी ने भी अशमक को रोक लिया। दोनों ही एक दूसरे पर तंत्र वार करते रहे। कभी इलाक्षी का पलड़ा भारी हो जाता, तो कभी अशमक का। इलाक्षी भले ही तंत्रशक्तियों से युक्त हो, पर अशमक भी दुराक्ष का सहायक होने के साथ -साथ एक असुर भी था और इस समय वो इलाक्षी से तंत्र वारों से किसी भी तरह कम नहीं था।

इस समय दुराक्ष के समक्ष सिर्फ अभिजीत ही रह गया था और दोनों ही एक दूसरे के आमने सामने आ खड़े हुये थे। दुराक्ष अभिजीत के वहाँ आने के उद्देश्य से अनभिज्ञ नहीं था और ना ही उसकी शक्तियों से, पर अभिजीत ने दुराक्ष के सामने आने पर भी अभी तक सप्तशक्ति दंड का आह्वान नहीं किया था। वैसे भी वीर युद्ध में अपने शत्रुओं को स्वयं पर वार करने का प्रथम अवसर देते ही हैं, जिससे युद्ध एक तरफा ना हो और युद्ध की गरिमा भी बनी रहे। परन्तु दुराक्ष जैसे असुरों के लिये युद्ध की गरिमा और युद्धवीरों के मान -सम्मान जैसे वीरोचित गुणों से कोई भी लेना- देना नहीं था। वे तो बस युद्ध में अपने शत्रुओं को पराजित करने का उद्देश्य लेकर ही युद्धभूमि में अपने कदम रखते हैं और आशातीत रूप से दुराक्ष ने ही सबसे पहले अपना खड्ग उठाया और यकायक ही एक भीषण तंत्र वार अभिजीत पर किया।

दुराक्ष के इस तंत्रवार से अभिजीत अचानक से संभल नहीं पाया, क्योंकि उसे दुराक्ष द्वारा अचानक ही इस अप्रत्याशित वार की आशा नहीं थी। दुराक्ष के तंत्रवार के टकराने से अभिजीत हवा में उड़ता हुआ कई फुट दूर जा गिरा। दुराक्ष का यह तंत्रवार मामूली नहीं था। भीषण वार था वह, क्योंकि दुराक्ष किसी ऐसे शत्रु को एक भी मौका देना नहीं चाहता था, जिसने पूर्व युद्ध में उसे अशक्त कर दिया हो और अब उसके ही गढ़ में आकर उसे चुनौती दी हो।

अभिजीत उसके तंत्रवार से भले ही संभल ना पाया था, पर आश्चर्यजनक रूप से दुराक्ष के इस प्रथम वार से उसे कोई शारीरिक क्षति नहीं हुई। जैसे ही अभिजीत संभालकर फिर

से खड़ा हुआ तो स्वयं उसके साथ- साथ दुराक्ष भी उसे सकुशल देखकर विस्मय में पड़ गया। पर दुराक्ष के उस तंत्र वार की भीषणता से अभिजीत भी अनभिज्ञ नहीं था, पर जब उसे यह एहसास हुआ कि इस तंत्रवार को झेलने के बाद भी उसे कोई क्षति नहीं पहुंची है, तब वह यह समझ गया कि यह सिर्फ और सिर्फ सप्तशक्ति दंड की ही शक्ति है, जिसने उसकी रक्षा की थी। सप्तशक्ति दंड ने ही उसे अद्भूत शारीरिक बल के साथ -साथ अन्य तंत्र-मंत्र शक्तियों का स्वामी भी बना दिया था, जिसके कारण वह दुराक्ष के उस अतिशक्तिशाली तंत्रवार को भी सह पाया था।

सप्तशक्ति दंड का भान होते ही अभिजीत ने बिना क्षणभर की देर किये सप्तशक्ति दंड का ध्यान किया और एक चमक के साथ सप्तशक्ति दंड अभिजीत के हाथ में प्रकट हो गया। अभिजीत के हाथ में सप्तशक्ति दंड को देखकर एक पल को तो दुराक्ष की आंखें खुली की खुली ही रह गयीं, पर वह तुरंत ही अभिजीत पर एक और भीषण तंत्रवार करने से नहीं चूका। पर इस बार अभिजीत दुराक्ष के वारों के प्रति सचेत था। दुराक्ष को तंत्रवार करते देखकर अभिजीत सप्तशक्ति दंड की सहायता से ना सिर्फ हवा में ही ऊपर उड़कर उसके तंत्रवार से बचा, बल्कि अपने आपको संभालकर उसके वार का प्रत्युत्तर देने को भी उद्द्त हुआ।

दुराक्ष का वार पीछे दीवार से जा टकराया। अभिजीत ने हवा में ही स्वयं को संभाला और प्रत्युत्तर में एक भीषण तंत्र वार दुराक्ष पर भी कर दिया। दुराक्ष ने अपने खड्ग से उस वार को रोकने की चेष्टा की, परन्तु तंत्रवार के धक्के से वह पीछे सिंहासन पर जा गिरा। दुराक्ष को संभलने में कुछ ही क्षण लगे और उसके होंठो पर एक मुस्कान खेल गयी। वह इस समय कमजोर भले ही था, पर अभी भी युद्ध करने में सक्षम था। उसने जीवन में पहली बार इतने शक्तिशाली प्रतिद्वंदी का सामना किया था। अभिजीत और दुराक्ष के मध्य ये युद्ध सच में ही अत्यंत रोमांचक होने वाला था।

अभिजीत ने भूमि पर उतरते ही दुराक्ष पर एक और तंत्रवार किया, परन्तु इस बार दुराक्ष भी सावधान था। उसने खड्ग के वार से अभिजीत का तंत्रवार रोक दिया और न सिर्फ वह द्रुत गति से दौड़कर अभिजीत की ओर गया, बल्कि उस पर एक भरपूर मुष्टि प्रहार भी किया। अभिजीत इस एक वार से अचानक से पीछे की ओर जा गिरा। दुराक्ष ने उसकी ओर एक उछाल भरी और अभिजीत पर एक और वार करने की कोशिश की। अभिजीत ने शीघ्रता से स्वयं को संभाला और उड़ते हुये दुराक्ष के वार को बचाकर उसे लेकर महल की छत से जा टकराया। दोनों के मध्य हवा में ही एक भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया था।

दो महाशक्तिशाली शक्तियां आपस में टकरा रहीं थी और उनके इस भीषण टकराव से महल की दीवारों में कम्पन्न प्रारम्भ हो गये थे। दोनों हवा में ही एक दूसरे पर मुष्टि प्रहार करते हुए द्वन्द युद्ध करने लगे। एक दूसरे के अत्यंत शक्तिशाली वारों से उन दोनो के ही

शरीर एक दुसरे पर भारी पड़ते हुये कक्ष की दीवारों को क्षति पहुंचाते हुए यहाँ से वहाँ घूमने लगे। दोनों एक दूसरे पर लगातार भीषण प्रहार करते जा रहे थे। दोनों में से कोई भी किसी से कम या ज्यादा दिखाई नहीं पड़ रहा था।

अभिजीत के वारों का प्रभाव दुराक्ष पर प्रत्यक्षतः दिख रहा था, परन्तु दुराक्ष भी एक असुर था और अभिजीत भले ही इस समय उससे अधिक शक्तिशाली हो, पर युद्धनीति और कुटिलता में दुराक्ष अभिजीत से ज्यादा ही अनुभवी और दक्ष था। दुराक्ष इतना तो जान ही गया था कि अभिजीत को सीधे युद्ध में मार पाना अब, सप्तशक्ति दंड के कारण और भी अधिक कठिन और लगभग असंभव ही था।

दुराक्ष और अभिजीत दोनों ही एक दूसरे पर तंत्रवार के साथ साथ मुष्ठिप्रहार भी कर रहे थे। अभिजीत का एक शक्तिशाली तंत्रवार जैसे ही दुराक्ष के तंत्रवार को काटता हुआ उसके वक्ष पर लगा, दुराक्ष पंक्षी के कटे पंख सा नीचे जा गिरने लगा। हालांकि दुराक्ष के तंत्रवार को काटने में अभिजीत के तंत्रवार की ऊर्जा पहले ही क्षीण हो चुकी थी, अतः दुराक्ष के लिये वह अतिघातक तो नहीं रह गया था, परंतु दुराक्ष ने उसे अपने वक्ष पर खाकर नीचे गिरने का अभिनय किया, जिसमें अभिजीत आसानी से फँस गया। अभिजीत ने जैसे ही दुराक्ष को नीचे गिरते देखा, वो असावधान होकर उसकी ओर आगे को बढ़ा। उसके निकट आते ही दुराक्ष ने अपनी आंखें खोली और उसके चेहरे पर एक और कुटिल मुस्कान उभर आयी। अभिजीत उसे इस रूप में देखकर चौंक पड़ा, पर इसके पहले कि अभिजीत संभल पाता दुराक्ष ने उसके निकट आते ही अपनी खड्ग अभिजीत से सटा दी, जिससे अभिजीत को तंत्रवार का एक तेज झटका लगा और वह इसमें कैद हो गया।

दुराक्ष के इस तंत्रवार में कैद होते ही अभिजीत शक्तिहीन सा हो गया और अपनी चेतना खोने लगा, क्योंकि दुराक्ष अपने तंत्रवारों की तीव्रता को और भी अधिक बढ़ाता जा रहा था। चेतना विहीन होते हुए अभिजीत का बेढाल शरीर तेज़ी से नीचे की ओर गिरने लगा और इसके साथ ही उसके हाथ से सप्तशक्ति दंड भी अदृश्य होकर फिर से वापस उसके शरीर में समा गया।

नीचे नैमिष असुर टुकड़ी का बड़ी ही बहादुरी से अपने घातक तंत्रवारों के द्वारा सामना कर रहा था। कोई भी असुर उसके तंत्रवारों से बचकर उस तक नहीं पहुँच पा रहा था। उधर दूसरी ओर इलाक्षी भी अशमक का वीरता से सामना कर रही थी। इलाक्षी ने जैसे ही अभिजीत को दुराक्ष के तंत्रवार से होश खोते हुये नीचे को गिरते देखा, तो पलभर को उसका ध्यान अशमक के वारों से हट गया, जिसके कारण अशमक को इलाक्षी पर एक भीषण तंत्रवार करने का अवसर मिल गया और इस अवसर को वह नहीं चूका। अशमक ने जैसे ही इलाक्षी पर वह तंत्रवार किया असावधान इलाक्षी उस तंत्रवार को खाकर उछलकर बहुत दूर जा गिरी।

इलाक्षी की चीख सुनकर नैमिष का ध्यान इलाक्षी की ओर गया, वो उसकी सहायता के लिये आगे बढ़ा पर इलाक्षी ने तुरंत ही उसे रोककर उससे अभिजीत को बचाने को कहा। नैमिष ने तुरंत ही नीचे गिरते हुये अभिजीत को अपने तंत्र रक्षाकवच में सुरक्षित कर भूमि पर गिरने से बचा लिया और दुराक्ष के उसके उस पर किये गये तंत्रवार कैद को अपने तंत्रवार से काट दिया और साथ ही साथ इलाक्षी को संभलने का कुछ समय देने के लिये अपनी ओर से असावधान अशमक पर भी जड़ तंत्ररोधी वार किया, जिससे अशमक भी कुछ क्षणों के लिये तंत्रवारों को सहन करने में अक्षम हो गया। हालांकि अशमक की यह स्थिति मात्र कुछ ही क्षणों तक के लिये थी, परंतु इतना समय ही बहुत था, इलाक्षी को संभलने के लिये।

दुराक्ष यह देखकर आग बबूला हो गया और उसने पलटकर नैमिष पर एक अतिशक्तिशाली तंत्रवार किया, पर नैमिष इससे अंजान नहीं था और उसने दुराक्ष के तंत्रवार को अपने तंत्र रक्षा कवच की सहायता से रोक लिया और साथ ही साथ पलटकर तुरंत ही दुराक्ष पर पलटवार में एक और तंत्रवार भी कर दिया। इलाक्षी भी अब तक वस्तुस्थिति को समझ चुकी थी और उसने भी शक्तिह्रास तंत्रवार कर दिया। नैमिष के वार से दुराक्ष अभी संभला ही था कि इलाक्षी के शक्तिह्रास तंत्रवार से उसके हाथ से शक्ति खड़ग छूटकर हवा में ऊपर उछाल गया।

दुराक्ष के हाथ से शक्ति खड़ग के छूटते ही अभिजीत की चेतना वापस आने लगी, पर इतनी देर में नैमिष की ओर बढ़ती हुई असुर टुकड़ी उसके निकट आ गयी थी और दूसरी ओर अशमक भी जड़ तंत्ररोधी वार के असर के समाप्त होने से फिर से आक्रामक स्थिति में आ गया था, पर इस बार इलाक्षी उसका सामना करने के लिये पूरी तरह से तैयार थी और इस बार वह इतनी आसानी से उसके तंत्रवारों का शिकार बनने वाली नहीं थी।

नैमिष ने असुर टुकड़ी पर पुनः तन्त्र वारों की वर्षा कर दी, परन्तु कुछ असुर बचते बचाते उस तक पहुँच ही गये। इतनी पास से उन असुरों पर तंत्र वार करना संभव नहीं था। तभी दुराक्ष के हाथ से छूटकर शक्ति खड़ग ठीक उसके समक्ष आकर गिरा। युद्धस्थिति को समझने में नैमिष को क्षणभर भी देर नहीं लगा और पलक झपकते ही उसने अपने सामने पड़े शक्ति खड़ग को अपने शक्तिशाली हाथों में उठा लिया।

नैमिष के शक्ति खड़ग उठाते ही एक असुर सैनिक ठीक उसके सामने आ गया। जैसे ही उसने नैमिष पर अपनी खड़ग से एक प्राणघातक वार करने की चेष्टा की, नैमिष ने शक्ति खड़ग को उठाते ही उससे उस असुर सैनिक के वार को शक्ति खड़ग पर रोका और फुर्ती से शक्तिखड़ग को घुमाते हुये उस असुर सैनिक के सिर को उसके धड़ से अलग कर दिया। सामने से आते एक और असुर सैनिक पर उसने शक्ति खड़ग का तंत्र प्रहार करने के साथ साथ पीछे से आते हुये अन्य असुर सैनिकों पर तंत्रवार करना भी

प्रारम्भ कर दिया और बाकी बचे असुरों पर टूट पड़ा।

इतनी देर में अभिजीत भी संभल चुका था और दुराक्ष के हाथ से शक्ति खड़ग के गिरते ही अभिजीत पर से उसके किये तंत्रवारों का सम्पूर्ण प्रभाव खत्म ही गया था। इस बार अभिजीत दुराक्ष की आसुरी और तंत्रशक्तियों के साथ- साथ असुरों की छल और कुटिलता से भी परिचित हो चुका था और इस बार जबकि दुराक्ष के हाथ से शक्ति खड़ग निकल चुका था, वह दुराक्ष को कोई भी अवसर देना नहीं चाहता था।

दुराक्ष भी इस बात से अनभिज्ञ नहीं था, पर अभिजीत को शायद इस बात का अन्दाजा नहीं था कि शक्ति खड़ग से रहित होने पर भी दुराक्ष पर काबू पाना आसान नहीं है। अभिजीत ध्रुवत्र का आह्वान करते हुए हवा में उड़ा और दुराक्ष की ओर बढ़ते हुये उसने उसपर एक और भीषण तंत्रवार किया। पर दुराक्ष इस बार भी सावधान था और उसने ना सिर्फ अपनी ओर बढ़ते हुये अभिजीत के उस तंत्रवार को रोका, बल्कि अभिजीत पर भी विपरीत तंत्रवार कर दिया। पर बेखबर तो अभिजीत भी नहीं था और इस बार वह दुराक्ष के हर एक तंत्रवार का ना सिर्फ सामना कर रहा था, साथ ही साथ शक्ति खड़ग के ना होने से अशक्त हुये दुराक्ष पर हावी भी होता जा रहा था।

दुराक्ष भी अभिजीत के वारों का सामना करते हुये थोड़ा घायल अवश्य हुआ था, पर वो भी यह बात जल्दी हो समझ गया था कि बिना शक्ति खड़ग को पुन: प्राप्त किये वह अभिजीत को परास्त कर पाने की सोच भी नहीं सकता है। उसके लिये शक्ति खड़ग को फिर से प्राप्त करना अब उतना ही आवश्यक और अनिवार्य हो गया था, जितना कि अपने प्राणों की रक्षा करना। अभिजीत से लड़ते हुये भी दुराक्ष ने एक क्षण को भी नैमिष और इलाक्षी पर से अपनी निगाह नहीं हटायी थी।

जहाँ एक ओर अभिजीत दुराक्ष के समक्ष था, तो वहीं दूसरी ओर इलाक्षी अशमक से जूझ रही थी और नैमिष अकेले ही बची हुई असुर टुकड़ी के सैनिकों से अकेला ही लोहा ले रहा था। हालांकि उन असुर सैनिकों के पास नैमिष की तंत्रशक्ति और उसके घातक तंत्रवारों का कोई जबाब नहीं था, पर शायद इस कारण से नैमिष का पूरा ध्यान असुर सैनिकों को ही रोकने में था जिसका पूरा फायदा दुराक्ष ने उठाया।

नैमिष भी एक कुशल तंत्रशक्ति धारक और वीर योद्धा था और हर तरह की युद्धकला में दक्ष नैमिष ने शीघ्र ही शक्ति खड्ग और अपने शक्तिशाली तंत्रवारों से लगभग उस पूरी असुर टुकड़ी का अंत ही कर दिया।

अभिजीत के तंत्रवारों से बचते हुये, जब दुराक्ष ने नैमिष को अंतिम असुर सैनिक का अन्त करते हुये देखा तो उसने अचानक ही पीछे से नैमिष पर एक अतिशक्तिशाली तंत्रवार कर दिया जिसके परिणामस्वरूप नैमिष ना सिर्फ दूर जा गिरा बल्कि उसके हाथों से शक्ति खड़ग भी एक बार पुनः हवा में उछल गया जिसे लपकने में दुराक्ष बिल्कुल भी नहीं चूका।

शक्ति खड़ग हाथ में आते ही दुराक्ष ने अभिजीत पर और भी अधिक घातक तंत्रवार करने प्रारम्भ कर दिये, पर अभिजीत अभी भी उसके प्रत्येक तंत्रवार का जवाब अपने अतिशक्तिशाली तंत्रवारों से देता रहा। उनके इस भीषण टकराव से अब तक जहाँ सारी दीवारें तक कांप रहीं थीं, अब लग रहा था कि महल की हर एक ईंट तक अपने चरम विनाश की सीमा पर आ चुकी है।

अचानक तंत्रवार करते करते दुराक्ष अदृश्य होकर अभिजीत के पीछे प्रकट हुआ और उसने तुरंत ही अभिजीत पर पीछे से ही एक और तंत्रवार कर दिया। अभिजीत जब तक संभल पाता तब तक देर हो चुकी थी। दुराक्ष का तंत्रवार अभिजीत को लग चुका था, पर ये बात अभिजीत भी जानता था कि सप्तशक्ति दंड की शक्ति के कारण ही दुराक्ष के अतिशक्तिशाली तंत्रवार भी उसे अधिक क्षति नहीं पहुँचा सकते। दुराक्ष के उस भीषण तंत्रवार ने अभिजीत को ज्यादा नुकसान तो नहीं पहुँचाया, पर उसे दुराक्ष के छिपे हुये वारों से सावधान अवश्य ही कर दिया।

इस बार जब दुराक्ष अदृश्य हुआ तो अभिजीत उसकी इस चाल के लिये भी तैयार था। सप्तशक्ति दंड की शक्ति के कारण वह स्वयं भी अदृश्य अदृश्य होकर दुराक्ष के तंत्रवार से बच गया और अपने इस अदृश्य रूप में अभिजीत ना सिर्फ दुराक्ष को देख सकता था, बल्कि उसके प्रत्येक वार का जवाब भी दे सकता था। अभिजीत को भी अदृश्य रूप में तंत्रवार करते हुये देखकर दुराक्ष पलभर को अचंभित रह गया। अभिजीत ने हवा में ही आगे बढ़कर इस बार दुराक्ष पर अतिघातक तंत्रवार करने का प्रयास किया पर, दुराक्ष इस स्थिति के लिये भी अभ्यस्त था और उसके द्वारा प्रतिघात में किये गये अतिशक्तिशाली तंत्रवार के एक दूसरे से इतने निकट से टकराव का अर्थ भी अति भयंकर ही होना था। दोनों के ही इतने भीषण तंत्रवारों के टकराव के कारण दोनों ही एक दूसरे से अलग होकर सिंहासन पीठिका के समीप भूमि पर जा गिरे।

इधर इलाक्षी अशमक से युद्ध कर रही थी। अशमक भी अत्यंत शक्तिशाली था, परन्तु इलाक्षी तंत्र शक्ति में उससे कम भी नहीं थी। अशमक ने इलाक्षी को तंत्र किरणों में बांधने की कोशिश की पर इलाक्षी ने उसे विफल कर दिया और अशमक को तंत्र गोले में बंद करने की कोशिश की। अशमक ने फिर से धुएं का जाल फैला कर अपना बचाव किया और इलाक्षी को झांसा दे दिया। इलाक्षी धुएं में फंस गयी थी। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पर तभी अशमक पर एक तीव्र तंत्रवार हुआ और वह पीछे जा गिरा। इसके साथ ही धीरे -धीरे उसके फैलाये धुएं का असर भी ख़त्म हो गया।

इलाक्षी ने देखा कि नैमिष अब तक दुराक्ष के तंत्रवार से संभलकर उसकी सहायता के लिए आ चुका था। अशमक पर वह तंत्रवार भी नैमिष ने ही किया था। नैमिष के वापस आने से अब उनकी शक्ति बढ़ गयी थी और दोनों ने एक साथ अशमक पर वार करने

प्रारम्भ कर दिए। उनके वारों का सामना करने में अशमक को अब कठिनाई होने लगी थी। धीरे -धीरे अशमक कमजोर पड़ने लगा। उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी, परन्तु अब यह पर्याप्त नहीं था। नैमिष और इलाक्षी के संयुक्त मिश्रित तंत्रवारों ने आखिरकार उसे परास्त कर ही दिया और एक भीषण मारक प्रहार से अशमक मृत्यु को प्राप्त हो गया।

दुराक्ष जो कि अभी भी अभिजीत से उलझा हुआ था, अशमक की मृत्यु देखकर एकदम से क्रोधित हो उठा। अब क्रोध में बौखलाकर उसने अपने वारों की तीव्रता अति भयंकर रूप से बढ़ा दी। उसने अपना खड्ग दोनों हाथों से पकड़ा और भीषण तंत्रवार किया। खड्ग से बिजली की शक्ल में रक्तवर्णी तन्त्र किरणें निकली और अभिजीत की ओर लपकी। अभिजीत ने तुरन्त दंड को हाथों से घुमाकर अपने सामने कर दिया और उससे निकली नीलवर्णी बिजली की किरणें दुराक्ष के वार को रोकने लगी। उन दोनों किरणों के टकराने से चारों ओर बिजली की किरणें वातावरण में फैलने लगी और महल को तहस नहस करने लगी।

“अभिजीत संभलो!” नैमिष ने चिल्लाकर कहा। वो और इलाक्षी उसकी सहायता के लिये आगे बढ़े।

“रुक जाओ! मैं इससे अकेले युद्ध करूँगा।” अभिजीत ने उन्हें वहीं से संकेत द्वारा रोक दिया।

अभिजीत ने दंड को दोनों हाथों से पकड़ा और दंड को भूमि पर टिका दिया। दुराक्ष का वह रक्तवर्णी तड़ित वार भूमि द्वारा सोख लिया गया। दुराक्ष ये देख कर बौखला गया। वह सिंहासन पीठिका से नीचे उतरकर कक्ष के मध्य भाग में आ गया और एक बार फिर अपने खड्ग से अत्यधिक भीषण तंत्र शक्ति का प्रहार अभिजीत पर किया। अभिजीत ने सप्तशक्ति दंड ध्रुवज्र को दोनों हाथों से तेजी से पंखे की तरह गोलगोल घूमना शुरू कर दिया, जिसने तंत्रढाल का रूप ले लिया। दुराक्ष का वार भयंकर रूप से उस तंत्रढाल से टकराया। वार बहुत शक्तिशाली था, अभिजीत एक झटके से कुछ कदम पीछे खिसक गया।

“अभी भी समय है लड़के। अपनी पराजय स्वीकार करले वरना इस दंड के साथ-साथ तुझे भी राख बना दूंगा।” दुराक्ष गुर्राया।

अभिजीत ने अपनी पूरी शक्ति लगायी और अपने कदम बढ़ाकर अपने दंड घुमाते हुए हाथों को एक तेज झटका दिया। दुराक्ष का वार ढाल से पलटकर तेजी से उसकी ओर आया, पर उसने शीघ्रता से वार करना रोककर अपने खड्ग से उस वार को काट दिया। दुराक्ष को इससे एक तेज विपरीत झटका लगा। इस क्षण तक दोनों का क्रोध अपनी चरम सीमा पार कर गया था। दोनों ने एक दूसरे की तरफ दौड़ लगा दी। दोनों साथ में उछले और हवा में ही अपने -अपने शस्त्रों से एक दूसरे पर वार किया। सप्तशक्ति दंड और

खड्ग आपस में टकराये और ऊर्जा की एक भीषण लहर पूरे कक्ष में फ़ैल गयी। नैमिष और इलाक्षी ने ऊर्जा लहर के झटके से बचने के लिए तंत्रकवच की सहायता ली और एक दूसरे को थाम लिया।

ऊर्जा की लहर के सबसे पास होने के कारण सबसे अधिक प्रभाव अभिजीत और दुराक्ष पर हुआ। दोनों टकराव की विपरीत दिशा में पीछे की ओर भीषण रुप से जा गिरे। अभिजीत घायल होकर पीछे की ओर एक खम्बे को तोड़ता हुआ नैमिष और इलाक्षी के पास जा गिरा। उसकी इस अवस्था को देखकर इलाक्षी और नैमिष दोनों ही उसकी ओर लपके। दोनों ने उसे संभाला और उठाया। अभिजीत ने सिर उठाया और अपने मुंह से छलक आये रक्त को अपने बाएं हाथ से पोंछा,अपने दंड को संभाला और एक बार फिर दुराक्ष से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ गया।

दुराक्ष भी भीषण रुप से सिंहासन के आगे बनी सीढ़ियों पर जा गिरा। खड्ग उसके हाथों से छूट कर गिर गया। वह लड़खड़ाते हुए उठा और धीरे -धीरे उठकर पुन: अपनी खड्ग तक पहुँचा। उसके मुख पर वीभत्सता उतर आई थी। धीरे- धीरे वह सीढ़ियों से उतरकर नीचे आया। उसने अब अपनी मायावी आसुरी शक्तियों का प्रयोग आरम्भ कर दिया। अपनी शक्ति खड्ग को उसने अपने दोनों हाथों में थामकर अपने आगे किया और चेहरे के सामने लाकर शक्ति मंत्र पढ़ने लगा। उसकी शक्ति खड्ग धीरे -धीरे चमकने लगी और उसकी सहायता से उसने स्वयं के मायावी प्रतिरूप प्रकट किये। अपने अनेक मायावी शक्ति प्रतिरुपों से उसने अभिजीत को चारों ओर से घेर लिया और तंत्र वार करने लगा, परन्तु सप्तशक्ति दंड के रहते अब मायावी शक्तियाँ अभिजीत को भ्रमित और कमजोर तो अवश्य कर सकती थीं, पर उसके लिये प्राणघातक नहीं हो सकती थीं। अभिजीत इस प्रकार के मायावी तंत्रवारों के लिये पहले से ही सजग था। उसने आँखें बंद करके दंड को आगे की ओर किया और सप्तशक्तियों का स्मरण किया। ऐसा करते ही सप्तशक्ति दंड से एक अति विस्मयकारी चमक उभरी और उससे निकली रोशनी के प्रभाव से दुराक्ष के सारे प्रतिरूप नष्ट हो गये।

शक्ति प्रतिरुपों के नष्ट होने से एक विपरीत तंत्रवार वापस पलटकर दुराक्ष को ही आकर लगा। अब वार करने की बारी अभिजीत की थी। अभिजीत ने स्वयं को अदृश्य किया और दुराक्ष पर घूम -घूम कर चारों ओर से वार करना प्रारम्भ कर दिया। अभिजीत के इस वार से दुराक्ष अब हर ओर से घायल होने लगा, परन्तु उसने भी शक्ति खड्ग की सहायता से अभिजीत के अदृश्य रूप को ढूंढ निकाला और उसने अभिजीत पर एक भीषण तंत्रवार किया। अभिजीत को अदृश्य रुप में होने के कारण दुराक्ष द्वारा वार किये जाने की बिल्कुल भी आशा नहीं थी और इसका परिणाम उसे तुरंत भुगतना पड़ा और अभिजीत वह तंत्रवार खाकर दूर जा गिरा। उसे शरीर पर जगह -जगह पर कई चोटें

आईं। अभिजीत को और अधिक घायलवस्था में देखकर नैमिष और इलाक्षी भी उसकी सहायता के लिये अब युद्ध में कूद पड़े और उन दोनों ने दुराक्ष पर सम्मिलित वार करने प्रारम्भ कर दिए ,ताकि इन कुछ क्षणों में अभिजीत खुद को सम्भाल सके। इलाक्षी और नैमिष के इन सम्मिलित तंत्रवारों से दुराक्ष एक क्षण के लिए असंतुलित जरुर हुआ, पर तत्काल ही उसने स्वयं को संतुलित करके खड्ग का एक भीषण प्रहार उन दोनों पर किया। दुराक्ष द्वारा किये गये इस तंत्रवार से वे दोनों भी वार खाकर अभिजीत के पास ही जा गिरे।

“अभी भी समय है लड़के! लगता है तुम मेरी पहली चेतावनी को भूल गये हो। परन्तु फिर भी मैं तुम्हें अपना जीवन बचाने का एक और अवसर देता हूँ। यहाँ से जीवित लौटना चाहते हो, तो चले जाओ। ये तुम्हारा अंतिम अवसर है।” दुराक्ष ने ठहाका लगाते हुये कहा।

“मैं यहाँ वापस जाने के लिए नहीं आया हूँ दुराक्ष। तुम्हारा अंत करने आया हूँ। मैं आया हूँ, अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने। मेरी माँ को मुझसे वर्षों तक दूर रखने का प्रतिशोध लेने। मैं आया हूँ तेरा काल बनकर और अब तेरे सभी पापों का अन्त भी मेरे ही हाथों से पूरा होगा और उसके साथ ही पूरा होगा मेरा प्रतिशोध भी। अब सामना कर अपनी मृत्यु का...” अभिजीत ने धीरे-धीरे खड़े होते हुये कहा।

अभिजीत की आँखों से प्रतिशोध की अग्नि बरस रही थी। नैमिष और इलाक्षी पर वार होते देखकर तो उसका क्रोध अपनी चरमसीमा भी पार कर गया था। वह तेजी से आगे आया और उसने सप्तशक्ति दंड से एक अत्यंत शक्तिशाली त्रिकाट शक्तिवार दुराक्ष पर किया। दुराक्ष पहले भी यह वार झेल चूका था और इसकी शक्ति से परिचित था। उसने भी अपना खड्ग उठाया और उस वार को रोकने के लिये कालशक्ति तंत्र का भीषण वार किया। दोनों के वार टकराये और महल की दीवारें दहल उठीं। उनके वार के टकराने से निकली ऊर्जा पुन:महल को ध्वस्त करने लगी और इन भीषण तंत्र शक्तियों के टकराव से महल की छत के गुम्बद का एक हिस्सा विस्फोट के साथ उड़ गया और आकाश से सूर्य की किरणें अब सीधे महल के अंदर तक आने लगीं। महल के अंदर छाया हुआ, वो अंधेरा अब सूर्य की उन अनेक किरणों के चमक में गुम होने लगा। अभिजीत और दुराक्ष के भीषण तंत्रवारों के विपरीत प्रभाव और उसके कारण महल के गिरते हुये अवशेषों से नैमिष और इलाक्षी स्वयं को तंत्र ढाल बनाकर सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे थे।

अभिजीत और दुराक्ष दोनों ही अपनी सम्पूर्ण तंत्र-शक्ति लगा रहे थे और एक दूसरे को परास्त करने का प्रयास कर रहे थे। अभिजीत के वार अब और भी अधिक शक्तिशाली प्रतीत हो रहे थे, परंतु दुराक्ष भी पूरे पराक्रम के साथ उसके प्रत्येक वार का जवाब

देने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा रहा था, पर अब दुराक्ष के लिये अभिजीत के इन अतिशक्तिशाली तंत्रवारों को रोकना और उनका जवाब देना असम्भव सा होता जा रहा था। अभिजीत के भीषण क्रोध, अपने पिता का प्रतिशोध लेने की प्रचंड इच्छा-शक्ति और सप्तशक्ति दंड की असीम शक्तियों के कारण त्रिकाट विद्या के वार का प्रभाव अप्रत्याशित रुप से अत्यधिक भीषण हो गया था। अभिजीत का प्रत्येक वार धीरे -धीरे दुराक्ष के वार को काटता हुआ, तीव्र गति आगे बढ़ता जा रहा था और दुराक्ष के हाथों में अब कम्पन सा होने लगा। वह इस भीषण ऊर्जा की लहर को सँभालने में अक्षम होता जा रहा था। खड्ग को थामे उसके हाथ अब कम्पित होने लगे, और सप्तशक्ति दंड की त्रिकाट शक्ति के भीषण वार से टन्न की एक तेज आवाज के साथ दुराक्ष की शक्ति खड्ग को चूर-चूर करते हुये, एक धमाके के साथ उसके सीने पर जा लगा। दुराक्ष उस भीषण प्रहार को नहीं झेल पाया और मरणासन्न अवस्था में पीछे जा गिरा। कुछ क्षणों तक पूरे महल में सन्नाटा सा छा गया और तब अभिजीत धीरे -धीरे दुराक्ष की ओर आगे बढ़ा और उससे कुछ दूरी पर जाकर उसके सामने खड़ा हो गया।

“क..क..कौन हो त..त..तुम?” दुराक्ष ने बड़ी कठिनाई से बोलते हुये कहा। वह अभी भी उठने का भरपूर प्रयास कर रहा था। अभिजीत चुपचाप उसे फिर से उठने की कोशिश करते देखकर भी खड़ा रहा। थोड़े समय के बाद,परंतु अपने घायल शरीर से ही कष्टतम प्रयास के साथ दुराक्ष फिर से उठकर खड़े होने में सफल हो ही गया, परन्तु अब उसमें इतनी शक्ति नहीं बची थी कि वो और आगे युद्ध कर सके। वह थक कर चुर-चुर हो चुका था। दुराक्ष ने अभिजीत को अपने समक्ष खड़े हुये देखकर पुन: उसनें उच्च्व पर कांपते हुए स्वर में दहाड़ते हुये पूछा, “क..क...कौऽऽन हो तुम?“

“मैं विशल्या और विरोचन का पुत्र अभिजीत हूँ। मैं तुम्हारी मृत्यु बनकर आया हूँ। यह तुम्हारा अन्त समय है, दुराक्ष। अपने पुराने सभी पापों को याद करो, क्योंकि अब मैं तुम्हें तुम्हारे इस पापी जीवन से मुक्ति देने वाला हूँ। देखो, अपनी मृत्यु को और वरण करो उसका...” अभिजीत ने जलती हुई आँखों के साथ कहा और सप्तशक्ति दंड के सप्तशक्ति चक्र का ध्यान करके दुराक्ष पर एक और भीषण प्रहार कर दिया। सप्तशक्ति चक्र के टकराते ही दुराक्ष का सिर धड़ से अलग होकर, हवा में ही उछलकर सिंहासन पर जा गिरा। दुराक्ष का शरीर लहराकर भूमि पर आ गिरा और धीरे -धीरे उसके शरीर के साथ -साथ ही उसका कटा हुआ सिर भी स्वतः ही राख के रूप में परिवर्तित होकर अदृश्य हो गया।

इलाक्षी और नैमिष भी अब तक अभिजीत के निकट आ गये थे। अभिजीत ने पलट कर नैमिष और इलाक्षी को देखा। उन दोनों को देखते ही उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। परन्तु ये अश्रु युद्ध जीतने की खुशी के ही नहीं बल्कि आत्मसंतोष के भ थे। आज

उसने अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध ले लिया था। उसने अपनी माता के इतने वर्षों के दुःख और क्षोभ का प्रतिशोध अन्ततः ले ही लिया था। नैमिष आगे आया और उसने अभिजीत को कसकर अपने आलिंगन में भर लिया।

“तुमने कर दिखाया अभिजीत! तुमने कर दिखाया।” नैमिष ने मुस्कराकर अत्यन्त भावुक स्वर में कहा। आज उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। वे दोनों ही मित्रवत भाव से एक दूसरे को देखकर यूँ ही फिर से हँस दिये। नैमिष के आलिंगन से निकलते ही अभिजीत ने निकट ही खड़ी इलाक्षी की ओर देखा जो मुस्कराती हुई प्रसन्नता भरे आँसुओं से उन दोनों को ही देख रही थी। वह अभिजीत और नैमिष की मित्रता और खुशी के उन क्षणों को देखकर उनमें बाधा बनना नहीं चाहती थी।

अभिजीत के निकट आते ही इलाक्षी ने कहा, “तुम सच में प्रतिहारी बनने के योग्य हो, अभिजीत। मैं गलत थी। हो सके, तो मुझे क्षमा कर देना।” अभिजीत ने जब उसकी आंखों में देखा तो इस क्षण उसने उसकी आँखों में अपने लिये एक अलग ही सम्मान का भाव देखा।

“क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है, इलाक्षी। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था। अपितु मुझे तो तुम दोनों का धन्यवाद करना चाहिए। मैं यह तुम दोनों की सहायता के बिना नहीं कर पाता।” अभिजीत ने कहा और नैमिष और इलाक्षी की ओर देखा और वे तीनों ही मुस्करा दिये। अचानक एक तीव्र आवाज के साथ महल धराशायी होने लगा और टूट-टूट कर बिखरने लग।

“अब हमें चलना चाहिए। महल ध्वस्त होने वाला है और अब हमें अपने काल में वापस भी लौटना है।” नैमिष ने कहा। वे तीनों इकट्ठे हुए और एक बार फिर से हवा में एक ऊर्जा घेरा प्रकट होने लगा और वे तीनों ही उस ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गये।

नया प्रारम्भ

वर्तमान में -

सरानी अपने कक्ष में विशल्या के साथ कुछ कार्यों में सहायता हेतु सुझाव ले रही थी। अभिजीत और नैमिष के भूतकाल में जाने के बाद से ही वे दोनों अपना अधिकतर समय शक्ति-केंद्रों को संगठित करने हेतु योजना बनाने में व्यतीत करती थीं।

"दीदी! मैं क्या सोच रही थी कि हमें सभी शक्ति -केंद्रों के संरक्षकों की एक महासभा आयोजित करनी चाहिए, जिससे कि हम आने वाले संकटों और असुरों की आंतकवादी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिये कुछ योजना बना सकें। वहां सभी संरक्षक इस कार्य हेतु अपने अपने सुझाव देंगे। फिर हम आगे की कार्य योजना बनाएंगे और आपस में मिलकर कार्य करेंगे।" सरानी ने कहा।

"अति उत्तम विचार है विशाला! जब मैं संरक्षक थी, तब मैंने भी ऐसा ही कुछ सोचा था कि हम सभी प्रतिहारी एक साथ मिलकर कार्य करेंगे और सारी पृथ्वी पर एक सुरक्षा कवच बनाएंगे।" विशल्या ने सरानी को नाम से संबोधित करते हुये कहा।

"तो फिर आपको ही इस महासभा का आयोजन और संचालन करना चाहिए दीदी। मुझे बहुत प्रसन्नता होगी कि हम सभी साथ होंगे।" सरानी ने कहा।

"नहीं विशाला! मैं यहाँ अब नहीं रुकूँगी। अभिजीत के लौट आने पर हम दोनों यहाँ से प्रस्थान करेंगे और कहीं किसी गुप्त स्थान पर अपना आवास बनायेंगे। तुम्हें जब भी आवश्यकता होगी, हम तुम्हारी सहायता हेतु उपस्थित रहेंगे।" विशल्या ने मुस्कराकर सरानी से कहा। सरानी अवाक् रह गयी।

"परन्तु मैंने तो यही स्वप्न देखा था कि अब हम सब साथ रहेंगे। सब कुछ ठीक हो चुका है दीदी। आपको जाने की आवश्यकता नहीं है।" सरानी ने दु:खी स्वर में कहा।

"विशाला तुम जानती हो न कि मुझे जाति से निष्कासित कर दिया गया था। भले ही यहाँ के लोगों ने मुझे स्वीकार कर लिया हो, परंतु तुम नियम जानती हो। मेरा पुत्र भी नियमों के अंतर्गत ही आता है। हम यहाँ नहीं रह सकते। ये नियमों के विरुद्ध है और मैं जानती हूँ अभिजीत का निर्णय भी यही होगा।" विशल्या ने सरानी को समझाने का प्रयास

किया।

“परन्तु नियम परिवर्तित भी तो...” कहते- कहते अचानक सरानी रुक गयी और उठकर खड़ी हो गयी।

“क्या हुआ विशाला?” विशल्या ने पूछा।

“मुझे शक्ति-केंद्र के द्वारा उन लोगों के संकेत प्राप्त हो रहे हैं। वो शक्ति- केंद्र के एक मील की परिधि में आ चुके है। हमें शीघ्रता करनी चाहिए।” सरानी ने बताया।

“चलो उन्हें वापस लाते हैं।” विशल्या ने प्रसन्नता से कहा और चलने के लिये उठ खड़ी हुई। दोनों शक्ति -केंद्र जाने के लिये ऊर्जा के घेरे में अदृश्य हो गये।

भूतकाल में -

सँध्या हो चुकी थी। सूर्य अस्त होने वाला था और अँधेरे की चादर फैलने लगी थी। अभिजीत, नैमिष और इलाक्षी शक्ति केंद्र से कुछ मील दूर वन में प्रकट हुये। उन्होंने आसपास देखा। वहां कोई नहीं था। अँधेरा होने ही वाला था और यह समय उनके आगे बढ़ने के लिये अनुकूल था। वे धीरे -धीरे सावधानी से स्वयं को छुपाते हुये आगे बढ़ने लगे। शक्ति -केन्द्र की एक मील की परिधि में पहुँचते ही वे शक्ति -केंद्र के पीछे फैले हुये घने वन में एक बड़े से वृक्ष के पीछे छुप गये।

“अब क्या?” अभिजीत ने नैमिष से पूछा।

“अब हमें संकेत मिलने की प्रतीक्षा करनी है। संकेत मिलते ही एक द्वार यहाँ प्रकट होगा और हमें बस उसमें प्रवेश करना है।” नैमिष ने समझाते हुये कहा। वे प्रतीक्षा करने लगे।

“मिल गया संकेत!” नैमिष ने प्रसन्नता के साथ कहा।

उनके हाथ में बंधे कालसूत्र में जड़ा हुआ पत्थर सफ़ेद रोशनी में तेज चमकने लगा था। इसके साथ ही उनके सामने वायु में एक नीले-हरे बादलों से बना एक द्वार प्रकट हो गया। वे तेजी से उस द्वार के नीचे इकट्ठे हो गये। द्वार में से नारंगी रंग की रोशनी का एक झोंका आया और सभी उसमें सिमट कर अदृश्य हो गये और इसके साथ ही वह द्वार भी सिमट कर अदृश्य हो गया।

वर्तमान में -

सरानी और विशल्या दूसरे आयाम में स्थित सुतान्तु देव के प्राचीन मंदिर में थे। उन्होंने कालद्वार को सक्रिय कर दिया था। कालद्वार पूर्व की भाँति तेजी से घूम रहा था, परन्तु इस बार उसका घूर्णन विपरीत दिशा में हो रहा था। तेजी से घूमते द्वार से तीन आकृतियाँ प्रकट हुईं और द्वार का घूमना धीरे-धीरे थमने लगा।

द्वार का घूमना रुकते ही नैमिष और इलाक्षी सरानी की ओर आगे बढ़े। उनके पीछे अभिजीत धीरे -धीरे नीचे उतरा और विशल्या की और बढ़ा। उसकी आँखों से आँसू झर-झर करके बह रहे थे। विशल्या उसके आँसुओं का अर्थ समझ गयी और उसकी आँखें भी भीग गयीं। अभिजीत आगे बढ़ा और अपनी माँ के आँचल में छुप गया। दोनों एक दूसरे को गले से लगाये जोर -जोर से रोने लगे।

"माँ! अपने मुझे ये पहले क्यों नही बताया?" अभिजीत ने रोते हुये कहा।

"मुझे क्षमा कर दो पुत्र। मैं चाहती थी कि इस अभियान से लौटने के पश्चात् तुम्हें यह सत्य बताया जाये।" विशल्या ने कहा। सरानी, नैमिष और इलाक्षी भी उनके पास आ गये।

"परन्तु तुम्हें कैसे पता चला कि विशल्या तुम्हारी माता है? वहाँ क्या हुआ था?" सरानी ने पूछा।

"क्योंकि ये वहाँ उसी सत्य को जानने के लिये रुक गया था। तभी इन्हें वापस आने में इतना समय लग गया। मुझे इस बात का पूर्वानुमान हो गया था, तभी मैंने तुम्हें कहा था कि उन्हें आने में समय लगेगा।" विशल्या ने मुस्कराते हुये कहा।

फिर अभिजीत ने वहाँ घटी हुई सारी घटनाओं को क्रमवार बताया। उनका दुराक्ष से टकराव, एकचक्र से भेंट और दुराक्ष के अंत की सारी घटनाएं बताई।

"माँ! मैंने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया। मैंने आपका प्रतिशोध ले लिया।" अभिजीत ने कहा।

"मुझे तुम पर गर्व है मेरे पुत्र।" विशल्या ने आँखों में आँसू भरे हुये कहा।

"अब समझ आया कि दुराक्ष कहाँ लुप्त हो गया था और तुम इतने वर्षों तक कहाँ रहे

और तुम्हारी आयु क्यों नहीं बढ़ी।" सरानी ने कहा।

"माँ क्या आपने दुराक्ष को मारने के लिये उसे ढूंढा नहीं था? मेरी और पिताजी की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिये?" अभिजीत ने विशल्या से पूछा।

मैंने उसे ढूंढा था, परन्तु तब तक बहुत विलम्ब हो चुका था। मैं उसके छिपने का स्थान ढूंढते हुये, उसके महल तक जा पहुंची थी, परन्तु वहां कोई नहीं था। महल तहस- नहस हो गया था और दुराक्ष का भी कहीं अता -पता नहीं था। अब मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि वह दुष्कर कार्य तुमनें कर दिया था।" विशल्या ने प्रसन्नता और ममता से अभिजीत के गाल पर हाथ फिराते हुये कहा।

"चलो माँ! हमें अब चलना चाहिए। मुझे आपसे बहुत सारी बातें करनी है।" अभिजीत ने कहा और सभी लोग वहां से महल में वापस आ गये।

अगले दिन का सूर्य नया सवेरा लेकर आया। अभिजीत और विशल्या ने रात्रि में देर तक कई महत्वपूर्ण विषयों पर वार्तालाप किया और कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये। जैसा कि विशल्या ने कहा था, अभिजीत ने विशल्या के साथ जाने का निर्णय लिया था।

सरानी विशल्या और अभिजीत के इस निर्णय से संतुष्ट नहीं थी। वह चाहती थी कि नियमों में बदलाव किये जाएँ क्योंकि शक्ति-केंद्र ने भी उन्हें स्वीकार कर लिया था। परन्तु अभिजीत ने अपना निर्णय नहीं बदला। अभिजीत ने इसका कारण यह बताया कि वह अपनी माँ के साथ रहकर और बहुत कुछ सीखना चाहता था, परन्तु एक सत्य यह भी था कि इलाक्षी के उसे ठुकरा देने के पश्चात् वह प्रतिदिन उसकी उपेक्षा सहन नही कर सकता था। इसी कारण से वह महल में नहीं रहना चाहता था। साथ ही साथ उसे अपनी नई मिली शक्तियों को समझना और निखारना था।

सरानी के अत्यधिक निवेदन करने पर भी दोनों ने अपना निर्णय नहीं बदला। विशल्या ने उसे विश्वास दिलाया कि जब भी सरानी को उसकी आवश्यकता होगी, वे तुरन्त उनके समक्ष उपस्थित हो जायेंगे। विशल्या ने संरक्षकों की विराट सभा के आयोजन और संचालन के लिये सहमति प्रदान करके सरानी को पर्याप्त रुप से संतुष्ट कर दिया और सरानी ने विवश होकर विशल्या और अभिजीत के निर्णय को स्वीकार कर लिया। उसने निश्चय किया कि एक न एक दिन वह अवश्य उन दोनों को महल में रहने के लिये मना

लेगी। नैमिष ने भी अभिजीत को समझने का प्रयास किया, परन्तु वह नाकाम रहा।

इधर इलाक्षी संध्याकाल में अपने कक्ष में बनी खिड़की से महल से कुछ दूर बहती नदी के पार जा रहे पक्षियों को देखते हुए विचारमग्न थी। वह अभिजीत की मित्रता ठुकरा चुकी थी और अभिजीत के सप्तशक्ति दंड प्राप्त करने और दुराक्ष जैसे शक्तिशाली असुर को अकेले समाप्त करने के पश्चात् उसके मन में अभिजीत के प्रति सम्मान बढ़ गया था। किन्तु उसका ह्रदय उसका साथ नहीं दे रहा था। एक विचित्र से एहसास ने उसे घेर रखा था, जिसने उसकी सोचने -समझने की शक्ति को कुंद कर दिया था। वो अपने कमरे में इधर-उधर बैचेनी में टहलने लगी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ये सब क्यों हो रहा है। अभिजीत के जाने की बात सुनने के बाद से ही उसकी ये दशा थी। अंततः जब उससे रहा न गया, वो तेजी से अपने कक्ष से बाहर निकल गयी।

अभिजीत हमेशा की तरह रात को महल की छत पर खड़ा हुआ तारों को देख रहा था। अचानक उसे अपने पीछे आहट का एहसास हुआ। वह पीछे मुड़ा और इलाक्षी को सामने पाकर असमंजस में पड़ गया। इलाक्षी सीधे उसकी आँखों में देखते हुए, उसकी ओर बढ़ी।

अभिजीत कुछ बोल पाता इलाक्षी ने कहना शुरू कर दिया, "अभिजीत! तुम्हें पता है जब नैमिष तुम्हें पहली बार यहाँ लेकर आया था, मुझे किसी बाहरी व्यक्ति को यहाँ लाने पर नैमिष पर बहुत क्रोध आया था। परन्तु जब सरानी ने भी तुममें रुचि दिखाई तो मैं कुछ न कह पायी।

मैं सदैव यही जानने की कोशिश करती रही कि तुममें ऐसा क्या विशेष है, जिसकी वजह से ये सभी तुम्हें इतना महत्त्व दे रहे हैं। मैं सामान्य तौर पर किसी से प्रभावित नहीं होती, परन्तु तुम्हारी क्षमताएं सच में प्रशंसनीय थी और तुमने जिस प्रकार प्रतिहारी बनने की सभी योग्यताओं को पूर्ण किया, उसने मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित किया।

और मेरा भाग्य देखो, मुझे भूतकाल से वापस लाने के लिए भी तुम ही आये। तुम्हें प्रतिहारी के रूप में देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गयी और साथ ही प्रसन्न भी हुई कि तुम हममें से ही एक हो। उस समय मुझे तुम्हारी आँखों में वही प्रेम दिखाई दिया, जो मैं हमेशा से अपने लिए चाहती थी। मैं तब भी तुमसे कुछ कहना नहीं चाहती थी, क्योंकि मैंने सदैव चाहा था कि मुझे जिससे भी प्रेम हो, वो कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति हो और जिसके जीवन में मेरा विशेष स्थान हो और जो मुझसे अत्यंत प्रेम करता हो। परन्तु जब तुमनें सप्तशक्ति

दण्ड धारण किया और अपनी योग्यता प्रमाणित की, तब मैं जान गयी कि हाँ वो तुम ही हो और मुझे भी तुमसे प्रेम हो गया।"

अभिजीत की आँखों से आंसू बह निकले। उसने अप्रत्याशित रूप से आगे बढ़कर इलाक्षी को अपने आलिंगन में ले लिया। इलाक्षी कुछ क्षणों के लिए इस घटना पर चकित रह गयी, परन्तु प्रेम ने उस पर विजय पायी और उसने भी धीरे से अभिजीत को आलिंगन में ले लिया और अपनी आँखें बंद कर ली।

"हाँ अभिजीत! मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ।" इलाक्षी ने आँखें बंद किये हुए कहा।

"मैं ये जानकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम मुझसे प्रेम करती हो और मुझसे पूर्व से करती हो। जानती हो जब तुम भूतकाल में चली गयी थी, तब प्रथम बार मुझे लगा कि मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूँ। मुझे अपने जीवन में तुम्हारी कमी महसूस हुई। तब मैंने तुम्हें स्वयं वापस लाने का निर्णय लिया था और मैंने तुम्हें पा लिया इलाक्षी...मैंने तुम्हें पा लिया।" अभिजीत ने इलाक्षी के माथे को चूमते हुए कहा और उसे फिर से आलिंगन बद्ध कर लिया।

"तो अब क्या अभिजीत! तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे? क्या तुम अपना निर्णय बदल नहीं सकते?" इलाक्षी ने धीरे से अभिजीत से अलग होते हुए कहा।

"बस कुछ ही समय की बात है इलाक्षी। पहले मेरे पास यहाँ रुकने का कोई कारण नहीं था, पर अब मेरे पास तुम हो। मुझे बस अब अपनी इस नयी दुनिया को जानना है, बहुत कुछ सीखना है। मैं जल्दी ही वापस आऊंगा और फिर हम दोनों हमेशा एक साथ रहेंगे।" अभिजीत ने इलाक्षी के चेहरे को अपने हाथों में लेकर कहा। इलाक्षी ने भरी हुई आँखों के साथ सिर हिलाकर हामी भरी।और फिर से अभिजीत के आलिंगन में खो गयी।

अगले दिन सुबह अभिजीत और विशल्या अपने नए सफर पर निकल गए। अभिजीत को अब अपनी नयी मिली शक्तियों पर दक्षता प्राप्त करनी थी और विशल्या से बहुत कुछ सीखना था। उनके सामने नए लक्ष्य थे और वापस लौटकर उन्हें ऐसे कई महत्वपूर्ण कार्य करने थे जो आने वाले भविष्य में पृथ्वी को असुरों और अन्य संकटों से सुरक्षित रखने वाले थे।

आने वाला भविष्य अभिजीत के जीवन में नये अध्याय जोड़ने वाला था...

(समाप्त)

अंत में...

आपने इस उपन्यास को पूरी तन्मयता और लगन से पूरा किया, इसके लिए आप सभी का तहे दिल से धन्यवाद। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपको उपन्यास की केंद्रीय विषय-वस्तु अवश्य पसंद आई होगी।

सपने हम सभी देखते हैं और उन्हें पूरा करने की चाह भी रखते हैं। हमारे सारे सपने पूरे नहीं होते पर कहीं न कहीं हम उनके बेहद करीब पहुँच जाते हैं। कुछ लोगों के सपने पूरे हो जाते हैं और कुछ के नहीं। जिनके नहीं होते वो कुछ और उससे भी अच्छा पा लेते हैं, इसलिए हमें कभी भी आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। क्या पता हमारे नसीब ने हमारे लिए कुछ अलग ही सोच के रखा हो।

मेरा सपना मेरी इस पहली किताब के रूप में आपके सामने है और आपकी सभी प्रशंसाएं और आलोचनाएं सुनने का मुझे बेसब्री से इंतज़ार है। हर लेखक जानना चाहता है कि उसकी किताब ने पाठकों के दिल में जगह बनायी या नहीं। अगर इस किताब ने आपके दिल में थोड़ी जगह बनायी हो, तो लाइक और कमेंट जरूर कीजियेगा।

आपका

अभिनव जैन

फेसबुक - /authorabhinavj19

इंस्टाग्राम - /authorabhinavj

ईमेल - authorabhinavj19@gmail.com

WingsHouse

फंतासी | एडवेंचर | हॉरर